"पल्लीवाल जैन जाति का इतिहास"

卐

लेखक–

डा. अनिल कुमार जैन

एम.एस-सी., पी.एच.डी.

卐

प्रकाशक–

श्री पल्लीवाल इतिहास प्रकाशन समिति

332, स्कीम नं.- 10, अलवर (राज०)

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

M.5

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"पल्लीवाल जैन जाति का इतिहास"

52772

卐

लेखक-

डा. अनिल कुमार जैन

एम.एस-सी., पी.एच.डी.

卐

प्रकाशक-

श्री पल्लीवाल इतिहास प्रकाशन समिति

332, स्कीम नं.- 10, अलवर (राज०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक
श्री महावीर प्रसाद जैन

संयोजक—
श्री पल्लीवाल इतिहास प्रकाशक समिति,
332, स्कीम नं.-10, अलवर-301001 (राजस्थान)

(सर्वाधिकार लेखक के आधीन सुरक्षित)

प्रथम संस्करण-1000

मूल्य—२० रुपये

प्राप्ति स्थान—
(1) महावीर प्रसाद जैन
332 स्कीम नं. 10 अलवर-301001 (राजस्थान)

(2) डा. अनिल कुमार जैन एम. एस. सी. पी. एच. डी.
21/194 धूलिया गंज, आगरा (उ. प्र.)

मुद्रक–राज प्रिन्टर्स, मन्नी का वड़, अलवर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

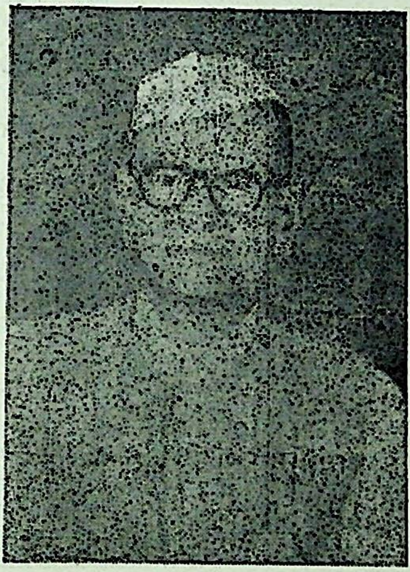

पूज्य पिताजी श्री रामसिंह जैन
को सादर समर्पित

—अनिल कुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

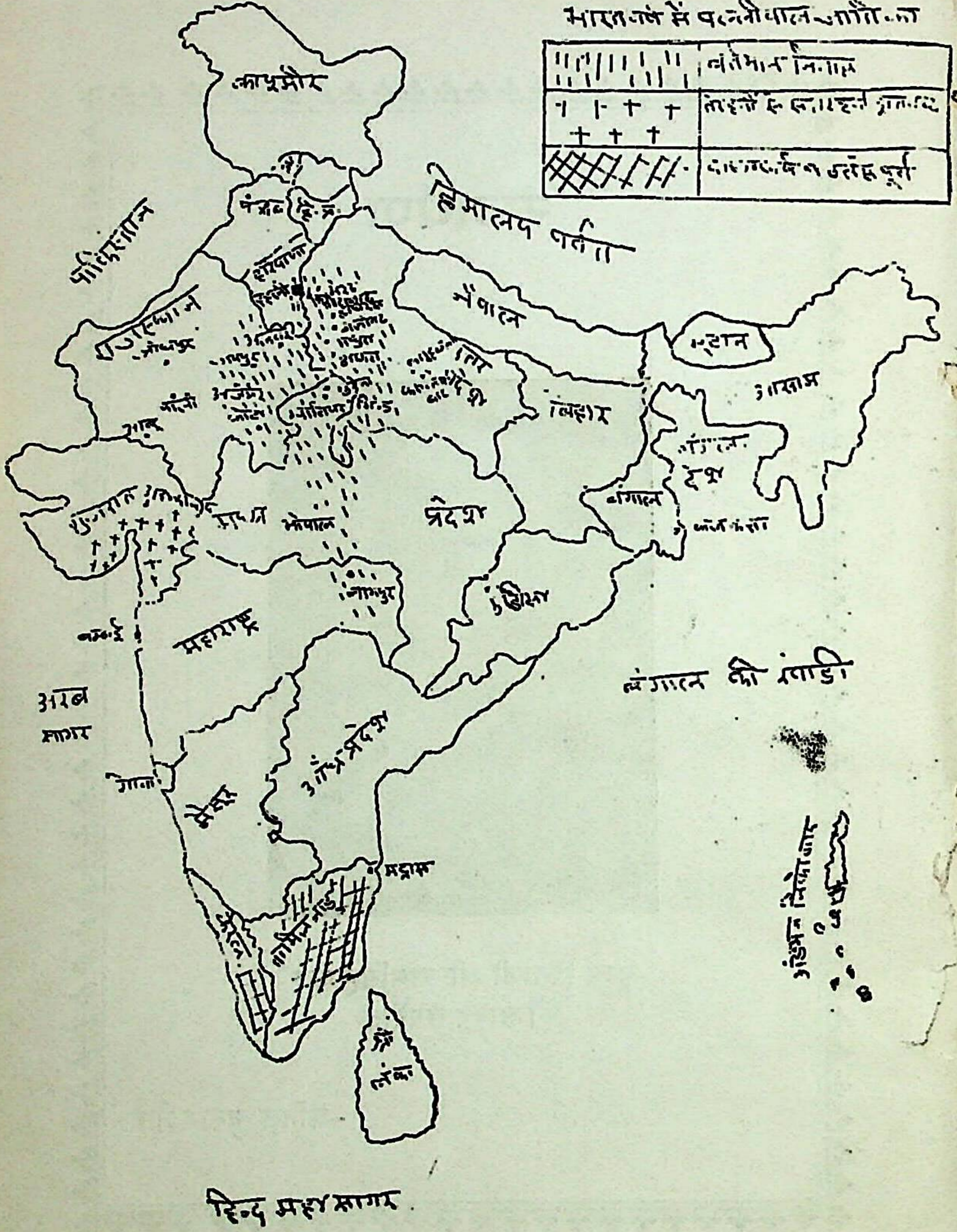

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

'पल्लीवाल जैन जाति का इतिहास' पुस्तक पाठकों के हाथों में देते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पल्लीवाल जैन जाति के निष्पक्ष इतिहास की बहुत समय से आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इस कार्य को समाज के युवा विद्वान डा० अनिल कुमार जैन ने पूरा किया है। अतः वे बधाई के पात्र हैं।

पल्लीवाल जाति का जैन जातियों में प्रमुख स्थान है। यह एक ऐसी जाति है जिसके सभी सदस्य जैन धर्मानुयायी हैं। इस जाति ने अपने बहुत ही उतार-चढ़ाव देखे हैं और समय-समय पर उसे अपने स्थान भी बदलने पड़े हैं। इस कारण इसका इतिहास लिखना बड़ा ही श्रम साध्य था। पल्लीवाल जैन जाति के इतिहास लेखन के विगत 25-30 वर्षों में लगातार प्रयत्न किये जा रहे थे। कुछ वर्ष पूर्व इस जाति का एक इतिहास भरतपुर से भी प्रकाशित हुआ था, किन्तु उसमें जाति के इतिहास को सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सका। मेरी भी इतिहास पढ़ने एवम् लिखने में विशेष रुचि रही है। मैं भी इसलिए इतिहास लेखन के कार्य को सन् 1981 से कुछ-कुछ कर रहा था। किन्तु जब मुझे पता चला कि डा० अनिल कुमार जैन, जो स्वयं पल्लीवाल जाति के हैं इस कार्य को कर रहे हैं अतः मैंने यह कार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन पर ही छोड़ दिया। उनसे बात करने पर पता चला कि वे इसमें 1978 से लगे हुए हैं। अब 1988 में यह कार्य पूरा किया गया है। मुझे इसकी अतीव प्रसन्नता है कि इनका यह कार्य 10 वर्ष में ही सही लेकिन अब पूरा हो गया।

जहाँ तक मेरी जानकारी है पल्लीवाल जाति का सम्बन्ध कुछ किम्वदन्तियों के आधार पर पाली से माना जाने लगा था। किन्तु इतिहास ने इस मान्यता को गलत सिद्ध कर दिया है। "दक्षिण भारत में जैन धर्म" नामक अपनी पुस्तक में पं० कैलाश चन्द्र जी सिद्धान्त शास्त्री ने पृष्ठ 46 पर लिखा है, "तामिल देश के शिलालेखों में प्रायः पल्ली चंदम शब्द मिलता है। श्री वी. पी. देसाई ने लिखा है कि पल्ली शब्द जैन मन्दिर या जैन मठ या जैन संस्था का सूचक है। और चान्दम का सरल रूप चन्दम् है। यह संस्कृत के स्वतन्त्र शब्द से बना है अतः पल्लींचन्दम् का अर्थ होता है—जिस पर केवल जैन मन्दिर वैगरह का स्वामित्व हो। जैसे जमीन, गाँव वगैरह।"

उन्होंने यह भी सिद्ध कर दिया है कि पल्ली तामिल भाषा के शब्द कोष में उनको कहते थे कि जो जैनों ने जंगल काट कर पहाड़ों की जड़ में छोटे गाँव बसाये थे। वैसे भी पल्ली शब्द तामिल भाषा का ही है। प्रस्तुत इतिहास में इन पल्लियों से ही पल्लीवालों की उत्पत्ति सिद्ध की गई है। इसके बाद बौद्धों शैवों ने राजनीति से प्रेरित होकर इन लोगों पर अत्याचार किए। ऐसी बहुत सी कैफियत मिलती हैं जिनसे यह सिद्ध हो गया है कि जैनों पर अमानुषिक अत्याचार किए गये तथा उन्हें अनेक प्रकार से तंग किया जाने लगा। अतः वहाँ से उन्होंने अपना स्थान छोड़ना ही उचित समझा तथा आंध्र, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य भारत, उत्तर प्रदेश व राजस्थान में आकर बस गये। जैसा कि नक्शे में अंकित किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तुत इतिहास में पल्लीवालों के विशिष्ठ व्यक्तियों का तथा स्वतन्त्रता सैनानियों के परिचय भी दिये गये हैं। इससे यह प्रस्तुत इतिहास वर्तमान समाज से भी जुड़ गया है। और यह अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि यह इतिहास का सही चित्र प्रस्तुत करेगा, जिसको पढ़कर समाज में एक नया विश्वास जागृत होगा तथा वे एक जुट होकर धर्म, समाज एवम् अन्य सभी कार्यों में आगे बढ़ेगें तथा अपने गौरव में और भी वृद्धि करेंगे और पल्लीवाल जाति को सही दिशा प्रदान करेंगें तथा जाति के संगठन को मजबूत करेंगे।

इतिहास के प्रकाशन के लिए गत दीपावली (दि 22 अक्टूबर 1987) को 'श्री पल्लीवाल जैन इतिहास प्रकाश समिति' का गठन करने का निश्चय किया गया, जिसमें कुल 7 सदस्य रखे गये, जो निम्न हैं:—

(1) श्री महावीर प्रसाद अलवर
(2) श्री गुलजारीलाल जी जैन अलवर
(3) श्री सुमेरचन्द जी 'भगत' आगरा
(4) श्री बृजेन्द्र कुमार जैन आगरा
(5) श्री हुकमचन्द्र जी एडवोकेट फिरोजाबाद (आगरा)
(6) श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन फरीदाबाद (हरियाणा)
(7) छगनलाल जी जैन पाल बीसला अजमेर

प्रस्तुत प्रकाशन के लिए जिन 2 साथियों ने समिति को आर्थिक सहयोग एवं अपना अमूल्य समय दिया उनके लिए मैं समिति की ओर से अति आभारी हूँ। सबसे प्रसन्नता की बात तो यह है कि इस सम्वन्ध में हमें जब आगरा, फिरोजाबाद, फरीदाबाद, अलवर या जहाँ भी गये. समाज के सदस्यों ने खुले हृदय से आर्थिक सहयोग देकर हमारे कार्य को सरल कर दिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और जरा भी कठिनाई नहीं आई। कुछ सज्जनों को तो जब यह पता चला कि पल्लीवाल जाति के इतिहास के प्रकाशन के बारे में चन्दा हो रहा है तो वे स्वयम् चल कर हमारे बिना कहे ही चन्दा दे गये। यह स्पष्ट रूप से इस बात का द्योतक है कि समाज इतिहास को कितना महत्व दे रहा है।

हम इतिहास लेखक डा. अनिल कुमार के अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने लगातार 10 वर्ष तक इतिहास लेखन में कठोर श्रम करके उसे मूर्त रूप दिया है तथा पल्लीवाल जैन जाति के विकास एवं योगदान पर बहुत ही मार्मिक रीति से प्रकाश डाला है। आशा है वे भविष्य में इसी तरह अपने लेखन कार्य में आगे बढ़ते रहेंगे। देश एवम् समाज को उनसे बहुत आशाएँ हैं।

हम देश व समाज के जाने माने विद्वान डा० कस्तूर चन्द कासलीवाल के भी बहुत आभारी हैं जिन्होंने समस्त इतिहास लेखन में डा० अनिल कुमार जैन को समय-समय पर अपना मार्ग दर्शन दिया हैं तथा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका लिखकर इतिहास की गरिमा बढ़ाई है।

अन्त में हम उन सभी महानुभावों के आभारी हैं जिन्होंने हमें आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। इतिहास प्रकाशन में जिस किसी बन्धु ने भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जो भी अन्य सहयोग प्रदान किए हैं उनके प्रति भी हम अपना आभार व्यक्त करते हैं।

दि० 31-5-88

भवदीय

महावीर प्रसाद जैन

सेवा मुक्त पुलिस उप-निरीक्षक

संयोजक

'श्री पल्लीवाल इतिहास प्रकाशन समिति

332 स्कीम नं० 10, अलवर (राजस्थान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

52272

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करने वाले महानुभावों की सूची

अलवर

1. श्री पवन कुमार जैन मै० कोटसन्स इलेट्रिकल्स प्रा० लि० F–182 M. I. A. अलवर फो० 22416 Rs. 501-00
2. श्री फूलचन्द जी जैन, जैन बुक डिपो, होप सरकस अलवर Rs. 500-00
3. श्री महावीर प्रसाद जैन एडवोकेट (सैथली वाले) 255 आर्य नगर, अलवर Rs. 151-00
4. श्री छगनलाल जी जैन (वडेर वाले) देहली दरवाजा, अलवर Rs. 101-00
5. श्री महावीर प्रसाद जी जितेन्द्र कुमार जी जैन 455 लाजपत नगर फो० 229907 Rs. 101-00
6. श्री गुलजारीलाल जी प्रमोद कुमार जी जैन 5, विकास पथ. फोन 21333 Rs. 101-00
7. श्री महावीर प्रसाद प्रमोद कुमार जैन 332 स्कीम नं० 10 अलवर Rs. 101-00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

8. श्री शिवदयाल जी हुकमचन्द्र जी जैन
केडल गंज अलवर फो० 20580 Rs. 101-00
9. श्री रामलाल जी मंडावर वाले C/o राकेश
एजेन्सीज मुन्शी बाजार, अलवर Rs. 101-00
10. श्री नरेन्द्र कुमार दीपचन्द्र जैन
4–ग–18 हाउसिंग बोर्ड मनु मार्ग अलवर Rs. 101-00
11. श्री नेमीचन्द विजय कुमार जैन (वृन्दावन वाले)
दाऊदपुर, अलवर Rs. 101-00
12. श्री हजारीलाल जी अनन्त कुमार जी जैन
(बडेर वाले) काला कुआ, हाऊसिंग बोर्ड अलवर Rs. 101-00
13. श्री शान्तिस्वरूप रोहिताश कुमार जैन
दीवान जी का वाग अलवर फो० 21043 Rs. 101-00
14. श्री चाँदकुमार जी जैन 122 आर्य नगर, अलवर Rs. 101-00
15. श्री कुशल कुमार जी (डीग वाले) जैन मैडिकल्स
सिविल लाइन अलवर फो० 22318 Rs. 101-00
16. श्री दीपचन्द जी जैन मुन्शी वाग अलवर
फो० 21753 Rs. 101-00
17. श्री हीरालाल जी राकेश कुमार जी (रामगढ़ वाले)
सिविल लाइन्स अलवर फो० 22318 Rs. 101-00
18. श्री मोहरचन्द जी कमलेश कुमार जी जैन
3 सिविल लाइन अलवर Rs. 101-00

फरीदाबाद (हरियाणा)

1. श्री सुरेन्द्रकुमार अशोक कुमार
फरीदाबाद (हरियाणा) Rs. 251-00
2. श्री महेशकुमार अक्षय कुमार
फरीदाबाद (हरियाणा) Rs 251-00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3. श्री प्रेमचन्द जी शिखर चन्द जी
फरीदाबाद (हरियाणा) Rs. 101-00
4. श्री सुरेन्द्र कुमार जैन शैलेश कुमार 861/14
फरीदाबाद (हरियाणा) Rs. 101-00
5. श्री महेन्द्र कुमार जैन 1221/1
फरीदाबाद (हरियाणा) Rs. 101-00
6. श्री बाबूलाल जी राकेश कुमार जी
फरीदाबाद (हरियाणा) Rs. 101-00

फिरोजाबाद (आगरा)

1. श्री कपूरचन्द विमल चन्द फिरोजाबाद (आगरा) Rs. 251-00
2. श्री उपेन्द्र कुमार जैन छोटी चपेटी
फिरोजाबाद (आगरा) Rs. 250-00
3. श्री रणजीत प्रसाद पुष्पेन्द्र कुमार
फिरोजाबाद (आगरा) Rs. 251-00
4. श्री कन्हैयालाल नवीन चन्द्र जैन नगर खेडा
फिरोजाबाद (आगरा) Rs. 201-00
5. श्री अमीरचन्द जी जैन कपड़े वाले नई बस्ती
फिरोजाबाद (आगरा) Rs. 151-00
6. श्री हुकम चन्द जी लक्ष्मी नरायण जी दुर्गा नगर
फिरोजाबाद (आगरा) Rs. 101-00
7. श्री गोपाल प्रसाद जैन कपड़े वाले जलेसर रोड Rs. 51-00
8. श्री प्यारेलाल जी शतीश चन्द्र जी (महावीर जी वाले)
मोहन नगर जलेसर रोड़ फिरोजाबाद (आगरा) Rs. 251-00

आगरा

1. श्री हरिश्चन्द्र जी अशोक कुमार जी जैन रंग वाले
20/104 ड्योडी बेगम धूलिया गंज आगरा Rs. 500-00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. श्री हरिश्चन्द्र राकेश कुमार जैन अँगूठी वाले
जयपुर हाउस, आगरा — Rs. 201-00

3. श्री सुरेशचन्द्र अनिल कुमार बारोलिया
कमला नगर, आगरा — Rs. 100-00

4. श्री बृजेन्द्रकुमार हेमन्त कुमार जैन
ड्योडी बेगम, आगरा — Rs. 100-00

5, श्री सुमेरचन्द्र मुकेश कुमार जैन 'भगत'
ड्योडी बेगम आगरा — Rs. 101-00

6. श्री मोहनलाल नूतन कुमार जैन
धूलिया गंज, आगरा — Rs. 101-00

7. श्री अमीरचन्द रिखबचन्द बजाज
बेलन गंज, आगरा — Rs. 101-00

8. श्री धर्मपाल पवन कुमार जैन
गुदड़ी मंसूर खाँ आगरा — Rs. 101-00

9. श्री महावीर प्रसाद पवन कुमार जैन सकतपुर वाले
धूलिया गंज, आगरा — Rs. 101.00

10. श्री कपूरचन्द्र महावीर प्रसाद जैन
लोहा मंडी, आगरा — Rs. 201-00

11. श्री सुरेश चन्द्र देवेन्द्र कुमार जैन
लोहा मंडो, आगरा — Rs. 101-00

12. श्री ओमप्रकाश शशिकुमार जैन
लोहा मंडी, आगरा — Rs, 101-00

13. श्री बंगालीमल मगन कुमार जैन
लोहा मंडी, आगरा — Rs. 101-00

14. श्री स्वरूप चन्द्र काली चरण जैन
रूई मंडी शाहगंज, आगरा — Rs. 101-00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15. श्री सुभाष चन्द्र रमेशचन्द जैन
डयोडी बेगम, आगरा Rs. 100-00
16. श्री लक्ष्मीचन्द्र ध्रुपद कुमार जैन
धूलिया गंज, आगरा Rs. 100-00
17. श्री ज्ञानचन्द्र पवन कुमार चूने वाले
धूलिया गंज, आगरा Rs. 100-00

सीकर

1. श्री के. सी. जैन Rs, 201-00

बम्बई

1. श्री जगदीश चन्द्र शीतल प्रसाद जी
M/s विजय स्टील कोरपोरेशन बम्बई Rs. 501-00

अजमेर

1. श्री कपूर चन्द्र हरणचन्द्र जी S/o स्व. श्री चाँदमल जी
आर्य नगर, अजमेर Rs. 50˙-00
2. श्री फूलचन्द सुधीर कुमार पल्लीवाल
483 कोकिल कुञ्ज पाल बीसला अजमेर Rs. 101-00
3. श्री प्रेम चन्द्र महावीर प्रसाद आर्य नगर अजमेर Rs 101-00
4. श्री मास्टर सुमेरचन्द्र अमृश कुमार जैन अजमेर Rs. 101-00
5. श्री लक्ष्मीचन्द प्रदीप कुमार
लोकर्स गंज आर्य नगर, अजमेर Rs. 101-00
6. श्री पदम चन्द S/o स्व० मानक चन्द जैन
पाल बीसला अजमेर Rs. 101-00
7 श्री प्रकाशचन्द महेशचन्द जैन
4 4 पाल बीसला अजमेर Rs. 10.-00
8. श्री भागचन्द जी वकील अशोक कुमार जैन
आर्य नगर, अजमेर Rs. 51-00
9. श्री छगनलाल जी जैन पाल बीसला, अजमेर Rs. 101-00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बल्लभगढ़ (हरियाणा)

1. श्री सुरेशचन्द्र विनोदकुमार जैन — Rs. 500-00

देहली

1. श्री प्रभूदयाल प्रेमचन्द जैन डिप्टी गंज देहली — Rs. 500-00
2. गुप्त दान देहली — Rs. 500-00
3. प्रेम शंकर विजेन्द्र कुमार जैन
   पहाड़ गंज, नई देहली — Rs. 100-00
4. श्री पदमचन्द अतुल कुमार जैन
   पहाड गंज नई देहली — Rs. 100-00

कुल योग Rs. 11052-00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखक की ओर से

मेरे द्वारा पल्लीवाल जैन जाति का इतिहास लिखे जाने का यह प्रयास प्रथम नहीं है। इससे पहले भी इस जाति का इतिहास लिखा जा चुका है। सन् 1922-23 में 'लघु पल्लीवाल इतिहास' सतना (रींवा) से प्रकाशित हुआ था। सन् 1963 (वि० सं० 2019) में 'पल्लीवाल जैन इतिहास' (लेखक—श्री दौलत सिंह लोढ़ा) का प्रकाशन भरतपुर (राजस्थान) से हुआ था। भरतपुर से प्रकाशित इतिहास काफी विवादास्पद रहा है। इसके सम्बन्ध में श्री अमर चन्द जी नाहटा लिखते हैं—'पल्लीवाल जाति के लोग जैन धर्म के श्वेताम्बर तथा दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों को मानने वाले हैं। भरतपुर के स्वर्गीय नन्दनलाल जी पल्लीवाल ने मेरे को पल्लीवाल जाति का इतिहास तैयार करने के लिये बहुत जोर दिया तो मैंने अपने निर्देशन में स्व० दौलतसिंह लोढा 'अरविन्द' से पल्लीवाल जाति का इतिहास तैयार करवाया। उसमें श्वेताम्बर प्रतिमा लेखों, प्रशस्तियों, ग्रन्थों आदि का विशेष आधार लिया गया था। आवश्यकता थी दिगम्बर सम्प्रदाय की सामग्री का भी वैसा ही उपयोग करके उस इतिहास की पूर्ति करने की। पर खेद है उसके बाद इसमें कोई प्रगति नहीं हुई।

उस इतिहास में और भी कई कमियाँ थीं। उसे लिखने में श्री कजोडीलाल 'राय' से प्राप्त हस्तलिखित 'प्रार्थना-पुस्तक' का विशेष आधार लिया गया था, लेकिन इस पुस्तक की भी कई बातों को छोड़ दिया गया, अन्यथा यह इतिहास उतना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रुटिपूर्ण तथा विवादास्पद न रहा होता। इन सब कारणों से ही पल्लीवाल जाति के इस इतिहास को लिखने की प्रेरणा मिली।

दिगम्बर आम्नाय में ऐसी मान्यता है कि आचार्य कुन्दकुन्द जो कि वि० सं० 49 में हुए थे, पल्लीवाल जात्युत्पन्न थे। पूज्य पिताजी मा० रामसिंह जैन की प्रेरणा से लिखा 'भगवान कुन्द-कुन्दाचार्य' नामक मेरा एक लेख 'पल्लीवाल जैन पत्रिका' (फरवरी सन् 1978) में प्रकाशित हुआ था। इस लेख में मैंने आचार्य कुन्दकुन्द को पल्लीवाल जाति का बताया था। इस लेख को लेकर बड़ा विवाद हुआ। उसे पढ़कर आगरा के वयोवृद्ध श्री श्यामलाल जी वारौलिया ने मुझे पल्लीवाल जाति का इतिहास नये सिरे से लिखने के लिए प्रेरित किया।

मेरे उक्त लेख के प्रकाशित होने के दो माह बाद ही मेरे पिताजी का दि० 28 अप्रैल सन् 1978 को देहान्त हो गया। तब मेरे सामने प्रश्न था कि अब मैं किससे मार्ग दर्शन प्राप्त करूँ। अन्त में मैंने पल्लीवाल जाति के इतिहास की सामग्री के संकलन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। समय-समय पर श्री वारौ-लिया जी मुझे इस कार्य के लिए बढ़ावा देते रहे। इसके परिणाम स्वरूप कुछ समय में ही काफी सामग्री एकत्रित हो गई। मैं इति-हास लिखने का कार्य आरम्भ करने ही वाला था कि सन् 1982 में श्री वारौलिया जी का निधन हो गया। अब मुझे प्रेरणा देने वाला कोई भी नहीं था, लेकिन इस समय तक इतिहास को लिखने की पूरी-पूरी रुचि मुझमें जाग्रत हो चुकी थी। फलतः मैं इस इतिहास को लिख सका हूँ।

वैसे तो इतिहास कभी पूरा नहीं हो पाता है। यह निरन्तर गहन खोज का विषय है, जितना खोजेंगे उतने ही नये-नये तथ्य सामने आयेंगे। अब तक मुझे पल्लीवाल जाति से सम्बन्धित जितनी भी सामग्री मिली है उसका मैंने यथासम्भव पूरा-पूरा उपयोग किया है। इसके बावजूद भी कहीं कोई त्रुटि रह गई हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो प्रवुद्ध पाठक उसे प्रकाश में लायें, जिससे उसका उपयोग अगले संस्करण में किया जा सके।

मैं जैन समाज के दो महान् इतिहासज्ञ—डा० कस्तूरचन्द जी कासलीवाल, जयपुर तथा डा० ज्योति प्रसाद जी जैन, लखनऊ का बहुत-बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर बहुमूल्य मार्ग दर्शन प्रदान किया।

डा० कासलीवाल जी की मुझ पर विशेष कृपा रही है। उन्होंने अनेक व्यस्तताओं के बावजूद भी मुझे अपना बहुमूल्य समय दिया। जब भी मैं आपसे मिलने गया, आपने बहुत प्रसन्नता के साथ विचार-विमर्श किया तथा अपने सुझाव दिये। आप मुझे निरंतर प्रोत्साहित करते रहे। आपने "दो शब्द' लिखकर प्रस्तुत इतिहास को न सिर्फ मान्यता ही प्रदान की है, बल्कि इसके महत्व को भी दुगुना कर दिया है। इस सबके लिए मैं आपका सदा ऋणी रहूँगा।

मैं उन सभी महानुभावों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सामग्री एकत्रित करने व संजोने में परामर्श व सहयोग दिया है, विशेष रूप से मैं आगरा के वयोवृद्ध बाबू प्रतापचंद जी जैन तथा अलवर के रिटायर्ड थानेदार श्री महावीर प्रसाद जी जैन का आभारी हूँ।

मैं 'स्वावलम्बी कॉलेज ऑफ़ एज्यूकेशन, वर्धा' के प्राचार्य श्री विद्याधर जी उमाठे का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे नागपुर क्षेत्र के पल्लीवालों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। मैं श्री स्वरूपचन्द जी जैन तथा श्री मनोहरलाल जी जैन (आगरा) का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे कचौडाघाट के पल्लीवालों के बारे में जानकारी दी तथा श्री रामजीत जैन एडवोकेट (ग्वालियर) का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सौरीपुर से प्राप्त आचार्य पट्टावली के बारे में जानकारी दी। इस इतिहास को लिखने में जिन महा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुभावों की पुस्तकों/लेखों की सहायता ली है, उनका भी मैं बहुत आभारी हूँ।

प्रस्तुत इतिहास के प्रकाशन में स्वाध्याय प्रेमी प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री महावीर प्रसाद जी जैन (रिटायर्ड थानेदार, अलवर) की प्रमुख भूमिका रही है। उनके अथक परिश्रम के फलस्वरूप बहुत थोड़े समय में ही इसका प्रकाशन सम्भव हो सका है। बृद्धावस्था के वावजूद भी उन्होंने अलवर, जयपुर, दिल्ली, फरीदाबाद, आगरा तथा फिरोजाबाद में स्वयं जाकर विभिन्न महानुभावों से सम्पर्क किया। उन्होंने इतिहास के प्रति लोगों में रुचि पैदा की तथा प्रकाशन के लिए आवश्यक धन एकत्रित किया। उनके इस कार्य के लिए भी मैं उनका बहुत आभारी हूँ।

स्व० श्री अगरचन्द जी नाहटा के निम्न शब्दों के साथ मैं अपना निवेदन समाप्त करता हूँ—

'अपने पूर्वजों के गौरव से हमें बहुत प्रेरणा मिलती है। हमें उनका अनुसरण करते हुए कुछ विशेष कार्य करने चाहिए तथा उन्होंने अपना जो गौरव स्थापित किया है उसमें कमी नहीं आने देना चाहिए। कोई बुरा या गलत कार्य हमसे ऐसा न हो जाय कि पुर्खाओं के सुयश को बट्टा लगे। इस तरह की प्रेरणा जातीय इतिहास से मिलती रहती है। अतः उसकी खोज करके प्रकाश में लाने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।'

—डॉ० अनिल कुमार जैन
सहायक निदेशक
तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग
अंकलेश्वर 313010
(गुजरात)

मूल निवासी—
(21/194; धूलिया गंज,
आगरा—282003 (उ० प्र०)
दि० 24 फरवरी 1988)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

जैन समाज विभिन्न जातियों एवं उपजातियों में विभक्त है। सभी जातियों का अपना अपना गौरव पूर्ण इतिहास हैं लेकिन इतिहास के प्रति हमारी सदैव उपेक्षावृत्ति रही हमने समाज की प्रमुख घटनाओं का विवरण न तो कभी लिखा और यदि कदाचित् किसी ने लिख भी दिया तो उसे संजो कर नहीं रखा। यही कारण है कि हमारे तीर्थों, आचार्यों एवं समाज के महान् निर्माताओं का कोई इतिवृत्त नहीं मिलता और जब कभी उसकी आवश्यकता पड़ती है तो हमें उसे सामाजिक रूप से प्रस्तुत करने में पर्याप्त कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

लेकिन मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि जैन समाज को विभिन्न जातियों का इतिहास लिखने की ओर रुचि जागृत हो रही है। खण्डेलवाल जैन समाज का वृद्ध इतिहास तैयार हो रहा है। अभी वरैया समाज का इतिहास प्रकाशित हुआ है और जैसवाल जैन समाज का इतिहास भी प्रकाशित हो चुका है। पल्लीवाल जैन समाज का इतिहास पाठकों के हाथों में आ चुका है। जिसका हमें स्वागत करना चाहिये।

दिगम्बर जैन समाज 84 जातियों में विभक्त है ऐसा माना जाता है लेकिन वास्तव में समाज में कभी 24 वर्ष की अधिक जातियाँ मिलती थी। वर्तमान समाज में इनमें कितनी जातियां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवशिष्ट हैं इसकी कोई प्रमानिक जानकारी नहीं मिलती लेकिन जहाँ तक मुझे जानकारी है कि वर्तमान में भी 50 से भी अधिक जातियां मिलती हैं जो समाज की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती रहती है।

पल्लीवाल जैन जाति भी इन्हीं 84 जातियों में गिनी जाती है और 84 जातियों का नामोल्लेख करने वाले सभी लेखकों ने पल्लीवाल जाति का उल्लेख किया है। यह जाति वर्तमान में प्रमुख रूप से राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र प्रान्त में मिलती है। जयपुर के पं० बख्तराम साह ने अपने बुद्धि विलास में इन जातियों को सांप कहा है और उनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में निम्न कारण लिखा है—

आगं तो श्रावक सबै, एकमेक ही होत।

लगे चलन विपरीत तब। थरपे खांय रू गोत ।।68।।

बख्तराम ने इनही सांप और गोत्रों की उत्पति ग्राम और नगर के नाम से होना लिखा है। कवि ने जाति को स्वयं लिखा है—

चर्या वहै तारे स्वयं ए, ग्राम नगर के नाम

इसी कवि ने पल्लीवाल जाति को प्रथम 32 जातियों में गिनाया है। उक्त वर्णन से हमें दो प्रश्नों का उत्तर मिलता है। प्रथम जातियों की उत्पत्ति भगवान महावीर के निर्माण के बाद हुई और उनका नामकरण किसी नगर एव ग्राम के नाम पर हुआ। जैसे खंडेला के खण्डेलवाल, अग्रोहा से अग्रवाल, बघेरा से बघेरवाल आदि। और इसी आधार पर पाली से पालीवाल जाति की उत्पति मान ली गयी। लेकिन प्रस्तुत इतिहास में विद्वान लेखक ने अपना भिन्न मत व्यक्त किया है कि पल्लीवाल जाति की उत्पति उत्तर भारत के पाली नगर से न होकर दक्षिण भारत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के पल्ली नगर से हुई। लेखक ने अपने मत के पक्ष में जो तर्क प्रस्तुत किये हैं वे विश्वनीय लगते हैं। यह सही भी है कि यदि पाली नगर से पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति हुई होती तो वह पालीवाल कहलाती पल्लीवाल, नहीं, क्योंकि 'आ' के स्थान पर 'अ' के प्रयोग का कोई औचित्य नहीं लगता तथा 'ली' के स्थान पर 'ल्ली' का प्रयोग भी शब्दों के सरलीकरण के विरुद्ध है। लेकिन प्रश्न यह है कि पल्लीवाल जाति के अधिकांश परिवार उत्तर भारत में ही क्यों मिलते हैं। उसके सम्बन्ध में भी लेखक ने खोज की है और उसी आधार पर पल्लीवाल जाति का दक्षिण भारत से पलायन होना मालूम होता है। फिर भी इस सम्बन्ध में पर्याप्त खोज की आवश्यकता है।

पल्लीवाल जैन जाति मूलतः दिगम्बर जैन जाति ही रही है। अब तक जितनी भी सामग्री प्राप्त हुई है वह इसे दिगम्बर ही सिद्ध करती है। लेखक ने आचार्य कुन्दकुन्द को पल्लीवाल जाति का सिद्ध करके हमारे इस कथन की पुष्टि की है कि पल्लीवाल जैन जाति मूलतः दिगम्बर जैन धर्मानुयायी हो रही है। वर्तमान में भी पल्लीवाल जैन जाति के जितने परिवार हैं उनमें अधिकांशः दिगम्बर जैन धर्मानुयायी ही हैं। यही स्थिति मन्दिरों की रही है।

इस जाति में कितने ही कवि एवं श्रेष्ठि हुये हैं। 12 वीं शताब्दी में धनपाल कवि हुये, जिन्होंने तिलक मंजरीके आधार से तिलक मंजरी कथा सारनामक ग्रंथ लिखा था। कवि पल्लीवाल दिगम्बर जैन धर्मानुयायी थे। संवत् 1505 में पल्लीवाल ज्ञातीय स० रामा भार्या रानी सुत पारिसा भार्या हर्ष ने मिल कर एक प्रतिमा की स्थापना की थी, ऐसा उल्लेख मिलता है। इसी तरह शक संवत् 1519 में भी पल्लीवाल ज्ञातीय स० वायासा एवं उसके परिवार ने प्रतिष्ठा में भाग लिया था।

18 वीं शताब्दी में होने वाले कवि मनरंगलाल के नाम से सभी परिचित होंगे। ये कन्नौज के रहने वाले थे तथा इन्होंने कितने ही ग्रंथों की रचना की थी। 19 वीं शताब्दी में होने वाले कविवर दौलतराम के भक्ति एवं अध्यात्म से ओत-प्रोत हिन्दी पदों एवं छहढाला का किसने स्वाध्याय नहीं किया होगा। ये

---

1. जैन साहित्य और इतिहास—पृष्ठ संख्या 469

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभी पल्लीवाल दिगम्बर जैन धर्मानुयायी थे। इस प्रकार पल्लीवाल जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है।

प्रस्तुत इतिहास में लेखक ने पल्लीवाल जाति में होने वाले विशिष्ट सज्जनों का भी परिचय दिया है जिनमें कितने ही 20 वीं शताब्दी में भी हैं। इस प्रकार प्रस्तुत इतिहास को अतीत का ही न रखकर वर्तमान से भी जोड़ कर इसे रुचिकर बना दिया है। वास्तव में व्यक्तियों का समूह ही समाज है और उनका इतिहास ही समाज का इतिहास है।

इतिहास लेखक डा० अनिल कुमार जैन एक युवा विद्वान् हैं। इतिहास में उनकी पूरी रुचि है। वे स्वयं पल्लीवाल जैन हैं और उन्होंने अपनी ही जाति का इतिहास लिख कर एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इतिहास लिखने में उन्होंने पर्याप्त श्रम किया है तथा इसे अत्यधिक प्रामाणिक बनाने का प्रयास किया है। मैं डा० जैन का एवं उनकी कृति दोनों का हृदय से स्वागत करता हूँ। आशा है वे अपने लेखन कार्य में आगे बढ़ते रहेंगे और अब तक अचर्चित एवं अज्ञात सामग्री को प्रस्तुत करते रहेंगे।

अन्त में मैं पल्लीवाल दि० जैन समाज अलवर को एवं श्री महाबीर प्रसाद जी जैन, 'संयोजक पल्लीवाल इतिहास समिति' को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने डा० जैन द्वारा लिखित अपने ही समाज का इतिहास प्रकाशित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। डा० जैन इतिहास प्रकाशन के कार्य के लिये बहुत प्रयत्नशील थे। इसलिये समाज के संबल से उनके कार्य को भी प्रोत्साहन मिला है। इससे दूसरी जैन जातियों को भी अपने समाज के इतिहास लेखन एवं प्रकाशन की प्रेरणा मिलेगी।

निर्देशक—महावीर ग्रंथ अकादमी
डा० कस्तूर चन्द कासलीवाल
867 अमृत कलश
किसान मार्ग, बरकत नगर
टोंक फाटक, जयपुर
महावीर जयन्ती दि० 31 मार्च 1988

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-सूची

- प्रकाशकीय
- लेखक की ओर से
- प्रस्तावना

अध्याय	विषय		पृष्ठांक
(1)	जातियाँ : एक ऐतिहासिक दृष्टि		1—5
(1.1)	जातियों का उद्गम	1	
(1.2)	जातियों की उत्पत्ति का समय	3	
(1.3)	जैन साहित्य में जाति का सबसे पहला उल्लेख	5	
(2)	पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति एवं विकास		6—29
(2.1)	प्रचलित मान्यतायें	6	
(2.2)	पल्लीवाल-गच्छ	7	
(2.3)	पाली और पल्लीवाल	9	
(2.4)	पालीवाल तथा पल्लीवाल	12	
(2.5)	पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति	13	
(2.6)	पल्लीवाल जाति का विकास	16	
(2.7)	पल्लीवाल जाति के गोत्र	20	
(3)	पल्लीवाल जाति के ऐतिहासिक प्रसंग		30—52
(3.1)	श्री कुन्दकुन्दाचार्य	30	
(3.2)	हेमाचार्य : पल्लीवाल जाति के संस्थापक	34	
(3.3)	पल्लव वंश तथा पल्लीवाल जाति	35	
(3.4)	पल्ली तथा पल्लीचन्दम्	35	
(3.5)	चन्द्रवाड़ और राजा चन्द्रपाल	37	
(3.6)	क्या पल्लीवाल क्षत्रिय थे ?	40	
(3.7)	महत्वपूर्ण लेख तथा मूर्तिलेख	41	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(4) समाज-दर्शन 53—83

(4.1) चौरासी जातियों एवं साढ़े बारह प्रकार की जातियों में पल्लीवाल जाति का स्थान 53
(4.2) कचौड़ाघाट के पल्लीवाल 58
(4.3) नागपुर क्षेत्र के पल्लीवाल 60
(4.4) पल्लीवाल जाति की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति 64
(4.5) धार्मिक क्षेत्र में पल्लीवाल 66
(4.6) पल्लीवालों द्वारा निर्मित जैन मन्दिर 69
(4.7) धूलियागंज, आगरा स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर तथा आध्यात्मिक शैली 72
(4.8) साहित्यिक क्षेत्र में पल्लीवाल जाति का योगदान 74
(4.9) शिक्षा का प्रचार-प्रसार 75
(4.10) रीति-रिवाज 76
(4.11) जातीय सभायें/संस्थाय 79
(4.12) पत्रकारिता 80
(4.13) जनगणना 81
(4.14) इतिहास-लेखन 82
(4.15) शिक्षण संस्थायें, धर्मशालायें तथा औषधालय आदि 83

(5) पल्लीवाल जाति के विशिष्ट व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय 84—134

(6) भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में पल्लीवाल जाति का योगदान 135

(7) परिशिष्ट
(1) पल्लीवाल शब्द : एक दृष्टि 145
(2) पालीवाल ब्राह्मण

(8) संदर्भ-सूची 153—155

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम—अध्याय

जातियां : एक ऐतिहासिक दृष्टि

[१.१] जातियों का उद्गम

चतुर्थ काल से पहले भोगभूमि में मनुष्य जाति एक ही थी। इसके बाद भगवान ऋषभदेव ने वर्ण-व्यवस्था की स्थापना की। 'आदि-पुराण' में ऐसा वर्णन आता है कि भोगभूमि की रचना के समाप्त होने पर ऋषभदेव ने जन्म लिया जो प्रथम सम्राट एवं तीर्थंकर हुए। उन्होंने कर्म-भूमि की रचना करके छह आजीविका के साधन बताये; वे हैं—असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या। समाज व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए उन्होंने तीन वर्णों—क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की स्थापना की। ऐसा वर्गीकरण मनुष्यों की योग्यता, व्यवहार, जीविका एवं कार्यों के आधार पर किया गया। दण्ड व्यवस्था हेतु राज्यों की स्थापना की गई। ऋषभदेव ने चार वंशों—हरिवंश, चन्द्रवंश, सूर्यवंश तथा उग्रवंश की स्थापना की तथा उनको पृथक-पृथक राज्य दिये। तीन वर्णो वाली समाज व्यवस्था कुछ समय तक तो चलती रही, लेकिन बाद में उनके जेष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भरत को एक ब्राह्मण वर्ण स्थापित करने की और आवश्यकता हुई। इस प्रकार मनुष्य जाति अपने-अपने कार्यों के भेद से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन चार वर्णों में बँट गई। 'महाभारत' के शान्ति पर्व में भी यही बात कही गई है। परन्तु आज भारत में सब मिलाकर 2800 के लगभग जातियां हैं। प्रश्न उठता है कि मूल के चार वर्णों में से हजारों जातियां कैसे बन गईं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नाथूराम जी 'प्रेमी'[1] के अनुसार कुछ जातियां तो भौगोलिक कारणों से, (देश, प्रान्त व नगरों के कारण) बनी हैं। जैसे—ब्राह्मणों को औदीच्य, कान्यकुब्ज, सारस्वत, गौड़ आदि जातियां। उदीचि अर्थात् उत्तर दिशा के औदीच्य, कान्यकुब्ज देश के कान्यकुब्ज या कनवजिया, सरस्वती तट के सारस्वत और गौड़ देश (बंगाल) के गौड़। इसी प्रकार श्रीमाल जिनका मूल निवास था, वे श्रीमाली कहलाये, जो ब्राह्मण भी हैं, वैश्य भी हैं और सुनार भी हैं। इसी प्रकार खण्डेला के रहने वाले खण्डेलवाल ओसिया के ओसवाल, मेवाड़ के मेवाड़ा, लाट (गुजरात) के लाड़ आदि। जातियों के सम्बन्ध में एक यह बात ध्यान रखने की है कि जब किसी राजनैतिक, प्राकृतिक अथवा धार्मिक कारणों से कोई समूह अपने स्थान या प्रान्त का परिवर्तन करके दूसरे स्थान पर जा बसता था तब ही ये नाम उन्हें प्राप्त होते थे और नवीन स्थान पर स्थिर-स्थावर हो जाने पर धीरे-धीरे उनकी उसी नाम से एक जाति बन जाती थी। उदीचि अर्थात उत्तर के ब्राह्मणों का दल जब गुजरात में आकर बसा तब यह स्वाभाविक ही था कि उस दल के लोग अपने जैसे अपने ही दल के लोगों के साथ सामाजिक सम्बन्ध रखें और अपने दल को औदीच्य कहाने लगें।

कुछ जातियां सामाजिक कारणों से बन गई हैं, जैसे – दस्सा, बीसा, पाँचा आदि भेद और परिवारों की चौसखे, दोसखे आदि शाखाएँ। कुछ जातियां विचार-भेद से या धर्म के कारण बन गईं। पेशे के कारण भी कई जातियां बनीं, जैसे—सुनार, लुहार, धीवर, बढ़ई, कुम्हार, चमार आदि। इन पेशे वाली जातियों में भी प्रान्त, स्थान, भाषा आदि के कारण सैकड़ों उपभेद हो गये।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार स्व. श्री काशी प्रसाद जायसवाल ने अपने 'हिन्दू-राजतन्त्र' ग्रन्थ में बतलाया है कि कई जातियां प्राचीन काल के गणतन्त्रों या पंचायती राज्यों के अवशेष हैं, जैसे—पंजाब के अरोड़ा (अरट्ट) और खत्री (क्सथ्रोई), गोरखपुर-आजमगढ़ के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मल्ल, आग्रेय गण के अग्रवाल आदि। ये गणतन्त्र एक तरह के पंचायती राज्य थे और अपना शासन आप ही चलाते थे। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में बताया है कि वैश्य कृषि, पशुपालन और वाणिज्य के अलावा शस्त्र भी धारण करते थे। जब इनकी स्वाधीनता छिन गई और एकतन्त्र राज्यों में इनको समाप्त कर दिया गया तब ये शस्त्र छोड़कर केवल वैश्य कर्म ही करने लगे। उनमें से कितने ही पुराने नामों की जातियों में ही अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। सम्भव है कि अरोड़ा, मल्ल, खत्री आदि जातियों की तरह अन्य वैश्य जातियों का सम्बन्ध भी किसी न किसी गणतन्त्र से रहा हो। यह भी सम्भव है कि बार-बार स्थान परिवर्तन के कारण नये स्थानों पर से नये नाम प्रचलित हो गये हों और पुराने गणतन्त्र वाले नाम भूल गये हों।

जैन जातियों की उत्पत्ति के बारे में कुछ लोगों की धारणा है कि अमुक जैनाचार्य ने अमुक नगर के तमाम लोगों को जैन धर्म की दीक्षा दी और तब उस नगर के नाम से उस जाति का नामकरण हो गया। उक्त सभी आचार्य पहली शताब्दी के बताये जाते हैं। प्रेमी जी इन बातों पर अविश्वास प्रकट करते हुये लिखते हैं कि 'यह ठीक है कि कभी जत्थे के जत्थे जैनी बने होंगे। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि उसमें सभी जातियों के ऊँच-नीच लोग होंगे, वे सब एक ग्राम के नाम की किसी एक जाति में कैसे परिणित हो गये होंगे, क्योंकि ऐसी सभी जातियों में जो स्थानों के कारण बनी हैं, जैन-अजैन दोनों ही धर्मों के लोग अब भी मिलते हैं। जैन अजैन बनते रहे हैं और अजैन जैन।'

[१.२] जातियों की उत्पत्ति का समय

कुछ विद्वानों का कहना है कि विभिन्न जातियों की उत्पत्ति राजा चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में हुई। उनकी मान्यता है कि राजा चन्द्रगुप्त के राज्य काल में बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़ा था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरे उत्तर भारत में त्राहि-त्राहि मच गई। लोग विभिन्न समूहों में इधर-उधर भटकने लगे। कहीं वर्ण-शंकरता न हो जाये, इस भय से लोग अपने-अपने समूहों में ही शादी-विवाह करने लगे। धीरे-धीरे ये समूह ही विभिन्न जातियों में परिणित हो गये।[2]

कुछ विद्वानों का कहना है कि जातियों का उल्लेख नौंवा-दसवीं शताब्दी से पूर्व का नहीं मिलता है। अतः विभिन्न जातियों को उत्पत्ति का समय नौंवी-दसवीं शताब्दी होना चाहिए। दसवीं शताब्दी के श्री भगवज्जिन सेनाचार्य ने भी अपने 'आदि-पुराण' में वर्ण व्यवस्था की खूब चर्चा की है, लेकिन जातियों का कोई उल्लेख नहीं किया है। इसका कारण यह नहीं कि उनके समय में जातियां नहीं थीं, बल्कि यह है कि उन्होंने चौथे काल की समाज-व्यवस्था का ही वर्णन किया है, दसवीं शताब्दी की समाज व्यवस्था का नहीं। और चौथे काल में जातियां थी नहीं। अन्य जैन कथा-साहित्य में भी सामान्यतः चौथे काल की घटनाओं का ही वर्णन है। लेकिन यहाँ दो बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। एक तो यह कि नौवीं-दसवीं शताब्दी से पूर्व ग्रन्थ प्रशस्तियों आदि में जातियों के उल्लेख करने का प्रचलन ही नहीं था। मूर्तियों पर तो लेख तक लिखने का प्रचलन नहीं था। दूसरा यह कि नौंवी-दसवीं शताब्दी में ऐसा कोई कारण नजर नहीं आता जिससे यह कहा जा सके कि विभिन्न वर्ण विभिन्न जातियों में परिणित हो गये, क्योंकि जब वर्ण-व्यवस्था अविछिन्न रूप से चल रही थी तब जातियों के आधार पर नई समाज-व्यवस्था स्थापित होने का कुछ ठोस कारण तो होना ही चाहिये। अतः जातियों की उत्पत्ति का समय राजा चन्द्रगुप्त के समय से मानना ही उचित है।

कुछ जातियां मात्र छह-सात सौ वर्ष पुरानी भी हैं। लेकिन ये जातियां किसी बड़ी जाति के (विभिन्न कारणों से) दो या अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिस्सों में बँट जाने से बनी हैं। अतः अधिकतर जातियों का निर्माण तो राजा चन्द्रगुप्त के समय में ही हो गया था। बाद में भी जातियों के निर्माण का यह क्रम चलता रहा।

[१.३] जैन साहित्य में जाति का सबसे पहला उल्लेख

आचार्य अनन्तवीर्य ने अपनी 'प्रमेय रत्न माला' जिस हीरप नामक सज्जन के अनुरोध पर बनाई थी उसके पिता को उन्होंने 'बदरीपाल' वंश का सूर्य कहा है। यह कोई वैश्य जाति मालूम होती है। अनन्तवीर्य का समय विक्रम की दसवीं शताब्दी है। प्रेमी जी के अनुसार जैन साहित्य में जाति का यह ही पहला उल्लेख है। दूसरा उल्लेख महाराज भीमदेव सोलंकी के सेनापति और आबू के आदिनाथ मन्दिर के निर्माता विमल शाह पोरवाड़ का वि. सं 1088 का है। इसकी वंशावली में इसके पहले की तीन पीढ़ियों का उल्लेख है। यदि प्रत्येक पीढ़ी के लिए 20-25 वर्ष रख लिया जाए तो यह समय वि सं. 1020 के लगभग पहुँचेगा।

हरिषेण ने सं. 1044 में 'धर्म-परीक्षा' की रचना की। उन्होंने अपने को धर्कट वंशीय गोवर्धन का पुत्र और सिद्धसेन का शिष्य बताया है। यहाँ पर उल्लिखित धर्कट-वंश धर्कट जैन जाति ही है। यह एक समृद्धिशाली जाति थी। इस जाति का अस्तित्व राजपूताना तथा गुजरात आदि में रहा है। वर्तमान में इस जाति का अस्तित्व नहीं जान पड़ता।

——

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय अध्याय

पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति एवं विकास

[२.१] प्रचलित मान्यतायें–

लगभग 25 वर्ष पूर्व 'पल्लीवाल जैन इतिहास' (लेखक-श्री दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविन्द') का प्रकाशन भरतपुर से हुआ था।[3] इसके अनुसार 'पल्लीवाल गच्छ तथा पल्लीवाल जाति इन दोनों की उत्पत्ति मारवाड़ में स्थित पाली नामक नगर से हुई। पल्लीवाल गच्छ के आचार्यों ने पाली की जनता को प्रतिबोधित किया, जिससे वहाँ की जनता ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। कालान्तर में ये जैन पल्लीवाल जाति के रूप में परिणित हो गये। पल्लीवाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति भी इसी पाली नगर से हुई थी। पालीवाल ब्राह्मणों तथा पल्लीवाल वैश्यों में पुरोहित तथा यजमान का रिश्ता था। जिस कारण से पालीवाल ब्राह्मणों को पाली का त्याग करना पड़ा, उसी कारण से पल्लीवाल वैश्यों को भी पाली छोड़ना पड़ा। कालान्तर में पल्लीवाल वैश्य पश्चिमी राजस्थान में आ बसे।'

उपरोक्त कथन से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं—1. पल्लीवाल गच्छ की उत्पत्ति पल्लीवाल जाति से पूर्व हुई और इन दोनों में प्रतिबोधक और प्रतिबोधित का सम्बन्ध था। अत: इन दोनों में विशेष सम्बन्ध था। 2. पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति पाली से हुई। (3) पालीवाल ब्राह्मणों तथा पल्लीवाल वैश्यों में पुरोहित तथा यजमान का रिश्ता था। 4. पालीवालों तथा पल्लीवालों ने एक साथ पाली नगर का त्याग किया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति एवं उसके विकास के सम्बन्ध में चर्चा करने से पूर्व हम एक-एक करके इन निष्कर्षों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

[२.२] पल्लीवाल-गच्छ

श्वेताम्बर जैन साहित्य में 84 गच्छों का वर्णन आता है। पल्लकीय, पालकीय, पल्ली या पल्लीवाल गच्छ उनमें से एक है। इस गच्छ का जैन धर्म के प्रचार व प्रसार में बहुत योगदान रहा है। इस गच्छ के आचार्यों ने बहुत से ग्रन्थों की रचनाएँ कीं तथा कई मूर्तियों की प्रतिष्ठा भी कराई।

'जैनाचार्य श्री आत्मानन्द जन्म-शताब्दी स्मारक ग्रन्थ' (1936) म प्रकाशित श्री अगर चन्द जी नाहटा के लेख 'पल्लीवाल गच्छ पट्टावली'[4] के अनुसार पल्लीवाल गच्छ की स्थापना पाली नगर (मारवाड़) में भगवान महावीर के पट्ट पर स्थित 17 वें आचार्य जशोदेव (यशोदेव) सूरि द्वारा सम्वत् 329 वैसाख शुक्ला 5 को हुई। लेकिन श्री लोढ़ा जी इस गच्छ की उत्पत्ति के समय से सहमत नहीं हैं।

गुजराती मल के ग्रन्थ 'जैन परम्परा नो इतिहास' भाग-2 के अनुसार प्राचीन गुजरात का पाटण नगर, श्रीमाल नगर संवत् 1078 में भंग हुआ। तब वहाँ के महाजन, ब्राह्मण वगैरह पाली (मारवाड़) में जाकर रहने लगे। तब से पाली विशेष रूप से आबाद हुआ तथा व्यापार का केन्द्र बना। बाद में ये लोग पाली में रहने के कारण पल्लीवाल नाम से पहचाने जाने लगे। इसी पाली नगर से संवत् 1150 में आचार्य प्रद्योतन सूरि के शिष्य आचार्य इन्द्रदेव सूरि से श्वेताम्बर पल्लीवाल गच्छ तथा श्वेताम्बर पल्लीवाल जाति निकली।

पाली में पूर्णभद्र वीर जिनालय की भगवान श्री महावीर स्वामी तथा भगवान श्री आदिनाथ की प्रतिमाओं पर विक्रम संवत् 1144 तथा 1151 के लेख हैं जिनमें 'पल्लकीय प्रद्योतनाचार्य'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गच्छे' पद का प्रयोग हुआ है। इस गच्छ से सम्बन्धित यही सबसे प्राचीन लेख उपलब्ध है। अतः पल्लकीय गच्छ की उत्पत्ति का समय विक्रम की बारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानना उचित है।

प्राचीन लेखों में पल्लकीय गच्छ, पालकीय गच्छ तथा पल्ली गच्छ का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। शब्दों की समानता के आधार पर इस गच्छ को पल्लीवाल जाति से सम्बन्धित मान लिया गया है। लेकिन ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो पल्लकीय गच्छ का पल्लीवाल जाति से विशेष सम्बन्ध होना सिद्ध करता हो। बहुत से ऐसे लेख उपलब्ध हैं जिनसे सिद्ध होता है कि पल्लीवाल जाति के लोगों ने दूसरे गच्छों के सानिध्य में शास्त्र लिखवाये तथा मूर्तियों की प्रतिष्ठाएँ करवाईं। बहुत कम लेख ऐसे हैं जिनमें पल्लीवाल जाति तथा पल्लकीय-गच्छ का एक साथ नामोल्लेख मिलता है। इसके विपरीत पल्लीवाल जाति के अतिरिक्त अन्य जातियों के लोगों ने पल्लकीय गच्छ के आचार्यों से मूर्ति प्रतिष्ठाएं करवाईं, ऐसे कई लेख मिलते हैं।

इतना ही नहीं, पल्लीवाल ज्ञातिय नेमड़ के वंशज वीरधवल तथा भीमदेव, वि. सं. 1302 में उज्जैन में तपागच्छीय परम्परा में दीक्षित हुये तथा क्रमशः मुनि विद्यानन्द तथा मुनि धर्मकीर्ति के नाम से विख्यात हुये। मुनि श्री विद्यानन्द जी बाद में सूरि पद से विभूषित हुये तथा श्रीमद् विद्यानन्द सूरि के नाम से विख्यात हुये।

यदि पल्लीवाल जाति का पल्लकीय गच्छ से विशेष सम्बन्ध रहा होता तो वीर धवल तथा भीमदेव को तपागच्छ में दीक्षित होने के बजाय पल्लकीय गच्छ में ही दीक्षित होना चाहिए था। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इससे तो यही सिद्ध होता है कि पल्लकीय गच्छ तथा पल्लीवाल जाति में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था।

यदि हम यह मानें कि पल्लकीय गच्छ के आचार्यों ने पाली की जनता को प्रतिबोधित किया, जिससे उन्होंने जैन धर्म स्वीकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया तथा कालान्तर में ये लोग पल्लीवाल जाति के रूप में परिणित हो गये तो इससे पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति का समय विक्रम की बारहवीं शताब्दी तय होता है। लेकिन ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं जिनसे सिद्ध होता है कि विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी में भी पल्लीवाल जाति थी। वि. सं. 1052 में फिरोजाबाद के निकट चन्द्रवाड़ में चन्द्रपाल नामक पल्लीवाल जैन राजा राज्य करता था।[5] अतः इससे सिद्ध होता है कि पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति पल्लकीय गच्छ (तथाकथित पल्लीवाल गच्छ) के आचार्यों द्वारा पाली की जनता को प्रतिबोधित करने पर नहीं हुई, बल्कि बहुत पहले ही पल्लीवाल जाति अस्तित्व में आ गई थी तथा बाद में (बारहवीं शताब्दी में) पल्लकीय गच्छ की स्थापना हुई।

वैसे भी किसी आचार्य द्वारा आम जनता (जिसमें धर्मोपदेश सुनने वाले वैश्य वर्ण के अलावा अन्य वर्णों जैसे—लुहार, सुनार आदि के लोग भी रहे होंगे) को प्रतिबोधित करने पर पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति कैसे हो सकती है। क्योंकि कालान्तर में इन सबों के जैन धर्म अपनाने पर पल्लीवाल वैश्यों का लुहार, सुनार आदि साधर्मी जातियों से रोटी-बेटी व्यवहार रहा हो, ऐसा समझ में नहीं आता है।

(२.३) पाली और पल्लीवाल

मारवाड़ में स्थित पाली नामक नगर से पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति मानी जाती है। शब्दों की समानता के आधार पर यदि कहा जाय कि पाली से पल्लीवाल जाति का घनिष्ट सम्बन्ध रहा है तो इससे पूर्व कई बिन्दुओं पर विचार करना होगा। क्या पाली नाम का नगर मात्र मारवाड़ में जोधपुर के निकट ही है अथवा कहीं और भी है? क्या पल्ली शब्द से मिलते-जुलते अन्य नगर भी हैं? 'पल्ली' शब्द की प्राचीनता क्या है? इन बातों पर हमको सविस्तार विचार करना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाली नाम के नगर मारवाड़ के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी स्थित हैं। इस नाम का एक प्राचीन नगर उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के निकट यमुना नदी के किनारे स्थित है। जैनों के प्रसिद्ध तीर्थस्थान कौशाम्बी से पभोसा की ओर जाने पर यह पाली आता है।[6] वहाँ पर एक प्राचीन जैन मन्दिर था जो यमुना नदी की बाढ़ में बह गया। भग्नावशेष ही बाकी हैं। वहाँ नया मन्दिर बन गया है, लेकिन प्रतिमाएँ अत्यन्त प्राचीन हैं। वहाँ चारों ओर खण्डहर बिखरे पड़े हैं। कई जैन मूर्तियाँ वहाँ से प्राप्त हुई हैं। इन बातों से ऐसा लगता है कि यह पाली (उत्तर प्रदेश) एक प्राचीन स्थान रहा है तथा वहाँ जैन लोग वड़ी संख्या में रहते थे।

पाली नाम का एक अन्य गाँव आगरा जिले की किरावली तहसील के सहाई नामक गाँव के निकट है। इसी नाम का एक अन्य गाँव मध्यप्रदेश के विलासपुर जिले में भी स्थित है। पालीगढ़ नाम का एक स्थान लखनऊ से 36 कि.मी. दूर खोराघाट के निकट है। पालीताना नामक नगर गुजरात में स्थित है ही। एक पाली नगर उ. प्र. के ललितपुर जिले में भी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पाली नाम के कई नगर विभिन्न क्षेत्रों में स्थित हैं। 'पल्ली' नाम के कुछ प्राचीन नगरों का उल्लेख भी मिलता है। 'दत्त पल्ली' नाम का एक नगर ग्यारहवीं शताब्दी में इटावा अंचल में था। इस नगर पर ग्यारहवीं शताब्दो से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक जैन तथा चौहान वंशी राजाओं का राज्य रहा।[7]

'पल्लीवाल जैन इतिहास' की भूमिका में भी पल्ली नाम के नगरों का उल्लेख है। इनकी प्राचीनता को निम्न प्रमाणों द्वारा दर्शाया गया है—1. 'पल्ली में अग्नि का उपद्रव वि. सं. 918, चैत्र शुक्ला द्वितीय को हुआ था। ऐसा एक शिलालेख घटियाला (जोधपुर मारवाड़) से प्राप्त हुआ है। इसी लेख में प्रतिहार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंशी राजा कुकुट्ट के प्रशस्त कार्यों का उल्लेख है। (2) एक लेख वि. सं. 1334 का प्राप्त हुआ है जिसमें आकाश मार्ग से पाटण से पल्लीपुर तक गमन करने का उल्लेख है। (पाटण गुजरात में स्थित है)। (3) एक अन्य लेख वि सं. 1389 का है जिसमें तीर्थ स्थानों की सूची में 'पल्लयाँ' का उल्लेख है। (4) एक लेख वि.सं. 1215 का है जिसमें भी पल्ली शब्द का प्रयोग हुआ है। इन सभी लेखों में पल्ली नगर का उल्लेख किया गया है, लेकिन इस भूमिका के लेखक ने इसे मारवाड़ में स्थित पाली नगर ही मान लिया है।

इसी भूमिका में लिखा है कि जैसलमेर स्थित किले के ग्रन्थ भण्डार में रखी हुई 'पंचाशक-वृत्ति' नामक ताड़पत्रीय पुस्तक के अन्त में दो पद्य हैं, जिनमें लिखा है कि "वि. सं. 1207 में 'पल्ली-भंग' के समय उस त्रुटित पुस्तक को ग्रहण किया था; पीछे श्री जिनदत्त सूरि जी के शिष्य स्थिर चन्द्रगणी ने अपने कर्म क्षयार्थ अजयमेरु दुर्ग में उसके गत् भाग को लिखा था।" इस लेख में भी पल्ली शब्द ही प्रयुक्त हुआ है जिसे पाली मान लिया गया है।

पल्लीवालों के चारण-भाट हिन्डौन निवासी श्री कजौड़ीलाल राय थे। उनसे प्राप्त एक हस्तलिखित 'प्रार्थना-पुस्तक' में भी पल्लीपुर नगर का वर्णन मिलता है। यह पुस्तक लगभग 180 वर्ष पूर्व लिखी गई थी। इसमें एक स्थान पर लिखा है कि पल्लीपुर गुजरात खण्ड के मध्य में स्थित है। सम्भवतया यह पल्लीपुर पूर्वोक्त पल्लीपुर ही है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पाली नाम के तो कई ग्राम व नगर विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं ही, साथ ही पल्ली नाम के कई प्राचीन नगरों का भी उल्लेख मिलता है। लेकिन ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो पल्लीवाल जाति का सम्बन्ध किसी पाली से होना सिद्ध करता हो। कुछ लेखों से पता चलता है कि मारवाड़ के पाली नगर में पल्लकीय गच्छ के आचार्यों ने मूर्ति-प्रतिष्ठा कराई। लेकिन पल्लकीय गच्छ का पाली से सम्बन्ध होने का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ यह तो नहीं कि पल्लींवाल जाति का भी पाली से सम्बन्ध रहा है। दूसरी ओर पल्लोवाल जाति का पल्ली नाम के नगरों से सम्बन्ध रहा है, इसके पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। अतः पालो से पल्लीवाल जाति का सम्बन्ध या वहाँ से इसकी उत्पत्ति मानना गलत है।

[२.४] पालीवाल तथा पल्लोवाल

श्री लोढ़ा जी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि पालीवाल ब्राह्मण तथा पल्लीवाल वैश्यों में पुरोहित एवं यजमान का सम्बन्ध था, लेकिन ऐसा मानना तर्क संगत नहीं है क्योंकि पालोवाल ब्राह्मणों के इतिहास से स्पष्ट है कि वे अति धनवान तथा कुशल व्यापारी थे।[6] (देखें परिशिष्ट–'पालीवाल ब्राह्मण') वैसे इस बात का कोई प्रमाण भी नहीं है, यह लोढ़ा जी का मात्र अनुमान हो लगता है।

श्री लोढ़ा जो पल्लीवालों का निकास भी पालीवालों के निकास की भाँति पाली से हो मानते हैं। साथ हो उनके पाली त्याग की घटना को भी पालीवालों की तरह को ही मानते हैं। पालीवालों के इतिहास से स्पष्ट है कि पालीवालों को कुछ विशेष कारणों से पाली नगर छोड़ना पड़ा था, इसलिए कालान्तर में जहाँ भी वे रहे, वे पालीवाल ब्राह्मणों के रूप में प्रसिद्ध हो गये। प्रश्न उठता है कि पल्लीवाल जैनों को पाली छोड़कर क्यों जाना पड़ा? यजमान के साथ पुरोहित विस्थापित हो जाय, यह तो सम्भव है, लेकिन पुरोहित के साथ यजमान भी चले जाँय, ऐसा होना समभः–सम्भावना से परे है।

श्री लोढ़ा जी ने इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर नहीं दिया है। उन्होंने पालीवाल ब्राह्मणों की कहानी दोहराकर कह डाला है कि पल्लीवाल भी इन पालीवाल ब्राह्मणों के साथ पाली छोड़कर चले गये। लेकिन यह कहना आधारहीन है। पहली बात तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह है कि पल्लीवाल जैनों के साथ इस प्रकार की घटना का कोई प्रमाण नहीं मिलता। थोड़ी देर को यह मान भी लें कि पल्लीवाल जैनों ने भी अपना तथाकथित मूल स्थान 'पाली' का त्याग किया था तब तो इस जाति का नाम भी पालीवाल ब्राह्मणों की तरह पालीवाल जैन होना चाहिए था न कि पल्लीवाल जैन। यदि कोई कहे कि पल्लीवाल पालीवाल शब्द का ही बिगड़ा रूप है, तो यह बात भी तर्क संगत प्रतीत नहीं होती क्योंकि पालीवाल शब्द का सरलीकृत रूप पल्लीवाल कभी नहीं हो सकता। प्राचीन मूर्ति लेखों में भी पल्लीवाल शब्द ही लिखा मिलता है, पालीवाल नहीं। हमें एक भी ऐसा लेख देखने को नहीं मिला जहाँ 'पालीवाल जैन' लिखा हो। अतः पल्लीवाल जैनों का उद्‌गम पालीवाल ब्राह्मणों की तरह पाली से मानना सही नहीं है।

कोई कहे कि उक्त पाली को पहले 'पल्ली' नाम से जाना जाता था, तो यह बात भी तर्क संगत नहीं जान पड़ती। क्योंकि ऐसा होता तो पालीवाल ब्राह्मणों को भी 'पल्लीवाल ब्राह्मण' कहा गया होता, लेकिन ऐसा है नहीं। कोई यह कहे कि पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति के समय उक्त नगर का नाम पल्ली था तथा पालीवाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति के समय उसका नाम पाली हो गया लेकिन इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं है।

अतः पल्लीवाल जाति का सम्बन्ध न तो पालीवाल ब्राह्मणों से हो रहा है और न ही किसी पाली नगर से। इसका सम्बन्ध तो 'पल्ली' नाम के किसी नगर से ही होना चाहिए।

[२.५] पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति—

अधिकतर इतिहासज्ञ जैन जातियों की उत्पत्ति किसी न किसी नगर से हुई मानते हैं। जातियों के नाम भी इन्हीं नगरों के नाम पर पड़े, ऐसी आम धारणा है। इसी आधार पर पाली नगर से पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति भी मानी जाती है। लेकिन हम पहले ही सिद्ध कर चुके हैं कि पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति पाली नगर से नहीं हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ लोगों की धारणा है कि पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति कन्नौज से हुई([12]) क्योंकि पल्लीवाल जाति बहुत पहले से ही वहीं पर रह रही है। लेकिन ऐसा सोचना बिल्कुल गलत है। यदि जाति की उत्पत्ति कन्नौज से हुई होती तो इसका नामकरण कन्नौज नगर के नाम पर कनवजिया आदि होना चाहिए था। जाति का नाम पल्लीवाल फिर कैसे पड़ा? इस प्रश्न का कोई समाधान नहीं है। अतः कन्नौज से पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति नहीं मानी जा सकती है।

पल्लीवाल नाम से लगता है कि जाति की उत्पत्ति पल्ली नाम के किसी नगर से ही होनी चाहिए। हम 'दत्तपल्ली' तथा 'पल्लीपुर' इन दो नगरों का उल्लेख कर चुके हैं। इन दोनों नगरों से पल्लीवाल जाति का भी सम्बन्ध रहा है। अतः इनमें से किसी एक नगर से पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति मानी जा सकती है। पल्लीपुर का उल्लेख बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी के लेखों में मिलता है। यह नगर गुजरात खण्ड में स्थित था। दत्तपल्ली नाम का नगर दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी का इटावा अंचल का प्राचीन नगर था।

पल्लीपुर नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि इस नगर का यह नाम वहाँ पर पल्लीवालों के रहने के कारण पड़ा। पल्लीपुर यानि कि पल्लीवालों का पुर। श्री कजौड़ीलाल राय से प्राप्त हस्त-लिखित 'प्रार्थना-पुस्तक' से भी यही सिद्ध होता है कि पल्लीवालों ने पल्लीपुर में वास किया जो कि गुजरात खण्ड के मध्य में स्थित है। अतः पल्लीपुर से पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति नहीं मानी जा सकती है।

दत्तपल्ली नाम से ऐसा आभास होता है कि नगर का यह नाम पल्लीवाल जाति के किसी विशिष्ट व्यक्ति के नाम पर पड़ा है। इससे भी पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति नही मानी जा सकती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दक्षिण की तेलुगू तथा तमिल भाषा में 'पल्ली' शब्द का अर्थ 'छोटे-गाँव' से होता है। आज भी छोटे-छोटे गाँवों के नाम के पीछे पल्ली शब्द लगाने का प्रचलन है। प्राचीन काल में एक पल्ली (छोटे गाँव) में एक ही वर्ण के लोग रहते थे। कई-कई पल्लियों के लोग एक ही वर्ण के तथा एक ही धर्म को मानने वाले हुआ करते थे। अतः उन सभी पल्लियों के सब लोग, जो जैन धर्मानुयायी थे तथा उनका वर्ण वैश्य था, कालान्तर में पल्लीवाले कहे जाने लगे तथा वे ही बाद में पल्लीवाल जाति के नाम से प्रसिद्ध हो गये। अतः पल्लीवालों की उत्पत्ति दक्षिण भारत से माननी चाहिए।

आचार्य कुन्दकुन्द पल्लीवाल जात्युत्पन्न थे (19,10) उनका जन्म दक्षिण के तामिल प्रदेश के कुरुमराई नामक ग्राम में हुआ था।(36) आचार्य श्री ने बहुत वर्षों तक तामिल प्रदेश में ही भ्रमण किया तथा धर्म प्रभावना की। उनकी साधना स्थली भी तामिल प्रदेश के जंगल ही थे। इससे भी यही सिद्ध होता है कि पल्लीवालों का सम्बन्ध दक्षिण के तामिल प्रदेश से रहा है। अतः पल्लीवाल जाति का उद्गम स्थान तामिल प्रदेश ही रहा है।

पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति के समय के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का मत है कि इसकी उत्पत्ति ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में हुई। लेकिन यह मानना गलत है। पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति तो बहुत पहले ही हो चुकी थी। इस जाति में श्वेताम्बर तथा दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों को मानने वाले लोग हैं। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी के कई लेख तथा मूर्ति-लेख उपलब्ध हैं। इनसे पता चलता है कि उस समय जाति के कुछ लोग दिगम्बर आम्नाय को मानने वाले थे तथा कुछ लोग श्वेताम्बर आम्नाय को मानते थे। यानि कि तेरहवीं शताब्दी के अन्त में इस जाति में जैन धर्म की दोनों आम्नायों को मानने वाले लोग थे। यदि पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में मानें तब ऐसा होना तो असम्भव है कि जाति की उत्पत्ति के समय से ही या उत्पत्ति के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ समय बाद एक ही जाति के लोग दो अलग-अलग आम्नायों को मानने लगे हों। क्योंकि किसी भी समुदाय या वर्ग का एक जाति में परिणित होना उस समुदाय के समस्त लोगों के खान-पान, रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा धर्म की समानता पर निर्भर करता है। यदि दो वर्ग अलग-अलग धर्मों को मानने वाले हों तो उनका एक ही जाति के रूप में उभरकर आना असम्भव ही है। यदि पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति बारहवीं शताब्दी मानें तब अलग-अलग आम्नायों को मानने वाले लोग एक ही जाति में कैसे परिणित हो सकते हैं ? जबकि दो अलग-अलग आम्नायों को मानने के कारण दो अलग-अलग जातियों का निर्माण होना चाहिए था। अतः पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में नहीं बल्कि उससे बहुत पहले ही गई थी।

आचार्य कुन्दकुन्द पल्लीवाल जात्युत्पन्न थे। इनका जन्म वि. सं 49 में हुआ था। अतः पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति का समय आचार्य कुन्दकुन्द से पूर्व का ही होना चाहिए। 'पल्ली' ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की तामिल भाषा का बहु-प्रचलित शब्द भी है।[8] अतः पल्लीवालों की उत्पत्ति का समय भी वि. पहली सदी (ईसा पूर्व पहली-दूसरी शताब्दी) मानना चाहिए।

[२.६] पल्लीवाल जाति का विकास—

बहुत समय तक पल्लीवाल दक्षिण के तामिल प्रदेश में ही रहते रहे। कालान्तर में ये उत्तर भारत की ओर पलायन कर गये। विक्रम की दसवीं शताब्दी तक ये लोग कन्नौज तथा इटावा अंचल में फैल गये तथा अन्तिम रूप से यहीं पर रहने लगे। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक ये पल्लीवाल बिना किसी कठिनाई के यहाँ आनन्दपूर्वक रहते रहे।

वि. सं. 1251 (सन् 1194) में मुहम्मद गौरी जब बनारस की ओर जा रहा था, तब उसकी मुठभेड़ उस समय के इटावा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंचल के एक प्रमुख नगर चन्द्रवाड़ में राजा जयचन्द गहड़वार से हो गई, जिसमें राजा जयचन्द, जो कि हाथी के हौदे पर बैठा सैन्य संचालन कर रहा था, सहसा शत्रु का तीर लगने से मर गया। राजा जयचन्द की सेना भाग खड़ी हुई। मुहम्मद गौरी की सेना ने चन्द्रवाड़ नगर को खूब लूटा। वह चौदह सौ ऊँटों पर लूट का सामान भरवाकर लें गया। उस समय चन्द्रवाड़ में मुख्यतः चौहान तथा पल्लीवाल निवास करते थे। युद्ध तथा उसके बाद लूट-पाट के कारण यहाँ की जनता को वहुत कष्ट उठाने पड़े। अधिकतर लोग चन्द्रवाड़ छोड़कर अन्यत्र चले गये। चौहान वंशी लोग मारवाड़ की ओर चले गये।[5]

इस युद्ध के समय कन्नौज का शासन राजा जयचन्द का पुत्र हरिश्चन्द्र देख रहा था। कन्नौज में चन्द्रवाड़ के युद्ध का कोई असर नहीं हुआ। कन्नौज राजा हरिश्चन्द्र की देख-रेख में सुरक्षित था,[5] अतः वहाँ के निवासियों को कहीं भी विस्थापित होने की आवश्यकता नहीं हुई। कन्नौज में पल्लीवाल जाति के लोग भी वहुत संख्या में रहते थे। अतः वे सब पूर्ण सुरक्षित रहे। कालान्तर में व्यापार के उद्देश्य से ये पल्लीवाल अलीगढ़, फिरोजावाद, चन्द्रवाड तथा कचौड़ाघाट में फ़ैल गये।

चन्द्रवाड़ में मुहम्मद गौरी तथा राजा जयचन्द के युद्ध के बाद चन्द्रवाड तथा इसके आसपास के पल्लीवाल जाति सहित कई अन्य जैन जातियों के लोग आर्थिक तंगी के शिकार हो गये तथा अन्यत्र जाने को विवश हो गये। इस क्षेत्र के कुछ पल्लीवाल मुरना (म प्र.) में वस गये तथा शेष पल्लीवाल हस्तिनापुर के निकट एकत्रित हो गये तथा अन्यत्र जाने का विचार करने लगे।

श्री कजौड़ीलाल राय से प्राप्त 'प्रार्थना पुस्तक' में लिखा है—'हस्तनापुर के पास नगर खंडेले से 12½ प्रकार की जाति चलीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पल्लीवाल श्रावक धर्म लेकर चले गुजरात खण्ड में। धनहतशाह ने बखान दिया है कि पल्लीवाल गुजरात खण्ड से चले। धनपत शाह के दो पुत्र–गुंझा व सोहिल। गुँझा ने पल्लीपुर में बास किया जो गुजरात खण्ड के मध्य में है।' 'प्रार्थना-पुस्तक' का यह वक्तव्य उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में लिखा गया। धनपतशाह का समय विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी का मध्य है। उसने जिस घटना का बखान (वर्णन) किया है वह यथा सम्भव चन्द्रवाड़ में मुहम्मद गौरी के युद्ध के समय की ही है। इसी समय इटावा अंचल में स्थित विभिन्न जैन जातियों के लोग इस क्षेत्र को छोड़ने के लिये बाध्य हो गये तथा हस्तिनापुर के निकट एकत्रित होकर अन्यत्र जाने के लिये विचार-विमर्श करने लगे। पल्लीवालों ने गुजरात की ओर प्रस्थान किया और वे वहीं बस गये। जैसा कि विभिन्न मूर्तिलेखों से पता चलता है, वि. चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक ये पल्लीवाल पूरे गुजरात में फैल गये। पाटण, काठियावाड़, मेहसाणा, भरुच तथा सूरत इन सभी स्थानों पर इस जाति के लोग रहते थे।

कुछ मूर्ति लेखों में गुर्जर पल्लीवाल (शक सं. 1428), पद्मावती पल्लीवाल (शक सं. 1601) तथा उज्जैनी पल्लीवाल (शक सं. 1626) का उल्लेख आता है। ये सभी मूर्तियाँ नागपुर के मन्दिरों में मौजूद हैं। इन लेखों से सिद्ध होता है कि पल्लीवाल जाति के कुछ लोगों ने विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में गुजरात प्रदेश छोड़ दिया तथा उज्जैनी नगरी की ओर चले गये तथा वहीं पर रहने लगे।

ऐसा ज्ञात हुआ है कि आज भी रतलाम में, जो कि उज्जैन के निकट ही है, पल्लीवाल जाति के कुछ लोग रहते हैं, लेकिन ये सभी हिन्दू धर्म को मानते हैं। अब इनका पल्लीवाल जाति की मूलधारा से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। उज्जैन के शेष पल्लीवाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मावती नगर होते हुये विदर्भ क्षेत्र की ओर चले गये। आज भी वहाँ पल्लीवाल जैन लोग रहते हैं। विदर्भ क्षेत्र के पल्लीवालों का मानना है कि इस क्षेत्र में बसने वाले पल्लीवाल दो रास्तों से आये हैं—एक वर्धा होते हुये तथा दूसरे छिन्दवाड़ा की ओर से। बाद में ये सभी पल्लीवाल विदर्भ क्षेत्र के नागपुर तथा वर्धा आदि में बस गये। पिछले लगभग 200-250 वर्ष से ये लोग यहाँ पर ही बसे हुये हैं। यहाँ इनके परिवारों की संख्या लगभग सौ है। ये भी पल्लीवाल जाति की मुख्य धारा से अलग हो गये हैं।

गुजरात प्रदेश के काठियावाड़ क्षेत्र में रहने वाले पल्लीवालों का भी मुख्य धारा से सम्बन्ध समाप्त हो गया तथा ये लोग पूर्णतः गुजरात के ही वासी हो गये। कालान्तर में इन्होंने पल्लीवाल जाति के रूप में अपना अस्तित्व ही खो दिया।

गुजरात के पाटन के आसपास रहने वाले पल्लीवालों ने भी सत्रहवीं शताब्दी तक इस स्थान का त्याग कर दिया तथा ये धीरे-धीरे मारवाड़ होते हुये पूर्वी राजस्थान तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बस गये। आज भी बहुत से पल्लीवाल जयपुर, सवाई-माधोपुर, अजमेर, अलवर, भरतपुर, आगरा तथा मथुरा जिलों में रहते हैं।

इस प्रकार एक पल्लीवाल जाति के लोग मुख्यतः इन चार

❀ पल्लीवाल जाति का मारवाड़ के पाली नगर से कोई विशेष सम्बन्ध रहा हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। पल्लकीय गच्छ (जिसे बाद में पल्लीवाल-गच्छ माना जाने लगा) का पाली नगर से सम्बन्ध रहा है। अतः इस गच्छ का पाली से सम्बन्ध होने का अर्थ यह मान लेना की पल्लीवाल जाति का भी पाली से संबंध रहा है, गलत है। क्योंकि इस गच्छ का पल्लीवाल जाति से कोई विशेष संबंध भी नहीं रहा है। अन्य जाति के लोग भी इस गच्छ में दीक्षित होते रहे हैं। इस बात का हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागों में बँट गये—कन्नौज क्षेत्र के पल्लीवाल, मुरैना क्षेत्र के पल्लीवाल, जगरौठी तथा आगरा क्षेत्र के पल्लीवाल और नागपुर क्षेत्र के पल्लीवाल। बहुत समय तक तो यही माना जाता रहा कि ये चारों घटक अलग-अलग जातियाँ हैं, लेकिन ऐसा मानना सही नहीं है। पल्लीवाल जाति के लोग विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग समूहों में बँट गये, मूलतः ये चारों एक ही जाति के अंग हैं। इनके गोत्रों के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि बहुत से गोत्र चारों घटकों में मिलते हैं। निश्चित ही ये गोत्र जाति के विघटन के पूर्व के हैं। जो गोत्र आपस में नहीं मिलते, वे या तो इन घटकों के विघटन के बाद के हैं, अन्यथा उन गोत्रों के वंशज अब अन्य घटकों में रहे नहीं।

आज हम पल्लीवाल जाति को जिस रूप में देखते हैं उसम पल्लीवालों के विभिन्न घटकों के साथ-साथ सिकन्दरा (आगरा), पालम (दिल्ली के निकट) तथा अलवर के जैसवाल तथा सैलवाल जाति के लोग भी सम्मिलित हैं। इन जातियों ने लगभग 150 वर्ष पूर्व से ही पल्लीवालों में विवाह सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे। अब ये पल्लीवाल जाति के ही अभिन्न अंग बन गये हैं। इन जातियों ने भी स्वयं को पल्लीवाल जाति में विलीन कर लिया है तथा अपना अलग अस्तित्व समाप्त कर लिया है। नागपुर क्षेत्र के पल्लीवालों से वाकी पल्लीवालों का कोई सम्बन्ध अब नहीं रहा है, इसका मुख्य कारण दूरी है। मातृभाषा तथा रहन-सहन में भी बहुत अन्तर है।

[२.६] पल्लीवाल जाति के गोत्र—

अधिकतर जातियों में विभिन्न गोत्र पाये जाते हैं। जिस प्रकार से जातियों का नामकरण वंशों, प्रान्तों, नगरों तथा व्यवसायों आदि के आधार पर माना जाता है उसी प्रकार से गोत्रों का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नामकरण भी होना माना जाता है। परिवार में विशिष्ट पुरुषों के नाम पर भी गोत्र स्थापित हो जाया करते थे। कुछ गोत्रों की उत्पत्ति जाति की उत्पत्ति से पूर्व तथा कुछ गोत्रों की उत्पत्ति जाति की उत्पत्ति के बाद हुई है, ऐसी सामान्य धारणा है।

कुछ जातियाँ ऐसी भी हैं जिनमें गोत्र नहीं हैं, जैसे—पद्मावती पुरवाल, गुजरात के मेवाड़ा, ओसवाल, श्रीमाल, सेनवाल आदि जैन जातियाँ। कुछ जातियों के गोत्र आपस में एक दूसरे में मिलते हैं। जैसे–परवार, गहोई तथा अग्रवाल जाति के गोत्र एक दूसरे में मिलते हैं। जब कभी किसी गोत्र विशेष के परिवारों की संख्या कम रह जाती थी तब ये परिवार दूसरे गोत्रों में सम्मिलित हो जाते थे तथा स्वयं के गोत्र का अस्तित्व ही समाप्त कर लेते थे।

पल्लीवाल जाति में गोत्रों की उत्पत्ति के बारे में एक स्थान पर ऐसा लेख मिलता है कि धनपतिशाह के दो पुत्र गुंजा तथा सोहिल थे। इन दोनों के कुल बावन पुत्र थे। उन पुत्रों के नाम पर ही जाति में विभिन्न गोत्रों की उत्पत्ति हुई। लेकिन ऐसा मानना गलत है। यह हो सकता है कि जाति के कुछ गोत्रों के नाम उनमें से कुछेक विशिष्ट योग्यता वाले पुत्रों के नाम पर पड़े हों, लेकिन सभी गोत्रों का सम्बन्ध इन पुत्रों से जोड़ना अनुचित है। इसके कई कारण हैं। धनपतिशाह का समय विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी का मध्य है, लेकिन कुछ गोत्रों का उल्लेख चौदहवीं शताब्दी के मूर्तिलेखों में मिलता है। विशेषकर वरेंडिया (वरहुडिया) गोत्र का उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलता है। कुछ गोत्र निश्चित रूप से गाँवों के नाम पर पड़े हैं। जैसे—सलावदिया, काश्मीरिया तथा गुवालियरे आदि। तथा कुछ गोत्र काफी नये भी हैं।

पल्लीवाल जाति में मुख्यतः छह घटक सम्मलित हैं। वे हैं—(1) जगरौठी—अलवर तथा आगरा क्षेत्र के पल्लीवाल,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(2) कन्नौज– अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद क्षेत्र के पल्लीवाल, (3) मुरैना तया ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवाल, (4) नागपुर (विदर्भ) क्षेत्र के पल्लीवाल, (5) सिकन्दरा तथा पालम के सैल-वाल तथा (6) पालम तथा अलवर के जैसवाल। इनमें से सैल-वाल तथा जैसवाल प्रारम्भ में अलग जातियाँ थीं। लेकिन काला-न्तर में इनके परिवारों की संख्या कम हो जाने से इनको शादी-विवाहादि में कठिनाई का अनुभव हुआ। अतः इस जाति के लोगों ने अन्य जाति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय किया। चूँकि पल्लीवाल जाति के धार्मिक तथा सामाजिक आचार-विचार जैसवाल तथा सैलवाल जातियों से मिलते थे तथा पल्लीवाल जाति भी छोटी जाति होने के कारण अपना क्षेत्र बढ़ाना चाहती थी, अतः ये जातियाँ आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व पल्लीवाल जाति में पूर्णतः विलीन हो गईं।

आरम्भ के चार घटकों के गोत्रों के सम्बन्ध में एक वात मुख्य है कि इन सब घटकों के कुछ गोत्र आपस में एक दूसरे से नहीं मिलते हैं। ऐसा लगता है कि इन गोत्रों की स्थापना पल्ली-बाल जाति की उत्पत्ति के बहुत बाद में हुई है। भिन्न-भिन्न घटकों के गोत्र निम्न प्रकार से हैं—

१. जगरौठी, अलवर तथा आगरा क्षेत्र के पल्लीवालों के गोत्र—

(1) सुगे सुरिया, (2) नंगे सुरिया, (3) नागे सुरिया, (4) सलावदिया, (5) डगिया मसंद, (6) डगिया सारंग, (7) डगिया रसंक, (8) जनूथरिया–ईंट की थाप. (9) जूथरिया–कैम की थाप, (10) राजौरिया, (11) चौर बंबार, (12) वह-त्तरिया, (13) भड़कौलिया, (14) बरवासिया, (15) बारौ-लिया, (16) बडेरिया, (17) अठवरसिया, (18) नौलाठिया,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(19) पावटिया, (20) लैदोरिया, (21) गिदोराबकस, (22) धाती, (23) कोटिया, (24) नौधी, (25) लोहकरेरिया, (26) सैंगरवासिया, (27) तिलवासिया, (28) चाँदपुरिया, (29) दिवरियां, (30) व्यानिया, (31) वैद, (32) काश्मीरिया, (33) निंगोहिया, (34) खैर, (35) चकिया, (36) बिलनमासिया, (37) डडूँरिया, (38) नौहराज, (39) गुदहैलिया, (40) भावरिया, (41) कुरसौलिया, (42) खोहवाल (43) पचीरिया, (44) वारीवाल, (45) गुदिया, (46) निहानिया, (47) लषटकिया, (48) दादुरिया, (49) गिदौरिया, (50) भोवार, (51) माईमूड़ा, (52) गुवालियर।

२ कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद क्षेत्र के पल्लीवालों के गौत्र—

(1) अकवरपुरिया, (2) अगरैय्या, (3) औरंगाबादी, (4) कठमत्या, (5) कठोरिया, (6) करोडिया, (7) करोनिया (8) काश्मेरिया, (9) कोनेवाल, (10) गिदौरिया, (11) चीनिया (12) चौधरिया, (13) जिवरिया, (14) टेनगुरिया, (15) ठाकुरिया, (16) डडूँरिया, (17) दरवाजेवाल, (18) धनकाडिया (19) नगेसुरिया, (20) नारंगावादी, (21) पटपस्या, (22) पहाड्या, (23) फिरोजाबादी, (24) भजौरिया, (25) मवाडिया, (26) वजौरिया, (27) वरवासिया, (28) बाकेवाल, (29) वारीलखु, (30) वदिया, (31) सकटिया, (32) सैंगरवासिया, (33) हतकतिया।

३. मुरैना तथा ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवालों के गोत्र—

(1) कायरे, (2) काश्मीरिया, (3) खेरोनींबाल, (4) खोहवाल, (5) खैर, (6) गुदिया, (7) ग्वालियरे, (8) चौमुण्डा (चौरवम्वार), (9) चौथा, (10) डडूरिया, (11) दमेजरे,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(12) दिवस्या, (13) धनवासी (धाती), (14) धुनेरिया, (15) नगेसुरया, (16) तिहानिया, (17) पचोरिया, (18) पाडे, (19) पावढ़िया, (20) महेला, (22) रायसेनिया, (23) लखटकिया, (24) लोहकरेरिया, (25) बडेरिया, (26) वरवासिया, (27) वारीवाल, (28) वैद-भगोरिया, (29) व्यानिया, (30) बंजारे, (31) सूमल, (32) सलावदिया, (33) सारंग डग्या, (34) साले, (35) सैंगरवासिया।

४. नागपुर (विदर्भ) क्षेत्र के पालीवालों के गोत्र—

(1) वाईवाल, (2) नामक, (3) बिजाबरत, (4) धराईवाल, (5) डरेपूर, (6) पानीवाल, (7) थासु, (8) फरीवाल, भिमानी, (10) छामरनीवाल, (11) बीदर, नन्दनीवाल।

५. सैलवालों के गोत्र—

(1) मालेश्वरी (मालेसरी), (2) आमेश्वरी, (3) अम्बिया, (4) राजेश्वरी आदि।

६. जैसवालों के गोत्र—

(1) वेद-वैराष्टक, (2) अंगरस, (3) राजनायक, (4) श्याम-पांडिया आदि।

इन गोत्रों का विश्लेषण करने पर निम्न निष्कर्ष निकालते हैं—

(1) बहुत से गोत्रों का नामकरण विभिन्न ग्रामों अथवा स्थानों के नाम पर हुआ। जैसे—सलावदिया, सैंगरवासिया, काश्मीरिया, गुवालियर (ग्वालियरे), अकबरपुरिया, अगरैय्या, औरंगाबादी, फिरोजाबादी, खोहवाल आदि।

(2) ऐसा लगता है कि कुछ वर्ग के लोग पहले एक ही गोत्र के अन्तर्गत आते थे। कालान्तर में जब उस गोत्र के लोगों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या में वृद्धि हुई तथा अलग-अलग स्थानों पर चले गये, तब नये गोत्र बन गये। जैसे–नंगे सुरिया, नागे सुरिया तथा सुगे सुरिया। ऐसा लगता है कि ये तीनों गोत्र एक गोत्र सुरिया में से ही निकले हैं। इसी प्रकार जनूथरिया–ईंट की थाप तथा जनूथरिया—कैम की थाप भी एक ही गोत्र जनूथरिया में से निकले हैं, तथा डगिया, सारंग, डगिया मसन्द तथा डगिया रकस भी एक गोत्र डगिया से ही निकले हैं।

इससे एक बात और स्पष्ट होती है—चूंकि एक ही गोत्र में से कई-कई गोत्र बन गये तथा कालान्तर में ये स्वतन्त्र गोत्रों के रूप में स्थापित हो गये; अतः इन नये बने गोत्रों में आपस में शादी-विवाह भी प्रारम्भ हो गये। जैसा आजकल हम शादी–विवाह में गोत्रों को बचाते हैं शायद पहले ऐसा नहीं करते थे। मात्र नाते ही बचाये जाते थे, गोत्र नहीं।

(3) कुछ गोत्रों की स्थापना कुटुम्ब के विशिष्ट लोगों के नाम पर हुई, जैसे—रायसेनिया तथा कुरसौलिया आदि।

(4) कुछ गोत्र जो पहले थे लेकिन अब नहीं हैं। अतः या तो उन गोत्रों के लोग अब नहीं हैं, या फिर उन गोत्रों के परिवारों की संख्या में बहुत कमी आने से वे दूसरे गोत्रों में सम्मिलित हो गये।

(5) कुछ गोत्र बहुत ही नये मालूम पड़ते हैं। मुख्य रूप से कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद क्षेत्र के पल्लीवालों के अकबर-पुरिया, औरंगाबादी, अगरैय्या, तथा फिरोजाबादी गोत्र। अकबर-पुरिया गोत्र की स्थापना निश्चित रूप से अकबर के बाद में हुई जबकि आगरा का नाम बदलकर अकबरपुर हो गया था। इसी प्रकार औरंगाबादी गोत्र की स्थापना औरंगजेब के बाद हुई तथा फिरोजाबादी गोत्र की स्थापना फिरोजशाह के बाद हुई, क्योंकि औरंगजेब तथा फिरोजशाह ने क्रमशः औरंगाबाद तथा फिरोजा-बाद नगर बसाये। कुछ पल्लीवालों ने वहाँ रहना प्रारम्भ कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिया। कालान्तर में वे औरंगाबादी तथा फिरोजाबादी गोत्रों से पहचाने, जाने लगे।

(6) काश्मीरिया गोत्र प्रारम्भ के तीनों घटकों में मिलता है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पल्लीवाल समाज का 'काश्मीर' प्रदेश से भी बहुत सम्बन्ध रहा है। बहुत पहले इस जाति के कुछ लोग काश्मीर रहे थे तथा बाद में वे काश्मीरिया नाम से प्रसिद्ध हो गये।

(7) चार गोत्र यानि कि बारीवाल (वाईवाल), डडूरिया (डरेपुर), धाती (धराईवाल) तथा वैद (बीदर) ऐसे हैं जो कि प्रारम्भ के चारों घटकों में मिलते हैं। निश्चित रूप से ये चारों गोत्र पल्लीवाल समाज के विभिन्न घटकों में बँटने से पूर्व के हैं।

(8) दस गोत्र ऐसे हैं जो प्रारम्भ के तीन घटकों में समान रूप से मिलते हैं।

(9) आगरा, अलवर तथा जगरौठी क्षेत्र के 23 गोत्र ऐसे हैं जो कि मुरैना तथा ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवालों में भी पाये जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि मुरैना तथा ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवालों का आगरा, अलवर तथा जगरौठी क्षेत्र के पल्लीवालों से बहुत समय तक सम्बन्ध रहा, जिसके कारण इन दोनों घटकों के गोत्र समान पाये जाते हैं। कालान्तर में ये दोनों घटक एक-दूसरे से अलग हो गये।

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आगरा, अलवर तथा जगरौठी क्षेत्र के पल्लीवालों का सम्बन्ध कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद के पल्लीवालों की अपेक्षा मुरैना तथा ग्वालियर के पल्लीवालों से अधिक समय तक रहा। प्रारम्भ में उपरोक्त चारों घटक एक ही थे। कालान्तर में ये घटक अलग-अलग हो गये। नागपुर (विदर्भ) क्षेत्र के पल्लीवालों के गोत्रों की संख्या बहुत कम है तथा उनमें से अधिकतर अन्य घटकों के गोत्रों से मेल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं खाते। इसका कारण यह है कि इस घटक की जनसंख्या बहुत कम थी तथा कुछ गोत्रों के लोगों का समुदाय ही जाति की मुख्य धारा से अलग हुआ था। बाद में कुछ गोत्र नये भी बने हैं। साथ ही, यह भी हो सकता है कि उस घटक में जो गोत्र आजकल नहीं हैं, लेकिन पहले थे। बाद में उन गोत्रों के परिवार नहीं रहे।

यहाँ से स्पष्ट है कि सर्वप्रथम कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद के पल्लीवाल जाति की मुख्य धारा से अलग हो गये। उसके बाद मुरैना तथा ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवाल भी जाति की मुख्य धारा से अलग हो गये।

जो गोत्र एक-दूसरे घटकों में नहीं मिलते हैं वे निश्चित रूप से विभिन्न घटकों के अलग होने के बाद बने हैं। जैसे—अकबराबादी, औरंगाबादी तथा फिरोजाबादी। इन गोत्रों से यह भी पता चलता है कि कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद क्षेत्र के कुछ पल्लीवाल अकबर तथा औरंगजेब के शासनकाल में आगरा तथा फिरोजाबाद आदि क्षेत्रों में रहते थे।

गोत्रों के तुलनात्मक अध्ययन को सरल करने के उद्देश्य से चारों घटकों के गोत्रों को एक साथ एक ही तालिका में अलग से दिखाया जा रहा हूं। इस तालिका में मात्र एक ऐसे गोत्र को सम्मिलित नहीं किया गया है जो कि आगरा, अलवर तथा जगरौठी क्षेत्र के पल्लीवालों तथा कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद क्षेत्र के पल्लीवालों में मिलता है, लेकिन मुरैना तथा ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवालों में वह नहीं पाया जाता। यह गोत्र है—'गिदौरिया'। प्रकाशन में सुविधा की दृष्टि से ही ऐसा किया गया है। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि 'गिदौरिया' गोत्र के लोग मुरैना तथा ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवालों में भी थे, लेकिन बाद में इस गोत्र के लोग इस घटक में नहीं रहे, इसी कारण यह गोत्र इस घटक में नहीं मिलता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पल्लीवालों के विभिन्न घटकों के गोत्रों का तुलनात्मक अध्ययन

(तालिका)

आगरा, अलवर तथा जगरौठी के पल्लीवालों के गोत्र	मुरैना तथा ग्वालियर क्षेत्र के पल्लीवालों के गौत्र	कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद क्षेत्र के पल्लीवालों के गोत्र	नागपुर (विदर्भ) क्षेत्र के पल्लीवालों के गोत्र
डडूरिया	डडूरिया	डडूरिया	डरेपूर
वारीवाल	वारीवाल	वारीलखु	वाईवाल
धाती	धनवासी (धाती)	धनकाडिया	धराईवाल
वैद	वैद-भगौरिया	वैदिया	बीदर
काश्मीरिया	काश्मेरिया	काश्मेरिया	
नंगेसुरिया	नगेसुरिया	नगेसुरिया	
वरवासिया	बरवासिया	वरवासिया	
सैंगरवासिया	सैंगरवासिया	सैंगरवासिया	
माईमूड़ा	माईमूड़ा	मवाडिया	
राजौरिया	बंजारे	बजौरिया	
वडेरिया	वडेरिया		
व्यानिया	व्यानिया		
निहानिया	निहानिया		
चौरबम्वार	चौमुण्डा (चौरवम्बार)		
लोहकरेरिया	लोहकरेरिया		
सलावदिया	सलावदिया		
गुदिया	गुदिया		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डगिया सारंग	सारंग डगिया		
खैर	खैर		
लषटकिया	लखटकिया		
खोहवाल	खोहवाल		
गुवालियर	ग्वालियरे		
पचोरिया	पचौरिया		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय—अध्याय

पल्लीवाल जाति के ऐतिहासिक प्रसंग

[३·१] श्री कुन्दकुन्दाचार्य

बहुत समय से यह चर्चा का विषय रहा है कि आचार्य कुन्दकुन्द पल्लीवाल जात्युत्पन्न थे या नहीं ? दिगम्बर सम्प्रदाय में अधिकतर लोगों की धारणा तो यही है कि आचार्य कुन्दकुन्द पल्लीवाल जाति के रत्न थे। इसके प्रमाण में निम्न दो पट्टावलियों (9,10) को देना पर्याप्त होगा।

एक आचार्य पट्टावली नागौर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार से प्राप्त हुई है। इस पट्टावली को सीकर (राजस्थान) से प्रकाशित चामुण्डराय कृत 'चारित्र सार' नामक ग्रन्थ के अन्त में प्रकाशित करवाया गया है। इसमें लिखा है—'श्री मिति पौष कृष्णा 8 विक्रम संवत् 49 (ऊन पचास) और श्री वीर निर्वाण संवत् 519 (पाँच सौ उन्नीस) में पल्लीवाल जैन जात्युत्पन्न श्री कुन्दकुन्दाचार्य हुये। श्री कुन्दकुन्दाचार्य का गृहस्थावस्था काल 11 वर्ष रहा, दीक्षा काल 33 वर्ष, पटस्थकाल 51 वर्ष 10 माह 10 दिन, विरह दिन 51 इस प्रकार से 95 वर्ष 10 माह 15 दिन की सम्पूर्ण आयु थी। श्री कुन्दकुन्दाचार्य के ही निम्नांकित 4 (चार) नाम थे– (1) श्री पद्मनन्दि, (2) श्री वक्रग्रीव, (3) श्री गृद्धिपिच्छ (गृद्धपिच्छ), और (4) श्री इलाचार्य (एलाचार्य)।'

एक अन्य पट्टावली आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी के शिष्य आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज से प्राप्त हुई है। इस पट्टावली को 'आचार्य महावीर कीर्ति स्मृति ग्रंथ' (सम्पादक—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डॉ. नेमेन्द्रचंद जैन) में प्रकाशित कराया गया है। इसमें भी आचार्य श्री कुन्दकुन्द को पल्लीवाल जाति का होना बताया गया है। इस पट्टावलो की प्रामाणिकता के बारे में आचार्य श्री विमल सागर जी का कहना है कि इसे उनके गुरु आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी ने विभिन्न स्थानों के शिलालेखों, ग्रंथ प्रशस्तियों तथा प्राचीन पट्टावलियों के आधार पर बनाया था। उनका यह भी कहना है कि वे इस पट्टावली को ही सही मानते हैं।

इसके विपरीत पं० नाथूराम जी 'प्रेमी' 'परवार जाति के इतिहास पर कुछ प्रकाश' नामक अपने लेख में लिखते हैं कि जिस पट्टावली के आधार पर श्री कुन्दकुन्दाचार्य को पल्लीवाल, उनके गुरु श्री जिनचन्द्र को चौखसे परवार, श्री बज्रनन्दि को गोलापूर्व और श्री लोहाचार्य को लमेचू जात्युत्पन्न माना जाता है, इस पट्टावली की प्रामाणिकता पर संदेह होता है। श्री प्रेमी जी के अनुसार उक्त मान्यता चौदहवीं शताब्दी से पहले की नहीं है। लेकिन जिन पट्टावलियों का हमने उल्लेख किया है वे प्रेमी जी द्वारा वर्णित पट्टावली से भिन्न हैं तथा प्रेमी जी के लेख के बहुत बाद प्रकाश में आई हैं। अतः हमारी राय में ये दोनों पट्टावलिया असंदिग्ध हैं।

श्री कुन्दकुन्दाचार्य के सम्बन्ध में एक अन्य बात जो चर्चा का विषय रही है, वह है उनका जन्म स्थान। कुछ लोगों का मानना है कि आचार्य श्री का जन्म कोटा-बूंदी के निकट बाराह (बारापुर) नामक स्थान पर हुआ था। जबकि अन्य लोगों की धारणा है कि उनका जन्म स्थान तामिल प्रदेश का कुरुमराई नामक स्थान है। वाराह में उनका जन्म स्थान मानने का कारण है—वहाँ पर स्थित श्री कुन्दकुन्द की छत्री तथा 'ज्ञान-प्रबोध' में वर्णित एक दन्तकथा (37) लेकिन इतना प्रमाण ही काफी नहीं है। कारण यह है कि सौरीपुर (वटेश्वर) से प्राप्त एक पट्टावलो में दो अन्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुन्दकुन्द मुनि का वर्णन भी किया है।(12) कुन्दकुन्द नाम के ये मुनि क्रमशः संवत् 1249 तथा संवत् 1385 में हुये हैं। अतः वाराह में स्थित कुन्दकुन्द मुनि की छत्री इनमें से किसी एक की होगी, लेकिन वह छत्री आचार्य कुन्दकुन्द की नहीं हो सकती है।

आचार्य कुन्दकुन्द का जन्म तामिल प्रदेश में हुआ, इसके पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। आचार्य कुन्दकुन्द ने पल्लव वंशी राजा शिवस्कन्द को सम्बोधनार्थ उपदेश दिया। पल्लव वंशी राजाओं का राज्य तामिल प्रदेश में ही था। तामिल भाषा के महान् काव्य 'कुरल' की रचना भी आचार्य कुन्दकुन्द ने ही की।

आचार्य कुंदकुंद की साधना स्थली भी दक्षिण का तामिल प्रदेश ही रही। आज भी वहाँ आचार्य श्री के नाम का एक प्रसिद्ध पर्वत है। दक्षिण में सीमेश्वर से ओगम्वी, वहाँ से हुम्बज जाने वाले मार्ग पर शिगोमा से 10 कि.मी. पर गुड्डकेरि है। वहाँ से 10 कि.मी. दूर जंगल में कुंदकुंद वेट्ट (कुंदकुंद पर्वत) है। उसकी चढ़ाई 4 कि.मी. है। इस रमणीक पर्वत पर एक मन्दिर है। उसमें एक ओर आचार्य कुंदकुंद स्वामी के चरण हैं तथा पास में ही उनका विराजमान स्थल है जहाँ उन्होंने ग्रंथों की रचना की थी।[11] अतः इन सब प्रमाणों के आधार पर यह निश्चित कहा जा सकता है कि आचार्य कुंदकुंद का सम्बन्ध तामिल प्रदेश से ही विशेष रहा तथा वहीं उनका जन्म भी हुआ था।

प्रो. चक्रवर्ती ने 'पंचास्तिकाय' ग्रंथ की अपनी प्रस्तावना में श्री कुन्दकुन्दाचार्य के सम्बन्ध में एक कथा का उल्लेख किया है।(36) वे कहते हैं कि 'पुण्याश्रव कथा' ग्रंथ में शास्त्रदान के रूप में यह कथा दी गयी है। उनके द्वारा उल्लिखित 'पुण्याश्रव कथा' ग्रंथ कौन सा है, कुछ निश्चित नहीं किया जा सका है। यथासम्भव यह ग्रंथ तामिल भाषा का होना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान श्री 108 श्री कुन्द कुन्दाचाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही जुड़ी नहीं रही है। जाति के विघटन से पूर्व सभी पल्लीवाल व्यापार करते थे। इसी कारण पल्लीवालों ने उस समय के प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्रों को ही अपना निवास स्थान बनाया। प्राचीन समय में जल मार्ग (नदी) द्वारा बहुत यातायात होता था। चन्द्रवाड़ भी यमुना नदी के तट पर स्थित है तथा उस समय यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। कुछ पल्लीवाल कन्नौज में रहते थे तथा वे भी व्यापार में संलग्न थे।

जाति के विघटन के पश्चात कुछ पल्लीवाल पट्टन या पाटन (गुजरात) चले गये। पाटन भी एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। दूसरी ओर कुछ पल्लीवाल चन्द्रवाड़ से कुछ दूर यमुना नदी के तट पर पर ही स्थित कचौड़ाघाट चले गये। कचौड़ाघाट भी व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था तथा यहाँ पर नील बनाने तथा कपड़ों की रंगाई का मुख्य कार्य था। इस प्रकार अधिकतर पल्लीवाल बड़े-बड़े व्यापारिक केन्द्रों से जुड़े रहे तथा व्यापार इनका मुख्य व्यवसाय बना रहा। कुछ पल्लीवाल व्यापार के साथ-साथ खेती-बाड़ी से भी सम्बन्धित थे, उनमें से कई बड़े जमींदार थे। कुछ पल्लीवाल राज्यों के पदाधिकारी भी रहे।

अठारहवीं शताब्दी में गुजरात के अधिकतर पल्लीवाल पुनः पूर्वी राजस्थान की ओर आ गये। तब इन्होंने खेती को अपना मुख्य व्यवसाय बनाया। इसके साथ ही कुछ पल्लीवाल बहुत प्रसिद्ध व्यापारी भी थे तथा रूई और कपास का बड़े पैमाने पर व्यापार करते थे।

जो लोग व्यापार के उद्देश्य से गुजरात छोड़कर विदर्भ क्षेत्र में चले गये। उन्होंने भी बाद में खेती को अपना मुख्य व्यवसाय बना लिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकिन ग्राज स्थिति बहुत परिवर्तित है। समाज के ग्रधिकतर लोग न तो खेती करते हैं ग्रौर न ही व्यापार। सामान्यत: इस जाति के लोग सरकारी तथा गैर-सरकारी सेवाग्रों में संलग्न हैं। फिर भी जगरौठी तथा मुरैना क्षेत्र के कुछ पल्लीवाल ग्रब भी खेती करते हैं तथा कुछ व्यापार में संलग्न हैं। कन्नौज में रहने वाले ग्रधिकतर पल्लीवाल व्यापार करते हैं।

पल्लीवाल लोगों की ग्रार्थिक स्थिति समान्यत: ठीक ही रही है। ग्रार्थिक स्थिति कभी खराब रही हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक पल्लीवालों की ग्रार्थिक स्थिति बहुत ग्रच्छी रही थी। ग्रठारहवीं शताब्दी से ग्रागे भी ग्रार्थिक स्थिति ठीक रही है। वर्तमान में इस जाति के लोग सामान्यत: मध्यमवर्गी हैं।

समय-समय पर समाज के लोगों का राजनैतिक क्षेत्रों में भी प्रभाव रहा है। ग्यारहवीं शताब्दी में चन्द्रवाड़ का शासक चन्द्रपाल था। सोलहवीं शताब्दी तक चन्द्रवाड़ की राज्य-व्यवस्था में पल्लीवालों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। ग्रठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में इस जाति का पूर्वी राजस्थान की राजनीति में बहुत हिस्सा रहा। यहाँ के विभिन्न राज्यों में कई पल्लीवाल दीवान तथा प्रधानमन्त्री पद पर ग्रासीन थे। देश के स्वतंत्रता-ग्रांदोलन में भी इस जाति के लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

(4.5) धार्मिक क्षेत्र में पल्लीवाल—

विभिन्न परिस्थितियों में भी जाति के लोगों ने धर्म से ग्रपना नाता कभी नहीं तोड़ा। हमेशा ही यह जाति जैन धर्मानुयायी रही है। विभिन्न व्यक्तियों ने समय-समय पर कई जैन मूर्तियों की प्रतिष्ठाएँ कराईं तथा मन्दिरों के निर्माण कराये। सबसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधिक गौरव की बात यह है कि जाति में बहुत से ऐसे महानुभाव भी हुए हैं जिन्होंने जैन साहित्य को सुदृढ़ किया तथा जैन धर्म का प्रचार किया। इन व्यक्तियों ने बहुत से धार्मिक ग्रन्थों की रचना की। कवि धनपाल, पं. दौलतराम, कविवर मनरंगलाल तथा वर्तमान में पं. मक्खनलाल जी आदि विद्वान इसी जाति के रत्न थे। लेकिन जाति में आज पहले जैसी धार्मिक भावना प्रतीत नहीं होती है, यह एक चिन्ता का विषय है।

प्राचीनतम् शिलालेख तथा मूर्तिलेख बताते हैं कि प्रारम्भ में पल्लीवाल जाति दिगम्बर आम्नाय को मानती थी। दिगम्बर आचार्य कुन्द-कुन्द पल्लीपाल जात्युत्पन्न थे। चन्द्रवाड़ का राजा चन्द्रपाल भी पल्लीवाल दिगम्बर जैन था। उसने वि. सं. 1052 में कई मूर्तियों की प्रतिष्ठा भी कराई। ऐसी कई मूर्तियाँ फिरोजाबाद के दिगम्बर जैन मन्दिर में विराजमान हैं।

कालान्तर में कुछ पल्लीवालों को इटावा अंचल छोड़कर गुजरात जाना पड़ा। जो पल्लीवाल कन्नौज में ही रहे, वे हमेशा ही दिगम्बर धर्मानुयायी रहे। आज भी दिगम्वर धर्मानुयायी ही हैं। जो पल्लीवाल गुजरात चले गए वे भी बारहवीं शताब्दी पर्यन्त दिगम्बर धर्मानुयायी ही रहे। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कुछ लोगों ने श्वेताम्बर धर्म अपना लिया। 'पल्लीवाल जैन इतिहास' की भूमिका में एक लेख का वर्णन है, जिसमें वि.सं.1207 में 'पल्ली-भंग' के समय त्रुटित पुस्तक को ग्रहण करने की बात कही गई है। यहाँ पल्ली-भंग से यह भाव निकलता है कि इस समय से ही पल्लीवाल दो अलग-अलग आम्नायों को मानने लगे। वैसे गुजरात में स्थित अधिकतर पल्लीवाल दिगम्वर धर्मानुयायी हो रहे। अणिहल्लपुर (गुजरात) निवासी कवि धनपाल पल्लीवाल, जिन्होंने वि. सं. 1261 में 'तिलक मंजरी सारः' की रचना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की, दिगम्बर धर्मानुयायी था। भगवान पार्श्वनाथ की एक मूर्ति सूरत के पास महुआ के दिगम्बर मन्दिर में विराजमान है। इसकी प्रतिष्ठा वि. सं. 1390 में एक पल्लीवाल बन्धु ने ही कराई। इससे सिद्ध होता है कि गुजरात के वहुत से पल्लीवाल दिगम्बर धर्मानुयायी ही रहे। सोलहवीं शताब्दी में गुजरात के कुछ पल्लीवाल उज्जेन तथा पद्मावती नगर होते हुए विदर्भ क्षेत्र में चले गए तथा वहीं बस गये। वे उस समय भी दिगम्बर धर्मानुयायी थे तथा आज भी हैं।

कुछ लोगों का मत है कि पल्लीवाल जाति प्रारम्भ में श्वेताम्बर मूर्ति पूजक थी तथा बाद में इस जाति के कुछ लोग दिगम्बर धर्म को मानने लगे। लेकिन यह बात सही नहीं है। पल्लीवाल जाति से संबंधित प्रचीनतम लेख जो कि पल्लीवाल जाति का दिगम्बर आम्नायी होना सिद्ध करते हैं क्रमश:, वि. सं. 1053, वि. सं. 1261, वि. सं. 1390, आदि उपलब्ध हैं। प्राचीनतम् लेख जो पल्लीवाल जाति का श्वेताबर मूर्ति पूजक होना सिद्ध करते हैं, वे क्रमश: वि. सं. 1287, वि. सं. 1298, वि. सं. 1303 आदि के हैं। कुछ लोग पल्लकीय गच्छ को पल्लीवाल जाति से संबंधित मानते हैं। ऐसे प्राचीनतम् लेख जिनमें पल्लकीय गच्छ का उल्लेख आता है, क्रमश: वि. सं. 1144, वि. सं. 1151 तथा वि. सं. 1201 के ही उपलब्ध हैं।

कन्नौज क्षेत्र के पल्लीवाल जो कि मूल पल्लीवालों में से हैं, पहले भी दिगम्बर धर्मानुयायी थे तथा आज भी हैं। उनमें से कभी किसी ने श्वेताम्बर धर्म नहीं अपनाया। इन सब बातों से हम निश्चत पूर्वक कह सकते हैं कि पल्लीवाल लोग मूलत: दिगम्बर धर्मानुयायी ही थे। लेकिन तेरहवीं शताब्दी के अन्त में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजरात खण्ड में रहने वाले कुछ पल्लीवाल श्वेताम्बर मूर्ति पूजक हो गये। आज कल ये लोग जगरौठी क्षेत्र (यानि कि भरतपुर, खेड़ली गंज, हिन्डौन, सवाई माधोपुर आदि) में रहते हैं। पल्लीवाल जाति में श्वेताम्बर मूर्ति पूजकों के अतिरिक्त स्थानक वासी लोग भी पाये जाते हैं। यथासंभव लगभग 200 वर्ष पहले श्वेताम्बर मूर्ति पूजक लोगों में से ही कुछ लोग स्थानक वासी आम्नाय को मानने लगे।

आज भी जैन धर्म की विभिन्न आम्नायों को मानने वाले लोग इस जाति में हैं, लेकिन सामाजिक एकता में अलग-अलग आम्नायों को मानना बाधक नहीं है तथा एक दूसरे में शादी-विवाह होते हैं।

आज से 70-80 वर्ष पहले कुछ पल्लीवाल 'आर्य-समाज' धर्म को मानने लगे थे, लेकिन पिछले 40 वर्षों से इस जाति में कोई भी आर्य समाजी नहीं है।

(4-6) पल्लीवालों द्वारा निर्मित जैन मन्दिर :—

पल्लीवालों द्वारा निर्मित बहुत से जैन मन्दिर स्थित हैं। उनमें दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों ही आम्नाओं के मन्दिर सम्मिलित हैं। कन्नौज में दो दिगम्बर जैन मन्दिर हैं, उनमें से एक 500-600 वर्ष प्राचीन है। कहते हैं कि यह मन्दिर महोबा (उ. प्र.) के सुप्रसिद्ध वीर योद्धा आल्हा तथा ऊदल के पिता के समय का है। अलीगढ़ में भी तीन दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। फिरोजाबाद में चार दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। फिरोजाबाद के जैन नगर में स्थित दि० जैन मन्दिर अति विशाल है, उसमें स्थित एक मूर्ति 45 फुट अवगाहना वाली भगवान बाहुबली की मूर्ति है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस मन्दिर का निर्माण सेठ छदामीलाल जी पल्लीवाल ने कराया था।

फिरोजाबाद से चार कि. मी. दूर चन्द्रवाड़ में एक अति प्राचीन दि० जैन मन्दिर था, लेकिन यमुना नदी की बाढ़ में डह गया। इसके स्थान पर नया मन्दिर बन गया है। कचौड़ाघाट में भी एक प्राचीन दि० जैन मन्दिर था। अब मात्र भग्नावशेष ही हैं। मन्दिर की मूर्तियाँ वहीं के लबेंचू दि० जैन मन्दिर में विराजमान कर दी गई हैं।

आगरा तथा इसके आस-पास के क्षेत्र में 200-250 वर्ष पुराने कई दि० जैन मन्दिर हैं जिन्हें पल्लीवालों ने बनवाया। कठवारी, मिठाकुर, मांगरौल, रूनकता तथा सिकन्दरा आदि ग्रामों में ये मन्दिर आज भी स्थित हैं। किरावली तथा रायमा ग्रामों में भी दि० जैन मन्दिर हैं, लेकिन इनको पल्लीवाल जाति सहित अन्य जैन जातियों के लोगों ने मिलकर बनवाया था। आजकल इन गाँवों में पल्लीवालों के अतिरिक्त अन्य जैन जातियों का अभाव होने से इनकी देख-रेख पल्लीवालों के हाथों में ही है। आगरा के धूलियागंज मौहल्ले में एक दि० जैन मन्दिर है, यह सन् 1839 ई० से पहले का बना है। आगरा में दो अन्य दि० जैन मन्दिर हैं जिनका निर्माण पल्लीवाल बन्धुओं द्वारा कराया गया है, लेकिन ये मन्दिर नये हैं।

हिन्डौन के पास झारेड़ा नामक ग्राम में भी एक दिगम्बर जैन मन्दिर था। इस मन्दिर की प्रतिमा आजकल केसरगंज, अजमेर के दि० जैन मन्दिर में विराजमान है। जगरौठी क्षेत्र के समौची, खेड़ली तथा समराया ग्रामों में भी पल्लीवालों के दि० जैन मन्दिर थे, लेकिन 6-7 वर्ष पहले इन मन्दिरों को श्वेताम्बर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंदिरों में परिवर्तित करा दिया गया है। अन्य कई स्थानों पर भी पल्लीवालों के दिगम्बर मन्दिर थे लेकिन आजकल श्वेताम्बर मंदिरों में परिवर्तित करा दिये गये हैं।

अलवर नगर में पल्लीवालों का एक दिगम्बर मंदिर है। अलवर जिले के हरसाना, रामगढ़, लक्ष्मनगढ़, नौगावाँ तथा समौची में भी दिगम्बर जैन मंदिर हैं। नौगावाँ का मन्दिर 400-500 वर्ष पुराना है। मण्डावर में भी एक दिगम्बर जैन मंदिर है। अजमेर में एक दि० जैन मंदिर है जिसका निर्माण कुछ वर्ष पूर्व ही हुआ है।

मुरैना क्षेत्र में पल्लीवालों द्वारा निर्मित कई जैन मंदिर हैं, ये सभी दिगम्बरी हैं। मुरैना के अतिरिक्त वामौर, रेंहट तथा मोहना में भी दि० मंदिर हैं। मुरैना से 24 कि.मी. दूर जौरा नामक ग्राम में भी पल्लीवालों का एक दि० जैन मंदिर है। जौरा से 8 कि.मी. दूर घने जंगलों में अत्यधिक प्राचीन दि० जैन मूर्तियाँ हैं जिनकी देखभाल बहुत समय से पल्लीवालों द्वारा की जाती रही है। जौरा से ही 6 कि.मी. परसौटा नामक ग्राम में पल्लीवालों का एक प्राचीन दि० जैन चैत्यालय है जिसमें प्राचीन मूर्तियाँ विराजमान हैं। परसौटा ग्राम में ही पल्लीवाल समाज के अधिष्ठाता की गद्दी है। इसके अन्तिम अधिष्ठाता श्री 108 भट्टारक करन सागर जी महाराज थे जिनका कुछ वर्ष पूर्व देहांत हो गया। घर में कुछ भी शुभ कार्य होने पर पल्लीवाल लोग यहाँ दान देने। चढ़ावा चढ़ाने जाते हैं।

नागपुर (महराष्ट्र) में पल्लीवालों के तीन दिगम्बर जैन मंदिर हैं। इनमें से एक मंदिर दो सौ वर्षों से भी अधिक पुराना है लेकिन इसकी मूर्तियाँ 500-6C0 वर्ष प्राचीन हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगरौठी क्षेत्र के पींगोरा, सिर्संका खेड़ली, पटोंदा, उगैर आदि गाँवों में आज श्वेताम्बर मंदिर हैं। भरतपुर तथा डीग में भी श्वेताम्बर मंदिर हैं। जगरौठी क्षेत्र के हिन्डौन, करौली, गंगापुर सिटी, शेरपुरा, शेखपुरा आदि स्थानों पर भी श्वेताम्वर मंदिर हैं।

पल्लीवालों द्वारा निर्मित कई स्थानक भी हैं तथा ये भरतपुर तथा हिण्डौन में स्थित हैं। एक स्थानक आगरा में भी था, लेकिन आजकल वहाँ नहीं है।

विभिन्न मूर्ति-लेखों से प्रतीत होता है कि पुराने समय में गुजरात में भी पल्लीवालों द्वारा निर्मित श्वेताम्बर तथा दिगम्बर दोनों ही अम्नायों के मन्दिर होने चाहिएँ, लेकिन आज इनका कोई अस्तित्व दिखाई नहीं देता है। ये मन्दिर गुजरात के पाटन, मेहसाना, अहमदाबाद, काठियावाड़, भरूच तथा सूरत आदि नगरों में होने चाहिएँ।

(4.7) धूलिया गंज, आगरा स्थित दिगम्बर जैन मंदिर तथा आध्यात्मिक शैली :—

आगरा में पल्लीवालों का आगमन लगभग दो सौ वर्ष पहले से ही प्रारम्भ हो गया था। ये पल्लीवाल आगरा के धूलिया गंज नामक स्थान में रहते थे। प्रारम्भ में ही इनको धर्म-ध्यान में विशेष रूचि थी। उस समय धूलिया गंज में मंदिर नहीं था। अतः सभी पल्लीवाल बेलनगंज (आगरा) के दि० जैन मंदिर में दर्शन तथा पूजन करने जाते थे। धूलिया गंज तथा बेलनगंज की जैन समाज सामूहिक रूप से पूजा-प्रक्षाल आदि करती थी। कहते हैं कि एक बार कुछ पल्लीवाल बन्धुओं को मन्दिर पहुँचने में देर हो गई, अतः बेलन गंज के गैर-पल्लीवाल जैन बन्धुओं ने पूजा-पाठ प्रारम्भ कर दिया। देर से पहुँचे पल्ली-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[३·७] महत्वपूर्ण लेख तथा मूर्तिलेख—

(1) 'सूरत अने सूरत जिल्ला जैन मन्दिरोनों मूर्ति लेख संग्रह' लेखक, संग्रहकर्त्ता अने प्रकाशक—श्री मूलचन्द कसनदास कापड़िया (सूरत) (गुजराती भाषा में) में प्रकाशित।
'महुवा (सूरत) के श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र की एक प्रतिमा का आलेख—

वेदी नं० ३

(39) मूलनायक सफेद पाषाण रिषभदेव, ऊँचाई 18 इंच, आजू-बाजू पार्श्वनाथ, अनो वे (दो) कायोत्सर्ग प्रतिमा पडोणाई 16 इन्च दे।

लेख– 'सं. 1390 वर्ष माघ सुदी 10 दशम शनीचर पल्लीवाल ज्ञातीय मूकी भार्य्या भाऊं तत् सुत श्री कुरसी भार्या.........।' (आगे लेख पढ़ने में नहीं आता है।)

(2) 'भट्टारक-सम्प्रदाय' (लेखक—श्री वी. पी. जोहरापुरकर, नागपुर में प्रकाशित।

(क) पृष्ठ · १७२

लेखांक—438, ? मूर्ति

'संवत् 1505 वर्षे श्री मूल संघे पद्मनंदि देवा-शिष्य देवेंद्र कीर्ति तत्शिष्या: विद्यानंदि शिष्य ब्रह्म धर्मपाल उपदेशात् पल्लीवाल ज्ञातीय सं. राना भार्या रानी सुत पारिसा भार्या हर्ष प्रणमंति ।।'

(सिंदी, 'अनेकान्त' वर्ष 4, पृष्ठ 502)

(ख) सेन गण मन्दिर, नागपुर से प्राप्त मूर्ति लेख—

पृष्ठ—११

लेखांक—28, अरहंत मूर्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सके 1424 मूल संघे सेनगणे भ. माणिक सेन उपदेशात् गुजर पल्लीवाल ज्ञाति ....संघवी नेमा ॥'

पार्श्व प्रभु (बड़ा) मन्दिर, नागपुर से प्राप्त मूर्ति लेख—

(ग) पृष्ठ—५६

लेखांक—136, चौबीस मूर्ति

'शके 1607 प्रभाव नाम संवत्सरे फाल्गुन वदि 10 भ. धर्मचन्द्र उपदेशात्........ ....नगरे ज्ञातो उज्वेली पल्लीवार गोदसा भार्या सेमाई..........प्रणमंति ॥'

(घ) पृष्ठ—४८

लेखांक—213, चौवीस मूर्ति

'शक 1626 तारण नाम संवत्सरे माहो सुद 13 शुक्रे मूलसंघे भ. पद्मकीर्ति तत्पटे भ. विद्याभूषण तत्पटे भ. हेमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनी पल्लीवाल ज्ञातीय सिंगवो लखम प्रसाद जी भार्या गोमाई.............. प्रतिष्ठित भीषी नगरे चन्द्रनाथ चैत्यालये........ ....॥'

(ङ) पृष्ठ—८३

लेखांक—207, सम्यग्दर्शन यंत्र

'शके 1601 फाल्गुन सुदी 11 श्री मूलसंघे बालात्कार गणे भ. श्री पद्मकीर्ति सदुपदेशात् श्री पद्मावती पल्लीवाल ज्ञातौ उडनाव कुस्तानी पानसी भार्या मगनाई .... ॥'

(३) अनेकान्त, वर्ष १८ पृष्ठ १५३ में प्रकाशित मूर्ति लेख—

विदर्भ क्षेत्र के भातकुली नामक स्थान पर स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर की भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर लेख—

'संवत् 1515 मूलसंघे सेनगणे भ० माणिक सेन पट्टे भ० नेमसेन उपदेशात् गुजर पल्लीवाल सावसेटी................।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'धर्मरत्न', वर्ष 1 अंक 12 (सन् 1937) में कई शिलालेखों/मूर्तिलेखों का वर्णन है। इनका संकलन मुनि श्री दर्शन विजय जी महाराज ने किया था। पल्लीवाल बन्धुओं द्वारा स्थापित मूर्तियों के लेख निम्न प्रकार हैं—

(1) श्री गिरनार तीर्थ में जिनेन्द्र-प्रतिमा पर शिलालेख है—
'॥60॥ संवत् 1356 वर्षे ज्येष्ठ शुदि 15 शुक्रे श्री पल्लीवाल ज्ञातीय श्रेष्ठी पासु सुत साहु पद्म भार्या तेजला······· तेन कुलगुरु श्री स्मनिमुनि आदेशन श्री मुनिसुव्रत स्वामी देवकुलिकां पितामह श्रेयो·······'

(लि० ओ० रि० इ० वॉ० प्रे० पृ० 363, J—57)

(2) पाटण (गुजरात) में कनासा पाढ़ा के जिनालय में भगवान श्री शान्तिनाथ जी के गर्भगृह की जिन प्रतिमा का शिलालेख है—

'संवत् 1371 वर्षे आसाढ़ शुदि 8 रवौ श्री पल्लीवाल ज्ञातीय उ० ···········श्री आदिनाथ बिंव का० प्र०।'

(B. 328)

(3) पालीताना (काठियावाड़) में गोडी जी पार्श्वनाथ के मन्दिर जी की जिन-प्रतिमा पर शिलालेख—
'संवत् 1383 वैसाख वदी 7 सोमे पल्लीवाल पद्म भा० कील्हण देवि श्रेयसे सुत कीकमेन श्री महावीर वि० कारित प्रति०।' (N. 657)

(4) आगरा में पंचतीर्थी प्रतिमा का शिलालेख—(अर्थ)

'वि०सं० 1396 में पल्लीवाल भीम के पुत्र सेल और तेज ने भ० शान्तिनाथ जी की प्रतिमा बनवाई जिसकी राजगच्छीय आ० हंसराज सूरिजी ने प्रतिष्ठा की।'

(A—18)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(5) शहर महेसाणा (गुजरात) में जिन मन्दिर की धातु मूर्ति का शिलालेख—

'संवत् 1396 माघ शु० 10 शनौ पल्लीवाल ज्ञातीय ठ० हाडा भा० नायकि सुतश्रेयसे श्री महावीर बिंब कारितं प्र. श्री धर्मघोष गच्छे श्री मानतुंग सूरि शिष्यैः श्री हंसराज सूरिभिः।' (D नं० 65)

(6) घोघातीर्थ (काठियावाड़) में जीरावला पार्श्वनाथ के मन्दिर जी की धातु मूर्ति का शिलालेख—

'सं० 1510 वर्षे फागुण वदि 3 शुक्रे पल्लीवाल ज्ञातीय सं० मं० मंडलिक भार्या शाणी पुत्र लालाकेन भार्या रंगो मुख्य कुटुम्ब युतेन श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेसर सूरीणामुपदेशेन श्री चन्द्रप्रभ बिंबं कारितं।'

(D नं० 261)

(7) श्री नाकोड़ा तीर्थ (वीरमपुर) में शिलालेख—

।। दं० ।। अषाढ़ादि संवत् 1681 वर्षे चैत्र बदि 3 सोमवारे हस्तनक्षत्रे विरमपुरे राउल श्री जगमाल विजय राज्ये श्री पल्लीवाल गच्छे भट्टारक श्री यशोदेव सूरिजी विजयमाने श्री पार्श्वनाथ जी चैत्ये श्री पल्लीवाल संघेन गवाक्षत्रय सहिता सुशोभना निर्गम चतुष्किका कारापिता उपाध्याय श्री हरशेखराणां पट्ट प्रभाकरोपाध्याय श्री कनकशेखर तत्पट्टालंकारोपाध्याय श्री देवशेखरैः स्वर्गतैः उपाध्याय कनक शेखर हस्त दीक्षितेन उपाध्याय श्री सुमति शेखरेण स्वहस्तेन लिखितं ।। श्रीः श्रेयोस्तु श्री श्रावक संघस्य शुभं भवतु। सूत्रधार हेमा पुत्र...............।'

(J. नं० 419)

इन शिलालेखों के अतिरिक्त कुछ और शिलालेख भी हैं। उनका सम्बन्ध पल्लीवाल जाति से न होकर अन्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जातियों से रहा है। इन लेखों में भी अन्य जाति के नामोल्लेख के साथ पल्ली गच्छ या पल्लकीय गच्छ या पल्लीवाल गच्छ का नाम भो आता है।

श्री दौलतसिंह जी लोढ़ा कृत 'पल्लीवाल जैन इतिहास' में भी पल्लीवाल श्रेष्ठि वन्धुओं द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का परिचय दिया गया है, वह निम्नवत् हैं—

(1) **श्री शत्रुञ्जय तीर्थ**—वि०सं० 1383 वैसाख कृष्णा 7 सोमवार को पल्लीवाल ज्ञातीय पदम की पत्नी कील्हण देवी के श्रेयार्थ पुत्र कीका द्वारा कारित श्री महावीर प्रतिमा श्री गौड़ी पार्श्वजिनालय में विराजमान है।

(जैसलमेर नाहर लेखांक 657)

(2) **प्रभास पत्तन**--वि. सं. 1339 वैशाख शु० (2) शनिश्चर को पल्लीवाल ज्ञातीय ठ० आसाढ़ ठ० आसापल द्वारा पत्नी जाल्ह (ण) के श्रेयार्थ एक जिन प्रतिमा श्री बावन जिनालय की चरण चौकी में विराजमान है।

(जैसलमेर नाहर लेखांक—1791)

इसी बावन जिनालय की चरण चौकी में द्वितीय प्रतिमा श्री पार्श्व नाथ की वि. सं. 1340 ज्येष्ठ कृष्णा 10 शुक्रवार को प्रतिष्ठित, जिसको पल्लीवाल बीरबल के भ्राता पूर्णसिंह ने पत्नी वय जलदेवी पुत्र कुमरसिंह, कैलि (कालूसिंह) भा० ठ० स्वकल्याणार्थ करवाई, विराजमान है।

(जैसलमेर नाहर लेखांक—1792)

(3) **शीयालकोट (काठियावाड़)**—वि. सं. 1300 वैशाख कृ० 11 बुद्धवार को श्री सहजिगपुरवासी पल्लीवाल व्यवहारी देदा पत्नी कडूदेवी के पुत्र परी० महीपाल, महीचन्द्र के पुत्र रतनपाल विजयपाल द्वारा व्य०शंकर पत्नी लक्ष्मी के पुत्र संघपति मूधिग देव के स्वपरिवार सहित देवकुलका युक्त श्रीमल्लिनाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिम्ब कारितं एवं चन्द्र गच्छीय श्री हरिप्रभसूरि शिष्य श्री यशोभद्र सूरि द्वारा प्रतिष्ठित जैन मंदिर में विराजमान हैं।

(जैसलमेर नाहर लेखांक—1178)

(4) अहमदाबाद—वि. सं. 1327 फा. शु. 8 को चौमुखा जिनालय में पल्लीवाल कुमरसिंह भार्या कुमरदेवी के पुत्र सामन्त पत्नी श्रृंगार देवी के श्रेयार्थ उनके पुत्र ठ० विक्रमसिंह, ठ० लूण, ठ० सांगा के द्वारा कारित एवं बडगच्छीय श्री चन्द्रसूरि शिष्य श्री माणिक्य सूरि द्वारा प्रतिष्ठित एक मोटी धातु पंचतीर्थी विराजमान हैं।

(जै० धा० प्र० ले० 137)

(5) हरसूली–वि.सं. 1445 फा० कृ० 10 रविवार की श्री हारीजग० पल्ली० श्रेष्ठि भूभा भार्या पाल्हणदेवी पूजू के पुत्र कन्नू, हापा द्वारा स्वमाता–पिता के श्रेयार्थ कारित एवं श्री शीलभद्र सूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्रीमहावीर धातु प्रतिमा पंचतीर्थी श्री पार्श्वनाथ जिनालय में विराजमान है।

[प्रतिष्ठ लेख संग्रह (विनय सागर जी) ले० 170]

(6) लाडोल–वि.सं. 1326 चैत्र कृ०12शुक्रवार को पल्ली० श्रेष्ठि धनपाल द्वारा कारित एवं चित्रावाल गच्छीय श्री शालिभद्र सूरि शिष्य श्री धर्मचन्द सूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री शान्तिनाथ एवं श्री अजितनाथ धातु प्रतिमा एक जिनालय में विराजमान हैं।

(जै० प्र० लि० सं० भा० 10 ले० 462)

(7) राधनपुर—वि. सं. 1355 वैशाख कृष्ण × की श्री हारीज गच्छीय पल्ली०श्र० जदूता के श्रेयार्थ उनके पुत्र द्वारा कारित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं श्री सूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री चन्द्रप्रभ धातु बिम्ब एक जिनालय मेंविराजमान है।

(जै० प्र० लि० सं० भा० 10 ले० 463)

(8) बड़ौदा – वि. सं. 1335 चैत्र कृ० 5 की पल्ली० पद्मल, पद्मा द्वारा श्रे० सहजमल माता-पिता के श्रेयार्थ कारित एवं श्री विजयसेन सूरि के राज्यकाल में श्री उदयप्रभसूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री आदिनाथ धातु प्रतिमा दादा श्री पार्श्वनाथ मन्दिर, नरसिंह जी की पोल में विराजमान है।

(प्राचीन जैन लेख संग्रह (जिन० वि०) लेखांक —57 (गिरनार प्रशास्ति 5)]

(9) खम्भात—वि. सं. 1408, बैसाख शु० 5 गुरुवार की पल्ली० श्रेष्ठि समेत द्वारा पिता खेता, माता आल्हू के श्रेयार्थं कारित एवं श्री चैत्र गच्छीय श्री पद्मदेवसूरि पट्टालंकार श्री मानदेव सूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री शान्तिनाथ धातु बिम्ब कुम्भार पाड़ा के श्री शीतलनाथ जिनालय में विराजमान है।

(जै० ध० प्र० ले० सं० भाग 2 लेखांक—228)

(10) खम्भात—वि. सं. 1343 माघ शु० 12 पल्ली० सं० हरिचन्द के पुत्र सं० तेजपाल द्वारा माता पाल्हणदेवी के श्रेयार्थ कारित एवं प्रतिष्ठित श्री रत्नमय पार्श्वनाथ धातु बिम्ब विराजमान हैं।

(जै० ध० प्र० ले० सं० भाग 2 लेखांक 550)

(11) नासिक्यपुर—पल्ली० शाह ईसर के पुत्र माणिक पत्नी श्री. नाऊ के पुत्र शाह कुमारसिंह ने श्री चन्द्रप्रभ जिनालय की जीर्णोद्धार करवाया था।

(गै०ध०प्र०ले०सं० भा० 2 वैशाक 655)

(12) अर्बुदतीर्थ - वि.सं 1302 ज्येष्ठ शु 9 शुक्रवार की पल्ली० भा० धणदेव पत्नी भा० धणदेवी के पुत्र भा० वागड़ पत्नी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वारा कारित एवं प्रतिष्ठित प्रतिमा श्री नेमनाथ जिनालय के श्री शान्तिनाथ मन्दिर (कुलिका) में विराजमान हैं।

—(अर्बुद प्रा० जै० सं० लेखांक—492)

(13) **बीकानेर**—वि. सं. 1373 वैशाख शु० 7 सोमवार की पल्ली० से० पासदत्त द्वारा से० नरदेव के श्रेयार्थ कारित एवं चंत्र गच्छीय श्री पद्मसूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री शांतिनाथ प्रतिमा श्री चिन्तामणि (चड़बीसरा) जिनालय में विराजमान हैं।

इसी नगर के श्री महावीर मंदिर में वि सं. 1390 वैशाख कृ० 11 पल्ली० श्रे० ठ० मेघा द्वारा पिता अभयसिंह माता लक्ष्मी के श्रेयार्थ कारित अम्बिका मूर्ति विराजमान है।

(बीकानेर जै० ले० संग्रह, लेखांक 1539)

(14) **बूंदी**–वि. सं. 1531 माघ शु० 5 शुक्रवार की पल्ली० शाह राजपुत्र धर्मसी के पुत्र प्रियंवर द्वारा कारित एवं वृहद् गच्छीय श्री शान्तिभद्र सूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री विमलनाथ पंचतीर्थी श्री पार्श्वनाथ मन्दिर में विराजमान हैं।

[प्रतिष्ठा लेख संग्रह (विजयसागर जी)
प्र० भा० ले० 738)]

(15) **हिन्डौन**—वि सं. 1793 बैसाख शु० 3 शनिश्चर की नगरवासी के पल्ली० नौलाठिया गोत्रीय श्री लक्ष्मीदास पत्नी धौकनी के पुत्र शाह देवीदास द्वारा कारित एवं विजयगच्छीय श्री तिलकसागर प्रतिष्ठित श्री ऋषभदेव प्रतिमा जिसकी प्रतिष्ठा हिन्डौन में ही हुई थी। यह लेख श्री मन्दिर जी के दरवाजे पर है।

उक्त शाह देवीदास ने उक्त गच्छीय आचार्य से वि. संवत् 1796 फा०शु०7 शुक्रवार को श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करवाई थी। यह प्रतिमा भी उक्त मन्दिर में विराजमान है।

(16) भरतपुर—सं. 1826 वर्षे मिती माघ बदि 7 गुरुवार डीगनगरे महाराजे केहरी सिंह राज्ये विजय गच्छे महा भट्टारक श्री पूज्य श्री महानन्द सागर सूरिभिस्तट्टपदत्त पल्लीवाल वंश डगिया गोत्रे हरसाणा नगर वासिना चौधरी जोधराजेन प्रतिष्ठा करापितायाँ।

यह श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिम्ब मूलनायक रूप में श्री जैन श्वेताम्बर पल्लीवाल मन्दिर जती मोहल्ला भरतपु में विराजमान हैं। इसी मन्दिर में सर्वधातु की पंचतीर्थी जी पर निम्नलिखित लेख है—

॥ सिधि ॥ संवत् 1554 बैसाख सुदी 3 पल्लीवाल ज्ञातीय संघ धलित सूना संघना। श्री पार्श्वनाथ बिम्ब कारितं........।

(16) सांथा (राजस्थान)—श्री शारदाय नम: श्री गुरुभ्यो नम: संवत् 1708 वर्षे फागुन सुदी 12 भृगुवासरे रिषधीलाल जैन जाति पल्लोवाल के भया लालचन्द लि० तषु सिष मोहन जि: तसु सिष दशरथ तसु सिष षेतसि: संवत 1708 फागुन सुदी 12।

सन् 1930 में प्रकाशित गुजराती मूल के ग्रंथ 'जैन परम्परा नौ इतिहास, भा–2' में भी बहुत से पल्लीवालों के धार्मिक कार्यों का उल्लेख है, वह निम्न प्रकार है—

(1) मोटा दानवीर सेठ लाखन (लाखण) पल्लीवाल ने संवत् 1299 के कार्तिक महिने में राजगच्छ के आचार्य रत्न प्रभ के उपदेश से 'समराइच्च कथा' लिखाई और व्याख्यान कराया।

(2) बरहुडिया नेमड पल्लीवालों के वंशजों ने शत्रुंजय, गिरनार, आबू आदि में जिन मन्दिर, जिन प्रतिमाओं और परिकरों को वनवाया व प्रतिष्ठा करवाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3) नेमड़ पल्लीवाल के पौत्र जिनचन्द्र ने संवत् 1292 में और सम्वत् 1296 में बीजापुर में तपागच्छ के आचार्यों का चातुर्मास करवाया व शास्त्र लिखवाया।

(4) वरहुडिया जिनचन्द्र का पुत्र वीर धवल और भीमदेव तपा-गच्छ के आचार्य विद्यानन्द सूरि (संवत् 1302 से 1327) और धर्मघोष सूरि (संवत् 1302 से 1257) बने। ये बड़े त्यागी और तपस्वी थे।

(5) सोही पल्लीवाल का पौत्र आहड़ उनके पुत्र पद्मसिंह की पुत्री भावसूंदरी साध्वी कीर्तिगणि के समीप दीक्षा अंगीकार की। आहड़ का पुत्र श्रीपाल संवत् 1303 में कार्तिक सुदी 10 रविवार को भरूच में आचार्य कमलप्रभ सूरि के उपदेश से 'अजितनाथ चरित्र' लिखवाया और उसके पक्षधर आचार्य नरेश्वर सूरि से व्याख्यान करवाया।

(6) कर्पूरा देवी पल्लीवाल सम्वत् 1327 में 'शतीपदी दीपिका' लिखवाई।

(7) पुन्ना पल्लीवाल का पौत्र गणदेव खंभात की पोशाला में 'त्रिषष्ठिशाला का पुरुष चरित्र' भेंट अर्पण किया।

(8) वीरपुर के धनाढ्य देदाधर पल्लीवाल की पत्नी रासलदेवी ने 'गणधर सार्ध शतक' की टीका लिखवाई।

(9) सिंहाक और धनगज काकासिंह की आज्ञा से सम्वत् 1441 में खंभात में तमाली में स्थंभण पार्श्वनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया और आचार्य देवसुन्दर सूरि के पट्टधर आचार्य ज्ञान सूरि पद महोत्सव किया।

उनके ही काका भाइयों लखमसिंह, रामसिंह और गोवात्र ने संवत् 1442 में आचार्य देव सुन्दर सूरि के पट्टधर आचार्य कुलमण्डन सूरि तथा आचार्य गुणंरत्न सूरि का पद महोत्सव किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इससे पहले सिंहाक के काका सिंह की आज्ञा से सम्वत् 1420 चैत्र सुदी 10 के दिन पाटण में तपागच्छ के आचार्य जयानन्द सूरि तथा आचार्य देव सुन्दर सूरि का आचार्य पद महोत्सव किया।

(10) सोनी प्रथिमसिंह पल्लीवाल का पुत्र साल्हा आचार्य देव सुन्दर सूरि के उपदेश से संवत् 1442 का भादवा सुदी 2 सोमवार को खंभात में 'पंचाशक वृत्ति' ताड़पत्र पर लिखवाई।

उक्त धार्मिक घटनाओं का वर्णन पल्लीवाल जैन इतिहास' की भूमिका में श्री लालचन्द्र भगवान गांधी ने भी किया है।

उपर्युक्त लेखों तथा मूर्ति लेखों से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं–

(1) वि. सं. 1052 के आस पास पल्लीवाल जाति चन्द्रवाड़ (वर्तमान फिरोजाबाद के निकट) में रहती थी तथा वह दिगम्बर जैन धर्मानुयायी थी।

(देखें—'चन्द्रवाड़ और राजा चन्द्रपाल)

(2) पल्लीवाल जाति के वहुत से लोग चौदहवीं शताब्दी में पूरे गुजरात में फैल गये थे। ये लोग मुख्यत: गुजरात के पाटन, मेहसाना, अहमदाबाद, काठियावाड़ भरूच तथा सूरत आदि स्थानों पर रहते थे। यहाँ रहने वाले पल्लीवालों में जैन धर्म के दोनों आम्नायों को मानने वाले थे। कुछ लोग श्वेताम्बर थे तथा कुछ दिगम्बर।

(3) गुजरात के कुछ पल्लीवाल सोलहवीं शताब्दी में अपनी जाति की मूल धारा से अलग हो गये तथा उज्जेन और पद्मावती नगरों की ओर चले गये। नागपुर से प्राप्त मूर्तियों पर गुर्जर पल्लीवाल, उज्जैनी पल्लीवाल तथा पद्मावती पल्ली-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाल लेख आता है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि उज्जैन तथा पद्मावती नगरों के पल्लीवाल बाद में फिर से एक स्थान पर नागपुर के आस पास एकत्रित हो गये। आज भी इन जातियों के परिवार विदर्भ क्षेत्र में रहते हैं।

दिगम्बर आम्नाय को मानने वाले पल्लीवाल गुजरात के पाटण, मेहसाना, अहमदाबाद, बड़ौदा तथा राजकोट जिलों में भी रहते थे तथा उन्होंने मूर्ति आदि की प्रतिष्ठाएँ भी कराई, लेकिन खेद हैं कि आज तक इन स्थानों के दिगम्बर मूर्ति लेखों को अभी तक संकलित नहीं किया गया है, इसी कारण वे अब तक प्रकाश में नहीं आई हैं।

कन्नौज, अलीगढ़, फिरोजाबाद, कचौड़ाघाट तथा मुरैना क्षेत्रों में रहने वाले पल्लीवाल हमेशा से दिगम्बर आम्नाय को मानते रहे हैं तथा आज भी दिगम्बर धर्म को मानते हैं। यहाँ के लोगों ने कई मन्दिरों का निर्माण कराया है तथा मूर्तियों की प्रतिष्ठाएँ भी कराई हैं। कई प्राचीन मन्दिर आज भी मौजूद हैं। लेकिन खेद है कि इन क्षेत्रों के दिगम्बर मूर्तिलेख आदि भी अभी तक प्रकाश में नहीं आये हैं। अतः उपर्युक्त मूर्ति लेखों में इसी कारण दिगम्बर मूर्ति लेखों की संख्या कम है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5272

चतुर्थ–अध्याय

समाज–दर्शन

[४.१] चौरासी जातियों एवं साढ़े बारह प्रकार की जातियों में पल्लीवाल जाति का स्थान—

जैन समाज में चौरासी जातियाँ प्रसिद्ध हैं। समय-समय पर विभिन्न लेखकों तथा कवियों ने इन जातियों को गिनाया है। अठारहवीं शताब्दी के विद्वान कवि पंडित विनोदीलाल जी अग्रवाल ने वि. सं. 1750 में 'फूलमाल-पच्चीसी' नामक पद्यात्मक रचना की है। इसमें उन्होंने चौरासी जैन जातियों का वर्णन किया है। इन जातियों में एक पल्लीवाल जाति भी है। कविवर विनोदीलाल जी ने लिखा है कि एक बार इन सब जातियों के लोग गिरनार जी में नेम प्रभु की फूलमाल लेने के लिए एकत्रित हुये। परस्पर यह होड़ लगी कि प्रभू की जयमाल मैं लूँ। दूसरा कहता था कि पहले मैं लूँ तथा तीसरा चाहता था कि फूलमाल मुझे मिले। इस होड़ में सभी जातियाँ अपने वैभव के अनुसार बोली छुड़ाने के लिए तैयार थीं। फूलमाल लेने की जिज्ञासा ने जन साधारण में अपूर्व जागृति की लहर उत्पन्न कर दी और एक से बढ़कर एक फूलमाल की बोली देने को तैयार हो गया। उन सबमें से किसी एक को ही फूलमाल मिली। आगे विनोदीलाल जी लिखते हैं कि यद्यपि 16वीं शताब्दी के विद्वान ब्रह्मने मिदत्त ने भीफूलमाला-जयमाल का निर्माण किया था जो संक्षिप्त, सरल और सुन्दर है। जोस ज्जन इस महर्दिक फूलमाल को अपनी लक्ष्मी देकर लेते हैं उनके सब दुख दूर हो जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० विनोदीलाल जी द्वारा गिनाई गई चौरासी जैन जातियां निम्न प्रकार हैं—

(1) खण्डेलवाल,	(2) जसवाल,	(3) अग्रवाल,
(4) बघेरवाल,	(5) पोरवाल,	(6) देशवाल,
(7) सहेतवाल,	(8) दिल्लीवाल,	(9) सेतवाल,
(10) बढ़ेलवाल,	(11) पुष्पमाल,	(12) श्री श्रीमाल,
(13) ओसवाल,	(14) पल्लीवाल,	(15) चूरूवाल,
(16) चौसखा,	(17) पद्मावती पोरवाल,	(18) परवार,
(19) गंगेरवाल,	(20) बन्धुवाल,	(21) तोर्णवाल,
(22) सोहिला,	(23) करिन्दवाल,	(24) मेडवाल,
(25) खोहिला	(26) लमेंचू,	(27) माहुरे,
(28) महेसरी,	(29) गोलवाल,	(30) गोलपूर्व,
(31) गोलहूँ,	(32) बधनौर,	(33) मागधी,
(34) विहारवाल	(35) गूजरा,	(36) सुस्वण्ड,
(37) वूसरा,	(38) भुराल,	(39) सोरठ
(40) मुराल,	(41) चितौरिया,	(42) कपोल,
(43) सोमराठ,	(44) वर्म,	(45) हूँमड़ा,
(46) नागौरिया,	(47) सीरागहोड़,	(48) भंडिया,
(49) कनौजिया,	(50) अधौजिया,	(51) मिवाड़,
(52) मालवान,	(53) जोधड़ा	(54) समोधिया,
(55) सुभट्टनेर,	(56) रायवल	(57) नागरा,
(58) रूधाकरा,	(59) सुकन्थराख,	(60) जालरालु,
(61) वालभीक,	(62) भाकरा	(63) संभरा,
(64) लाड़,	(65) चोड़कोड़,	(66) गोड़
(67) मोड़,	(68) खरिउआत,	(69) श्रीखंटा,
(70) चतुर्थ,	(71) पंचमंभरा,	(72) सुरलाकार,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(73) भोजकार,	(74) नरसिंहपुरी,	(75) जम्बूवाल,
(76) क्षेत्र ब्रह्म,	(77) वैश्य,	(78) आइआ,
(79) छाइआ,	(80) लठे,	(81) सखा,
(82) सिंधार,	(83) राग	(84) जानराज।

खटौरा निवासी नवलशाह चंदोरिया ने विक्रम संवत् 1825 में 'श्री वर्धमान पुराण' की रचना की[22] जिसमें उन्होंने भी एक स्थान पर चौरासी जैन जातियाँ गिनाई हैं। लेकिन इन जातियों तथा पूर्वोक्त जातियों की तुलना करने पर देखते हैं कि बहुत सी जातियाँ एक लिस्ट में हैं लेकिन दूसरी में नहीं। फिर भी पल्लीवाल जाति को श्री नवलशाह चंदोरिया ने भी नहीं छोड़ा है।

जिस प्रकार चौरासी जैन जातियों को समय-समय पर विभिन्न विद्वानों ने गिनाया है, उसी प्रकार साढ़े-बारह प्रकार की जातियों को भी समय-समय पर गिनाया गया है। श्री नवलशाह चंदोरिया ने 84 जातियों का तीन श्रेणियों में वर्गीकरण किया है–

(1) साढ़े-बारह प्रकार की जातियाँ
(2) जैन लगार वाली जातियाँ, तथा
(3) अन्य वैश्य जातियाँ।

'श्रीवर्धमान पुराण' में साढ़े-बारह प्रकार की जैन जातियों की 'पांत इक भाँत' अर्थात् एक पंक्ति में एक समान उच्चता वाली कहा गया है। 'परवार-मूर-गोत्रावली' में भी इन्हीं साढ़े-बारह प्रकार की जातियों को गिनाया गया है। यह जैनों में परस्पर समता एवं भ्रातृभाव की द्योतक हैं। इन साढ़े-बारह प्रकार की जातियों में पल्लीवाल जाति को नहीं रखा गया है। पल्लीवाल जाति को जैन-लगार वाली श्रेणी में रखा गया है। जैन-लगार से यहाँ तात्पर्य यह है कि इन जातियों में जैनत्व का प्रभाव विद्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान है। ये जातियाँ या तो अभी अंशतः जैन हैं अथवा पूर्वकाल में थीं। तोसरी श्रेणी में साठ अन्य वैश्य जातियों को रखा गया है। श्री नवलशाह चंदोरिया ने 84 जातियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है—

साढ़े-बारह प्रकार की जैन जातियाँ—(1) गोलापूरब, (2) गोलालारे, (3) गोलसिंधारे, (4) परवार, (5) जैसवार, (6) टमड़े, (7) कठनेरे, (8) खण्डेलवाल, (9) बहरिया, (10) श्री माल, (11) लमेंचू, (12) ओसवाल (13) अग्रवाल (आधी जाति)

जैन-लगार वाली जातियाँ—(14) जिनचरे, (15) बाघेल वार, (16) पद्मावती पुरवाल, (17) ठस्सर, (18) गृहपति, (19) नेमा, (20) असैठी, (21) पल्लीवार, (22) पोरवाल, (23) ढ़ढतवाल, (24) माहेश्वरवाल,

अन्य वैश्य जातियाँ—(25) पंडितवाल, (26) डौंडिया, (27) सहेलवाल, (28) हरसौला, (29) गोरवार, (30) नारायना, (31) सीहोरा, (32) भटनागर, (33) चीतोरा (34) भटेरा, (35) हरिआ, (36) धाकरा, (37) वाचनगरिया, (38) मोर (39) वाइडाकौ, (40) नागर, (41) जलाहर, (42) नरसिंहापुरी, (43) कपोला, (44) डोसीवाल, (45) नगेन्द्रा, (46) गोड़, (87) श्री गोड, (48) गागड, (49) डाख, (50) डायली, (51) वघनौरा, (52) सौरावान, (53) धन्नेरा, (54) कंथेरा, (55) कोरवाल, (56) सूरीवाल, (57) रैकवार, (58) सिंधवाल (59) सिरैया, (60) लाड़, (61) लडेलवाल, (62) जोरा, (63) जंबूसरा, (64) सेटिया, (65) चतुरथ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(66) पंचम, (67) अच्चिरवाल, (68) अजुध्यापूर्व (69) नानावाल, (70) मडाहर, (71) कोरटवाल, (72) करहिया, (73) अनदौरह, (74) हरदौरह (75) जेहरवार, (76) जेहरी, (77) माध, (78) नासिया, (79) कोलपुरी, (80) यमचौरा, (81) मैंसन पुरवार, (82) वेस (83) पवड़ा, (84) औमड़े।

इस प्रकार जातियों का वर्गीकरण देखने से ऐसा लगता है कि यह वर्गीकरण जाति में लोगों की संख्या के आधार पर किया गया है। अधिक जनसंख्या वाली जातियों को साढ़े बारह प्रकार की जातियों की श्रेणी में रखा गया है। उनसे कम जनसंख्या वाली जातियों को जैन-लगार वाली श्रेणी में रखा गया है। शेष जातियाँ अधिकांशत: अजैन हैं। यदि इनमें से कुछ लोग जैन धर्म मानते भी हैं तो उनकी संख्या बहुत कम है। अन्य जातियों की श्रेणी में कुछ ऐसी भी जातियाँ हैं जो पहले थीं लेकिन वर्तमान में उन जातियों का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। अग्रवाल जाति को आधा लेने का तात्पर्य मात्र इतना है कि इस जाति के लगभग आधे लोग ही जैन धर्मानुयायी हैं तथा शेष वैष्णव या अन्य मतावलम्वी हैं।

हिन्डौन निवासी श्री कजौड़ीलाल राय से प्राप्त लगभग 150 वर्ष प्राचीन हस्तलिखित प्रार्थना-पुस्तक' में भी साढ़े-बारह प्रकार की जातियों का वर्णन आता है, इन जातियौं में एक पल्लीवाल जाति भी है।

जैन जातियाँ या वैश्य जातियाँ मात्र 84 ही हैं, ऐसा नहीं है। जैन जातियों की संख्या 84 से कहीं बहुत अधिक है। वैश्य जातियाँ और भी अधिक हैं। लेकिन देखा यह गया है कि इस प्रकार गिनती कराने में मात्र 84 जातियौं को ही गिनाया गया है। इसी प्रकार साढ़े-बारह जातियों कि भी बात है। ऐसा प्रतीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है कि हमेशा से सभी लोगों को 84 के अंक से तथा साढ़े-बारह के अंक से कुछ मोह रहा है, इसी कारण 84 जातियों की गिनती पूरी हो जाने पर आगे किसी अन्य जाति को सम्मिलित नहीं किया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जब कभी 84 जैन जातियाँ तथा साढ़े-बारह प्रकार की जातियों को गिनाया गया है उन सब में पल्लीवाल जाति का नाम भी अवश्य लिया गया है। इससे सिद्ध होता है कि हमेशा पल्लीवाल जाति जैनों की एक प्रमुख जाति रही है तथा इसका जैन धर्म के क्षेत्र में प्रमुख योगदान रहा है। श्री नवलशाह चंदोरिया के वर्गीकरण से स्पष्ट है कि पल्लीवाल जाति को उन्होंने वैश्य ही माना है।

(8.2) कचौड़ाघाट के पल्लीवाल

कचौड़ाघाट आगरा जिले की बाह तहसील में स्थित एक छोटा सा कस्बा है। यह यमुना नदी के तट पर स्थित है। प्राचीन समय में यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। यहाँ पर बड़ी मात्रा में नील तथा रंग बनाने का कार्य होता था। कपड़ों की रंगाई के लिए भी यह एक प्रसिद्ध स्थान था। यहाँ का व्यापार मुख्यत: जल मार्ग द्वारा किया जाता था। यह नगर धन-धान्य से परिपूर्ण था तथा यहाँ के शासकों की भी इस नगर पर विशेष कृपा रहती थी। इसी कारण यह नगर कंचनपुरी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इस नगर में बड़े-बड़े पक्के भवन थे तथा नील और रंग बनाने के बड़े-बड़े हौदे थे। इनके भग्नावशेष अब भी पाये जाते हैं।

कचौड़ाघाट में पल्लीवाल तथा लंबेचू जैनों की बड़ी बस्ती थी। पल्लीवालों के लगभग 150 घर थे। ये सभी लोग बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। यहाँ पर दो दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। उनमें से एक मन्दिर पल्लीवालों द्वारा निर्मित है तथा दूसरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लंबेचूओं द्वारा निर्मित है। पल्लीवालों के इस मन्दिर को लगभग 500 वर्ष प्राचीन बताया जाता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि लगभग पाँच-छः सौ वर्ष पूर्व से ही पल्लीवाल लोग कचौड़ाघाट आकर बस गये थे। यहाँ के लंबेचूओं का संबंध निकट के अन्य नगरों-अटेर, हथकांत, नौगावां, पारना, साहपुरा तथा जेतपुर से था। पल्लीवालों का विशेष सम्बन्ध चन्दवाड़ (फिरोजाबाद के निकट), कन्नौज, भिण्ड तथा मुरैना से था। कचौड़ाघाट में बसने से पूर्व ये पल्लीवाल चन्दवाड़ तथा कन्नौज में रहते थे। चूँकि कचौड़ाघाट व्यापार के लिए एक प्रसिद्ध नगर था, अतः कालान्तर में कुछ पल्लीवाल यहाँ आकर बस गये।

यहाँ के लंबेचूओं तथा पल्लीवालों का मुख्य व्यवसाय नील तथा रंग बनाने का था। इन लोगों ने अपने इस कार्य में प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। लोग बहुत धनाड्य थे तथा नील और रंग का निर्यात भी करते थे। व्यापार को और अधिक बढ़ाने के उद्देश्य से आगरा सहित कई स्थानों पर इन्होंने कई बसने (गद्दियाँ) स्थापित किये। अकेले आगरा में इनके 52 बसने थे। यद्यपि ये लोग मुख्यतः व्यापार में संलग्न थे, तथापि कई वहाँ के शासकों के यहाँ उच्च पदों पर भी आसीन थे। ये लोग अपनी ईमादारी तथा सच्चाई के लिए प्रसिद्ध थे, इसीलिए राजा भदावर का खजान्ची प्रायः कोई पल्लीवाल या लवेंचू ही होता था।

हालाँकि यहाँ के जैनों पर यहाँ के शासकों की हमेशा ही विशेष कृपा रही, फिर भी डाकुओं तथा लुटेरों का आतंक बना ही रहता था। जैनों के मकान पक्के बने हुये थे। अपने धन को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से इन्होंने अपने धन को पक्की दीवारों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में चिनवा दिया। कुछ समय पूर्व प्राचीन मकानों की दीवारें गिरने पर यह धन देखा गया था।

धीरे-धीरे राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन होता चला गया। छोटे-छोटे राजा अंग्रेजों के नियन्त्रण में आ गये। डाकुओं के आतंक भी बढ़ने लगे। इस कारण यहाँ के व्यापारी अन्यत्र जाने को विवश हो गये। अधिकतर पल्लीवाल कन्नौज, कानपुर तथा मुरैना में विस्थापित हो गये। इस शताब्दी के प्रारम्भ में रेल-गाड़ियों ने तो एक क्रांति सी ला दी। जो व्यापार जल मार्ग से होता था अब वह रेल-गाड़ियों द्वारा होने लगा। कचौड़ाघाट में रेल व्यवस्था नहीं हो सकी। अतः यहाँ के रहे-सहे व्यापारी भी अन्यत्र चले गये।

सन् 1924 में पल्लीवालों के मात्र तीन घर रह गये थे। कालांतर में वे भी आगरा तथा दिल्ली चले गये। लंबेचुओं के बहुत से परिवार अब भी कचौड़ाघाट में रहते हैं। जब पल्लीवालों का एक भी परिवार वहाँ नहीं रहा, तब उनके मन्दिर की सभी मूर्तियों को लंबेचूओं के मन्दिर में स्थापित कर दिया गया। पल्लीवालों का मन्दिर खाली है तथा वन्द पड़ा है। यह ही मात्र एक स्मारक भवन है जो वहाँ पर रहने वाले पल्लीवालों की याद दिलाता है।

(4-3) नागपुर क्षत्र के पाल्लीवाल

नागपुर (विदर्भ) क्षेत्र के पल्लीवाल 'उज्जैनी पल्लीवाल' हैं। यहाँ बसने वाले पल्लीवालों के दो प्रवाह दो दिशाओं से आये। एक प्रवाह सातपूडा की ओर से ठाणे गाँव (जिला वर्धा) आया। यह ढाणे गाँव नागपुर अमरावती रोड़ पर नागपुर से 40 मील की दूरी पर है तथा कोंढ़ाली से दस मील पर है। दूसरा प्रवाह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छिन्दवाड़ा की तरफ से आया। छिन्दवाड़ा से आने वाले लोग लेधीखेड़ा, सावंगा (तहसील-रगोंसर, जिला छिन्दवाड़ा, म.प्र.) पारशिवनी (तहसील-रामटेक, जिला नागपुर) में रहने लगे। पहले पल्लीवालों की संख्या (1) कोंढ़ाली, ढाणेगाँव और कुछ पड़ौस के गाँवों में, तथा (2) लेधीखेड़ा, सावंगा, खैरी, खापा, पारशिवनी में ही थी। कालान्तर में नागपुर 'मध्य प्रान्त और बहाड़' की राजधानी होने के कारण यहाँ पर कुछ लोग रहने लगे। कुछ लोगों ने नागपुर से दस मील दूर स्थित 'कामठी' नामक नगर में रहना प्रारम्भ कर दिया। आज मुख्यत: कोंढ़ाली, नागपुर, कामठी पारशिवनी, खैरी, सावंगा, लेधीखेड़ा तथा धरणे गाँव, इन आठ नगरों में पल्लीवाल समाज के घर हैं। नौकरी तथा अन्य व्यवसाय के निमित्त इन गाँवों से बाहर गये हुए लोग वर्धा, जबलपुर, बालघाट, भोपाल, रायपुर, बम्बई, विशाखापट्टम, गोंदिया आदि नगरों में भी रहते हैं।

यहाँ पल्लीवालों के 125-150 मकान हैं। विदर्भ विभाग के पल्लीवालों में 12 गोत्र पाये जाते हैं। 'उमाठे' कुलनाम वाले पल्लीवालों की संख्या अधिक है। कुलनाम इस क्षेत्र में बसने के बाद रखे गये हैं। कुलनाम तथा गोत्रों की सूची नीचे दी गई है।

यहाँ के लोगों की मातृ भाषा मराठी है। खान-पान तथा रहन-सहन भी मराठी है। आर्थिक स्थिति मध्यमवर्गी है। शिक्षा का प्रसार है किन्तु व्यवसाय की प्रवृत्ति अधिक है। समाज में कई डॉक्टर, इंजीनियर, प्राध्यापक तथा वकील हैं। स्त्री शिक्षा पहले बहुत कम थी, लेकिन अभी स्त्रियाँ भी काफी पढ़ने लगी हैं।

अधिकतर लोग व्यापार तथा खेती करते हैं। पल्लीवाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज में धार्मिकता बहुत अधिक है। चातुर्मास में जिनेन्द्र अभिषेक नित्य होता है। शास्त्र प्रवचन भी होते हैं। पर्यूषण तथा महावीर जयन्ती आदि उत्सव बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। सामान्यतः रात्रि भोजन तथा अष्टमूल सेवन त्याज्य है। यहाँ मन्दिर कमेटी, महिला मण्डल आदि सामाजिक संगठन भी हैं। पुनर्विवाह प्रथा नहीं है। समाज के लोगों की संख्या कम होने से पल्लीवाल समाज के अतिरिक्त अन्य दिगम्बर जैन समाजों में भी विवाह सम्बन्ध हो जाते हैं।

नागपुर क्षेत्र में कोंढ़ाली तथा पारशिवनी में पल्लीवाल दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। कोंढ़ाली तथा पारशिवनी नागपुर से क्रमशः 30 तथा 27 मील दूरी पर स्थित हैं। पारशिवनी का एक मंदिर बहुत प्राचीन था। बाद में पल्लीवालों का उस पर अधिकारी रहा होगा। आज पारशिवनी में मात्र एक मन्दिर है और दिगम्बर जैनों में मात्र पल्लीवालों के दस-बारह मकान हैं। कोंढ़ाली में दिगम्बर जैनों की दो जातियाँ रहती हैं—

(1) पल्लीवाल और

(2) सैलवाल।

सैलवाल समाज का मन्दिर पल्लीवालों के मन्दिर से पुराना हैं। 'पल्लीवाल दिगम्बर जैन मन्दिर' का निर्माण लगभग 150 वर्ष पहले हुआ है। लेकिन सभी मूर्तियाँ प्राचीन हैं। यहाँ की अधिकतर मूर्तियाँ संवत् 1500 के आस-पास की हैं। इनका उल्लेख डा. विद्याधर जोहरापुरकर द्वारा सपादित ग्रन्थ 'भट्टारक-सम्प्रदाय' में उल्लेख मिलता है।

वर्धा नगर में पल्लीवालों के अतिरिक्त पद्मावती पुरवाल, बलोरे, खण्डेलवाल, सैलवाल तथा परवार समाज के लोग भी रहते हैं। यहाँ पर भी दो दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। एक श्वेताम्बर मन्दिर तथा एक स्थानक भी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तालिका—'पल्लीवाल दिगम्बर जैन समाज, दक्षिण विभाग (विदर्भ) (सन् 1979 की गणना के आधार पर)

कुलनाम	गोत्र	परिवार संख्या
उमाठे	बाईवाल	27
पनवेलकर	नायक	12
बानाईत	बिजावरत	9
वाधे	धराईवाल	9
धारीडे	डरेपूर	8
वसमतकार	पानीवाल	7
मालते	कासु	4
देशकर	फरीवाल	3
गडेकर	भिमानी	2
मालवतकर	छामरनीवाल	2
वोरकुटे	बीदर	1
पुनेकर	नंदनोवाल	1
	कुल परिवार संख्या	85

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४.४) पल्लीवाल जाति की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति:—

विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में चन्द्रवाड़ पर पल्लीवाल जैन राजा राज्य करता था। इससे स्पष्ट है कि ग्यारहवीं शताब्दी में जाति की सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी रही, तभी तो पल्लीवाल जाति के किसी व्यक्ति का चन्दवाड़ पर आधिपत्य था। जैन समाज में इस जाति का अच्छा प्रभाव रहा। जाति के लोगों ने कई मूर्तियों की प्रतिष्ठाएँ भी कराईं। अकेले राजा चन्द्रपाल ने 51 प्रतिष्ठाएँ करवाई थीं।

तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक जाति की स्थिति अच्छी रही। लेकिन संवत् 1251 में राजा जयचन्द्र पर मुहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद इस जाति के लोगों को बहुत कष्ट उठाने पड़े। बहुत से लोग तो अपना मूल स्थान छोड़ कर गुजरात की ओर भाग गये तथा जाति का विघटन हो गया। सत्रहवीं शताब्दी तक गुजरात खण्ड की ओर भागे पल्लीवालों में से अधिकतर पुनः अपने मूल स्थान की ओर वापिस आ गये तथा वे पूर्वी राजस्थान और आगरा क्षेत्र में बस गये। सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी में पल्लीवाल जाति ने जैन समाज में पहले जैसा सम्मान फिर से प्राप्त कर लिया था। इसी कारण समय-समय पर विभिन्न कवियों तथा विद्वानों द्वारा इस जाति को याद किया जाता रहा है।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जाति के कई लोग विभिन्न राज्यों में अच्छे-अच्छे पदों पर आसीन थे। कई लोग बड़े-बड़े काश्तकार तथा जमींदार थे। कई लोग राज्यों में दीवान पद पर आसीन थे। जमींदारी प्रथा समाप्त होने तक जाति के कई लोग जमींदार थे।

पल्लीवाल जाति कभी किसी एक प्रकार के व्यवसाय से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही जुड़ी नहीं रही है। जाति के विघटन से पूर्व सभी पल्लीवाल व्यापार करते थे। इसी कारण पल्लीवालों ने उस समय के प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्रों को ही अपना निवास स्थान बनाया। प्राचीन समय में जल मार्ग (नदी) द्वारा वहुत यातायात होता था। चन्द्रवाड़ भी यमुना नदी के तट पर स्थित है तथा उस समय ग्रह एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। कुछ पल्लीवाल कन्नौज में रहते थे तथा वे भी व्यापार में संलग्न थे।

जाति के विघटन के पश्चात कुछ पल्लीवाल पट्टन या पाटन (गुजरात) चले गये। पाटन भी एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। दूसरी ओर कुछ पल्लीवाल चन्द्रवाड़ से कुछ दूर यमुना नदी के तट पर पर ही स्थित कचौड़ाघाट चले गये। कचौड़ाघाट भी व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था तथा यहाँ पर नील बनाने तथा कपड़ों की रंगाई का मुख्य कार्य था। इस प्रकार अधिकतर पल्लीवाल बड़े-बड़े व्यापारिक केन्द्रों से जुड़े रहे तथा व्यापार इनका मुख्य व्यवसाय बना रहा। कुछ पल्लीवाल व्यापार के साथ-साथ खेती-वाड़ी से भी सम्बन्धित थे, उनमें से कई वड़े जमींदार थे। कुछ पल्लीवाल राज्यों के पदाधिकारी भी रहे।

अठारहवीं शताब्दी में गुजरात के अधिकतर पल्लीवाल पुनः पूर्वी राजस्थान की ओर आ गये। तब इन्होंने खेती को अपना मुख्य व्यवसाय वनाया। इसके साथ ही कुछ पल्लीवाल बहुत प्रसिद्ध व्यापारी भी थे तथा रूई और कपास का वड़े पैमाने पर व्यापार करते थे।

जो लोग व्यापार के उद्देश्य से गुजरात छोड़कर विदर्भ क्षेत्र में चले गये। उन्होंने भी वाद में खेती को अपना मुख्य व्यवसाय बना लिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकिन आज स्थिति बहुत परिवर्तित है। समाज के अधिकतर लोग न तो खेती करते हैं और न ही व्यापार। सामान्यत: इस जाति के लोग सरकारी तथा गैर-सरकारी सेवाओं में संलग्न हैं। फिर भी जगरौठी तथा मुरैना क्षेत्र के कुछ पल्लीवाल अब भी खेती करते हैं तथा कुछ व्यापार में संलग्न हैं। कन्नौज में रहने वाले अधिकतर पल्लीवाल व्यापार करते हैं।

पल्लीवाल लोगों की आर्थिक स्थिति समान्यत: ठीक ही रही है। आर्थिक स्थिति कभी खराब रही हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर चौंदहवीं शताब्दी तक पल्लीवालों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रही थी। अठारहवीं शताब्दी से आगे भी आर्थिक स्थिति ठीक रही है। वर्तमान में इस जाति के लोग सामान्यत: मध्यमवर्गी हैं।

समय-समय पर समाज के लोगों का राजनैतिक क्षेत्रों में भी प्रभाव रहा है। ग्यारहवीं शताब्दी में चन्द्रवाड़ का शासक चन्द्रपाल था। सोलहवीं शताब्दी तक चन्द्रवाड़ की राज्य-व्यवस्था में पल्लीवालों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में इस जाति का पूर्वी राजस्थान की राजनीति में बहुत हिस्सा रहा। यहाँ के विभिन्न राज्यों में कई पल्लीवाल दीवान तथा प्रधानमन्त्री पद पर आसीन थे। देश के स्वतंत्रता-आंदोलन में भी इस जाति के लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

(4.5) धार्मिक क्षेत्र में पल्लीवाल—

विभिन्न परिस्थितियों में भी जाति के लोगों ने धर्म से अपना नाता कभी नहीं तोड़ा। हमेशा ही यह जाति जैन धर्मानुयायी रही है। विभिन्न व्यक्तियों ने समय-समय पर कई जैन मूर्तियों की प्रतिष्ठाएँ कराईं तथा मन्दिरों के निर्माण कराये। सबसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधिक गौरव की बात यह है कि जाति में बहुत से ऐसे महानुभाव भी हुए हैं जिन्होंने जैन साहित्य को सुदृढ़ किया तथा जैन धर्म का प्रचार किया। इन व्यक्तियों ने बहुत से धार्मिक ग्रन्थों की रचना की। कवि धनपाल, पं. दौलतराम, कविवर मनरंगलाल तथा वर्तमान में पं. मक्खनलाल जी आदि विद्वान इसी जाति के रत्न थे। लेकिन जाति में आज पहले जैसी धार्मिक भावना प्रतीत नहीं होती हैं, यह एक चिन्ता का विषय है।

प्राचीनतम् शिलालेख तथा मूर्तिलेख बताते हैं कि प्रारम्भ में पल्लीवाल जाति दिगम्बर आम्नाय को मानती थी। दिगम्बर आचार्य कुन्द-कुन्द पल्लीपाल ज्ञात्युत्पन्न थे। चन्द्रवाड़ का राजा चन्द्रपाल भी पल्लीवाल दिगम्बर जैन था। उसने वि. सं. 1052 में कई मूर्तियों की प्रतिष्ठा भी कराई। ऐसी कई मूर्तियाँ फिरोजाबाद के दिगम्बर जैन मन्दिर में विराजमान हैं।

कालान्तर में कुछ पल्लीवालों को इटावा अंचल छोड़कर गुजरात जाना पड़ा। जो पल्लीवाल कन्नौज में ही रहे, वे हमेशा ही दिगम्बर धर्मानुयायी रहे। आज भी दिगम्बर धर्मानुयायी ही हैं। जो पल्लीवाल गुजरात चले गए वे भी बारहवीं शताब्दी पर्यन्त दिगम्बर धर्मानुयायी ही रहे। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कुछ लोगों ने श्वेताम्बर धर्म अपना लिया। 'पल्लीवाल जैन इतिहास' की भूमिका में एक लेख का वर्णन है, जिसमें वि.सं.1207 में 'पल्ली-भंग' के समय त्रुटित पुस्तक को ग्रहण करने की बात कही गई है। यहाँ पल्ली-भंग से यह भाव निकलता है कि इस समय से ही पल्लीवाल दो अलग-अलग आम्नायों को मानने लगे। वैसे गुजरात में स्थित अधिकतर पल्लीवाल दिगम्बर धर्मानुयायी हो रहे। अणिहल्लपुर (गुजरात) निवासी कवि धनपाल पल्लीवाल, जिन्होंने वि. सं. 1261 में 'तिलक मंजरी सारः' की रचना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की, दिगम्बर धर्मानुयायी था। भगवान पार्श्वनाथ की एक मूर्ति सूरत के पास महुआ के दिगम्बर मन्दिर में विराजमान है। इसकी प्रतिष्ठा वि. सं. 1390 में एक पल्लीवाल बन्धु ने ही कराई। इससे सिद्ध होता है कि गुजरात के बहुत से पल्लीवाल दिगम्बर धर्मानुयायी ही रहे। सोलहवीं शताब्दी में गुजरात के कुछ पल्लीवाल उज्जैन तथा पद्मावती नगर होते हुए विदर्भ क्षेत्र में चले गए तथा वहीं बस गये। वे उस समय भी दिगम्बर धर्मानुयायी थे तथा आज भी हैं।

कुछ लोगों का मत है कि पल्लीवाल जाति प्रारम्भ में श्वेताम्बर मूर्ति पूजक थी तथा बाद में इस जाति के कुछ लोग दिगम्बर धर्म को मानने लगे। लेकिन यह बात सही नहीं है। पल्लीवाल जाति से संबंधित प्रचीनतम लेख जो कि पल्लीवाल जाति का दिगम्बर आम्नायी होना सिद्ध करते हैं क्रमशः, वि. सं. 1053, वि. सं. 1261, वि. सं. 1390, आदि उपलब्ध हैं। प्राचीनतम् लेख जो पल्लीवाल जाति का श्वेताबर मूर्ति पूजक होना सिद्ध करते हैं, वे क्रमश: वि. सं. 1287, वि. सं. 1298, वि. सं. 1303 आदि के हैं। कुछ लोग पल्लकीय गच्छ को पल्लीवाल जाति से संबंधित मानते हैं। ऐसे प्राचीनतम् लेख जिनमें पल्लकीय गच्छ का उल्लेख आता है, क्रमश: वि. सं. 1144, वि. सं. 1151 तथा वि. सं. 1201 के ही उपलब्ध हैं।

कन्नौज क्षेत्र के पल्लीवाल जो कि मूल पल्लीवालों में से हैं, पहले भी दिगम्बर धर्मानुयायी थे तथा आज भी हैं। उनमें से कभी किसी ने श्वेताम्बर धर्म नहीं अपनाया। इन सब बातों से हम निश्चत पूर्वक कह सकते हैं कि पल्लीवाल लोग मूलतः दिगम्बर धर्मानुयायी ही थे। लेकिन तेरहवीं शताब्दी के अन्त में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

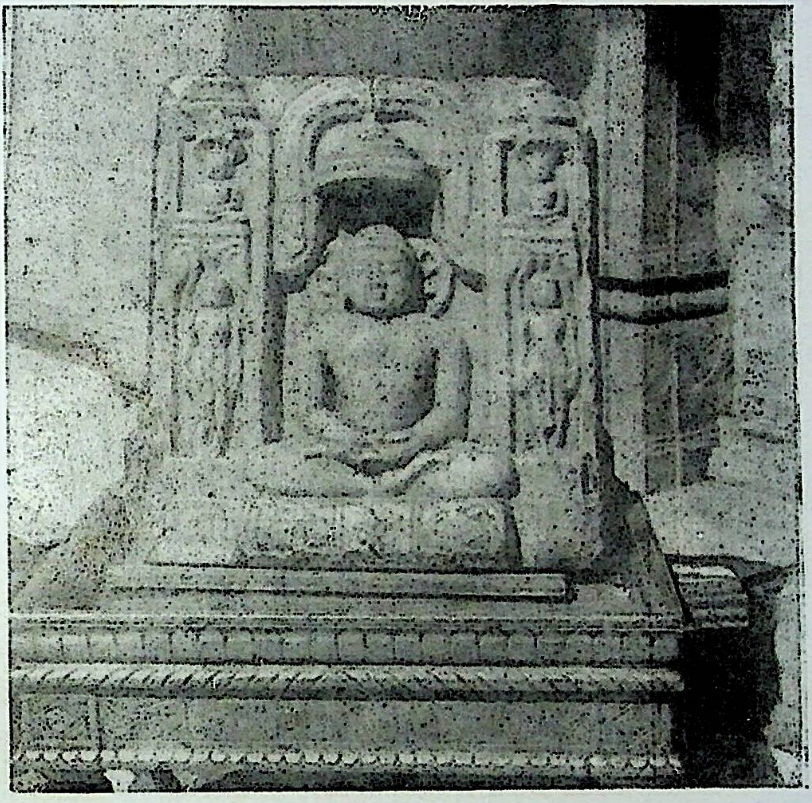

श्री विघ्नेश्वर पार्श्वनाथ दि० जैन अतिशय क्षेत्र महुवा
(सूरत) की भगवान श्री 1008 ऋषभनाथ की प्रतिमा (संदर्भ)
मूर्तिलेख संगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुजरात खण्ड में रहने वाले कुछ पल्लीवाल श्वेताम्बर मूर्ति पूजक हो गये। आज कल ये लोग जगरौठी क्षेत्र (यानि कि भरतपुर, खेड़ली गंज, हिन्डौन, सवाई माधोपुर आदि) में रहते हैं। पल्लीवाल जाति में श्वेताम्बर मूर्ति पूजकों के अतिरिक्त स्थानक वासी लोग भी पाये जाते हैं। यथासंभव लगभग 200 वर्ष पहले श्वेताम्बर मूर्ति पूजक लोगों में से ही कुछ लोग स्थानक वासी आम्नाय को मानने लगे।

आज भी जैन धर्म की विभिन्न आम्नायों को मानने वाले लोग इस जाति में हैं, लेकिन सामाजिक एकता में अलग-अलग आम्नायों को मानना वाधक नहीं है तथा एक दूसरे में शादी-विवाह होते हैं।

आज से 70-80 वर्ष पहले कुछ पल्लीवाल 'आर्य-समाज' धर्म को मानने लगे थे, लेकिन पिछले 40 वर्षों से इस जाति में कोई भी आर्य समाजी नहीं है।

(4-6) पल्लीवालों द्वारा निर्मित जैन मन्दिर :—

पल्लीवालों द्वारा निर्मित बहुत से जैन मन्दिर स्थित हैं। उनमें दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों ही आम्नाओं के मन्दिर सम्मिलित हैं। कन्नौज में दो दिगम्बर जैन मन्दिर हैं, उनमें से एक 500-600 वर्ष प्राचीन है। कहते हैं कि यह मन्दिर महोवा (उ. प्र.) के सुप्रसिद्ध वीर योद्धा आल्हा तथा ऊदल के पिता के समय का है। अलीगढ़ में भी तीन दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। फिरोजाबाद में चार दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। फिरोजाबाद के जैन नगर में स्थित दि० जैन मन्दिर अति विशाल है, उसमें स्थित एक मूर्ति 45 फुट अवगाहना वाली भगवान बाहुबली की मूर्ति है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस मन्दिर का निर्माण सेठ छदामीलाल जी पल्लीवाल ने कराया था।

फिरोजाबाद से चार कि. मी. दूर चन्द्रवाड़ में एक अति प्राचीन दि० जैन मन्दिर था, लेकिन यमुना नदी की बाढ़ में डह गया। इसके स्थान पर नया मन्दिर बन गया है। कचौड़ाघाट में भी एक प्राचीन दि० जैन मन्दिर था। अब मात्र भग्नावशेष ही हैं। मन्दिर की मूर्तियाँ वहीं के लबेंचू दि० जैन मन्दिर में विराजमान कर दी गई हैं।

आगरा तथा इसके आस-पास के क्षेत्र में 200-250 वर्ष पुराने कई दि० जैन मन्दिर हैं जिन्हें पल्लीवालों ने बनवाया। कठवारी, मिठाकुर, मांगरौल, रूनकता तथा सिकन्दरा आदि ग्रामों में ये मन्दिर आज भी स्थित हैं। किरावली तथा रायमा ग्रामों में भी दि० जैन मन्दिर हैं, लेकिन इनको पल्लीवाल जाति सहित अन्य जैन जातियों के लोगों ने मिलकर बनवाया था। आजकल इन गाँवों में पल्लीवालों के अतिरिक्त अन्य जैन जातियों का अभाव होने से इनकी देख-रेख पल्लीवालों के हाथों में ही है। आगरा के धूलियागंज मौहल्ले में एक दि० जैन मन्दिर है, यह सन् 1839 ई० से पहले का बना है। आगरा में दो अन्य दि० जैन मन्दिर हैं जिनका निर्माण पल्लीवाल बन्धुओं द्वारा कराया गया है, लेकिन ये मन्दिर नये हैं।

हिन्डौन के पास भारेड़ा नामक-ग्राम में भी एक दिगम्बर जैन मन्दिर था। इस मन्दिर की प्रतिमा आजकल केसरगंज, अजमेर के दि० जैन मन्दिर में विराजमान है। जगरौठी क्षेत्र के समौची, खेड़ली तथा समराया ग्रामों में भी पल्लीवालों के दि० जैन मन्दिर थे, लेकिन 6-7 वर्ष पहले इन मन्दिरों को श्वेताम्बर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंदिरों में परिवर्तित करा दिया गया है। अन्य कई स्थानों पर भी पल्लीवालों के दिगम्बर मन्दिर थे लेकिन आजकल श्वेताम्बर मंदिरों में परिवर्तित करा दिये गये हैं।

अलवर नगर में पल्लीवालों का एक दिगम्बर मंदिर है। अलवर जिले के हरसाना, रामगढ़, लक्ष्मनगढ़, नौगावाँ तथा समौची में भी दिगम्बर जैन मंदिर हैं। नौगावाँ का मन्दिर 400-500 वर्ष पुराना है। मण्डावर में भी एक दिगम्बर जैन मंदिर है। अजमेर में एक दि० जैन मंदिर है जिसका निर्माण कुछ वर्ष पूर्व ही हुआ है।

मुरैना क्षेत्र में पल्लीवालों द्वारा निर्मित कई जैन मंदिर हैं, ये सभी दिगम्बरी हैं। मुरैना के अतिरिक्त बामौर, रेंहट तथा मोहना में भी दि० मंदिर हैं। मुरैना से 24 कि.मी. दूर जौरा नामक ग्राम में भी पल्लीवालों का एक दि० जैन मंदिर है। जौरा से 8 कि.मी. दूर घने जंगलों में अत्यधिक प्राचीन दि० जैन मूर्तियाँ हैं जिनकी देखभाल बहुत समय से पल्लीवालों द्वारा की जाती रही है। जौरा से ही 6 कि.मी. परसौटा नामक ग्राम में पल्लीवालों का एक प्राचीन दि० जैन चैत्यालय है जिसमें प्राचीन मूर्तियाँ विराजमान हैं। परसौटा ग्राम में ही पल्लीवाल समाज के अधिष्ठाता की गद्दी है। इसके अन्तिम अधिष्ठाता श्री 108 भट्टारक करन सागर जी महाराज थे जिनका कुछ वर्ष पूर्व देहांत हो गया। घर में कुछ भी शुभ कार्य होने पर पल्लीवाल लोग यहाँ दान देने। चढ़ावा चढ़ाने जाते हैं।

नागपुर (महराष्ट्र) में पल्लीवालों के तीन दिगम्बर जैन मंदिर हैं। इनमें से एक मंदिर दो सौ वर्षों से भी अधिक पुराना है लेकिन इसकी मूर्तियाँ 500-600 वर्ष प्राचीन हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगरौठी क्षेत्र के पींगोरा, सिर्संका खेड़ली, पटोंदा, उगैर आदि गाँवों में आज श्वेताम्बर मंदिर हैं। भरतपुर तथा डीग में भी श्वेताम्बर मंदिर हैं। जगरौठी क्षेत्र के हिन्डौन, करौली, गंगापुर सिटी, शेरपुरा, शेखपुरा आदि स्थानों पर भी श्वेताम्बर मंदिर हैं।

पल्लीवालों द्वारा निर्मित कई स्थानक भी हैं तथा ये भरतपुर तथा हिण्डौन में स्थित हैं। एक स्थानक आगरा में भी था, लेकिन आजकल वहाँ नहीं है।

विभिन्न मूर्ति-लेखों से प्रतीत होता है कि पुराने समय में गुजरात में भी पल्लीवालों द्वारा निर्मित श्वेताम्बर तथा दिगम्बर दोनों ही अम्नायों के मन्दिर होने चाहिएँ, लेकिन आज इनका कोई अस्तित्व दिखाई नहीं देता है। ये मन्दिर गुजरात के पाटन, मेहसाना, अहमदाबाद, काठियावाड़, भरूच तथा सूरत आदि नगरों में होने चाहिएँ।

(4.7) धूलिया गंज, आगरा स्थित दिगम्बर जैन मंदिर तथा आध्यात्मिक शैली :—

आगरा में पल्लीवालों का आगमन लगभग दो सौ वर्ष पहले से ही प्रारम्भ हो गया था। ये पल्लीवाल आगरा के धूलिया गंज नामक स्थान में रहते थे। प्रारम्भ में ही इनको धर्म-ध्यान में विशेष रूचि थी। उस समय धूलिया गंज में मंदिर नहीं था। अतः सभी पल्लीवाल बेलनगंज (आगरा) के दि० जैन मंदिर में दर्शन तथा पूजन करने जाते थे। धूलिया गंज तथा बेलनगंज की जैन समाज सामूहिक रूप से पूजा-प्रक्षाल आदि करती थी। कहते हैं कि एक बार कुछ पल्लीवाल बन्धुओं को मन्दिर पहुँचने में देर हो गई, अतः बेलन गंज के गैर-पल्लीवाल जैन बन्धुओं ने पूजा-पाठ प्रारम्भ कर दिया। देर से पहुँचे पल्ली-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वालों ने इस पर आपत्ति की। तभी किसी ने कटाक्ष मारते हुये कहा कि तुमको (पल्लीवालों को) जब इतनी ही आपत्ति है, तो अपना अलग मन्दिर क्यों नहीं बनवा लेते। बस इतना ही कहना था कि पल्लीवाल बन्धुओं ने एक अलग मन्दिर बनवाने का निश्चय कर लिया। इसी के फलस्वरूप वि. संवत् 1895 (सन् 1839 ई.) में धूलियागंज में 'श्री पल्लीवाल दिगम्बर जैन मंदिर' की विधिवत् स्थापना हुई। प्रारम्भ में इस मन्दिर में मात्र एक प्रतिमा 23 वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी की थी। कालांतर में इस मन्दिर का विस्तार हुआ तथा कई अन्य वेदियाँ बनी।

इस मन्दिर में प्राचीनतम् मूर्ति वि. संवत् 1526 की भगवान पार्श्वनाथ की है। पद्मासन अवस्था में यह मूर्ति धातु की है तथा इसकी अवगाहना चार इन्च है। मन्दिर में और भी कई धातु प्रतिमायें सोलहवीं शताब्दी की हैं। प्राचीनतम् पाषाण प्रतिमायें मात्र दो हैं। वि. संवत् 1836 में निर्मित भगवान पार्श्वनाथ और भगवान मुनिसुव्रतनाथ की ये प्रतिमायें क्रमशः श्याम तथा श्वेत पाषाण की हैं।

पूजा-पाठ के साथ-साथ धूलियागंज के पल्लीवाल शास्त्र स्वाध्याय में भी विशेष रुचि लेते रहे हैं। यहाँ के मन्दिर से बहुत पहले से ही स्वाध्याय व प्रवचन होते रहे हैं। लेकिन लगभग पिछले सौ वर्षों से यहाँ पर विधिवत रूप से आध्यात्मिक शैली चल रही है। पहले यहाँ पर पं० नन्नूमल जी तथा पं० चिरंजीलाल जी शास्त्र प्रवचन करते थे। उनके बाद यहाँ की शैली में कई विद्वान लोगों का समागम हुआ। श्री रतनलाल जी मुनीम तथा डाक्टर प्यारेलाल जी उनमें मुख्य हैं। यहाँ की आध्यात्मिक शैली ने सन् 1970 से विशेष ख्याति प्राप्त की। उस समय इस शैली के प्रमुख लोगों में डा. प्यारेलाल जी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मास्टर हजारीलाल जी (अटरू वाले) ब्रह्मचारी श्री रामचंद्र जी, पं० रामनाथ जी, श्री सूरजभान 'प्रेम', मास्टर रामसिंह जी, श्री सुमेरचंद जी 'भगत' तथा श्री किरोड़ीमल जी के नाम उल्लेखनीय हैं। गैर-पल्लीवालों में यहाँ की शैली के प्रमुख सदस्यों में मुन्शी गेंदालाल तथा मुन्शी कामता प्रसाद हैं (दोनों पद्मावती पुरवाल जाति के हैं) के नाम मुख्य हैं।

पं० रामनाथ जी पहले दूध का व्यापार करते थे, अत: दूध वाले के नाम से विख्यात हो गये थे। बाद में ये अन्धे हो गए थे। लेकिन इसके बावजूद भी इन्होंने जैन समाज का बहुत उपकार किया। इन्होंने मन्दिर जी में 'महिला ज्ञान मण्डल' की स्थापना कराई तथा बहुत-सी अनपढ़ महिलाओं को इन्होंने भक्ताम्बर स्त्रोत तथा तत्वार्थ सूत्र कंठस्थ कराये तथा उन्हें धार्मिक शिक्षायें दीं।

गुजरात मूल के ब्रह्मचारी श्री मूलशंकर देसाई जी के अथक प्रयासों से लगभग सन् 1965 में यहाँ धार्मिक कक्षायें प्रारम्भ की गईं। बच्चों को यहाँ विशेष रूप से धार्मिक शिक्षा दी जाती थी।

(4-8) साहित्यिक क्षेत्र में पल्लीवाल-जाति का योगदान

पल्लीवाल जाति में शास्त्र स्वाध्याय की परम्परा बहुत पुरानी है। इसी कारण आज भी बहुत से पल्लीवाल घरों में सौ डेढ सौ वर्ष पुराने हस्तलिखित ग्रन्थ मिल जाते हैं। पहले समय में शास्त्र आदि के प्रकाशन की व्यवस्था नहीं थी। अत: विभिन्न शास्त्रों की अपने हाथ से ही नकल करनी पड़ती थी। बहुत से पल्लीवाल बन्धुओं ने भी इस कार्य को किया। सौ वर्ष पुरानें कई शास्त्र डा. प्यारेलाल जी, आगरा के यहाँ पर भी उपलब्ध हैं। कई पुस्तकों की नकल मंगूरा (आगरा) के श्री नन्दकिशोर जी ने भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिखवाई। आज भी ये हस्तलिखित पुस्तकें उनके वंशजों के घरों में उपलब्ध हैं। धूलिया गंज (आगरा) तथा मिठाकुर (आगरा) के श्री पल्लीवाल दिगम्बर जैन मन्दिरों में भी लगभग दो सौ वर्ष पुराने हस्तलिखित शास्त्र मौजूद हैं। हस्तलिखित 'भक्ताम्बर पाठ' तथा भजन संग्रह तो कई घरों में उपलब्ध हैं। पल्लीवाल लिपिकारों द्वारा की गई लगभग डेढ़ सौ-पोने दो सौ वर्ष प्राचीन कुछ हस्तलिखित लिपियाँ जयपुर के बड़े तेरापंथी दिगम्बर जैन मन्दिर तथा जरनल गंज, कानपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर में भी उपलब्ध हैं।

कचौड़ाघाट के पल्लीवाल दिगम्बरजैन मन्दिर में भी कई प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ थे। जब पल्लीवाल इस स्थान को छोड़कर अन्यन्त्र चले गये तो उन ग्रन्थों को अपने साथ ले गये। कुछ ग्रन्थ कन्नौज में भी होने की सम्भावना है।

पल्लीवाल जाति में कई ऐसे विद्वान भी हुये हैं जिन्होंने मौलिक रचनाएें लिख कर जैन साहित्य को समृद्ध करने में अपना बहुमूल्य योगदान किया। इनका परिचय इस पुस्तक में आगे दिया है। इन विद्वानों में कवि धनपाल, पं दौलतराम तथा कविवर मनरंगलाल प्रमुख हैं। पं. दौलतराम कृत छहढाला तो हिन्दी की महान् जैन कृति है। आचार्य कुन्दकुन्द कृत भी अनेक आगम ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जिनमें प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, पंचास्तिकाय आदि आध्यात्मिक ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध हैं। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भी पल्लीवालों ने अमूल्य योगदान किया है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्र पल्लीवाल जाति के ही हैं।

(4-9) शिक्षा का प्रचार-प्रसार

पल्लीवाल जाति में शिक्षा का प्रचार भी हमेशा से ही रहा है। इसी कारण प्राचीन समय से ही इस जाति में कई कवि एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्वान होते रहे हैं। आज भी यह जाति पूर्णतः शिक्षित है। बहुत से लड़के तथा लड़कियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त हैं तथा सरकारी सेवा में उच्च पदों पर कार्यरतहैं। आज समाज ने वहुत सी आधारहीन रूढ़ियों को समाप्त कर दिया है, लेकिन इसके साथ ही लोगों में धार्मिक भावना (रुचि) भी कम हो गई है।

(4-10) रीति-रिवाजः—

पल्लीवाल जाति के सामाजिक रीति-रिवाज हिन्दुओं के रीति-रिवाजों से बहुत प्रभावित हैं। पहले समय में पल्लीवालों के रीति-रिवाज क्या थे इसकी जानकारी दो छोटी पुस्तकों से मिलती है; वे पुस्तकें हैं—'पल्लीवाल हितैषिणी' तथा 'पल्लीवाल रीति प्रभाकर'।

'पल्लीवाल हितैषिणी' के मुख-पृष्ठ के अनुसार इसे मंगूरा निवासी श्री नन्द किशोर पटवारी ने सब पल्लीवाल भाइयों की सहमति से लिखा तथा प्रकाशित कराया। इसका प्रथम बार मुद्रण वि. सं. 1967 (ई० सन् 1910) में 'बाल किशन प्रिन्टिग प्रेस' (मै०—लाला कन्हैया लाल बाल किशन, बम्बई) में हुआ। कुल प्रकाशित प्रतियों की संख्या 250 थी। पुस्तक के अन्त में उन सब पल्लीवाल भाइयों के नाम (हस्ताक्षर) हैं जिन्होंने इस पुस्तक में लिखित रीति-रिवाजों को मंजूरी (सहमति) प्रदान की। जिन व्यक्तियों के हस्ताक्षर हैं वे निम्न प्रकार हैं—सर्व श्री नन्द-किशोर मु० मंगूरा, भिखरीमल मु० कुथरो प्यारेलाल मु० मुरेड़ा, चिरंजीलाल व श्यामलाल मु० रायभा, श्यामलाल मु० हसेला, विजैराम मु० गडीमा, गिरवर मु० कठवारी, चिरंजीलाल मु० कठ-वारी, चिरंजीलाल मु० कुथरो, खचेरमल मु० अंगूठी, चैनीराम मु० रूनकता, मूलचन्द मु० अरसेना, मूलचन्द मु० गढ़ी तिरखा, जाह-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिया मु० परिखभ, दीपचन्द व रतनलाल मु० हंसेला, नरायनप्रसाद मु० लडागडा, ताराचन्द मु०कुथरौ,, नकटाराम मु० कुथरौ, झम्मन लाल मु० कुथरो, मुरलीधर मु० कुथरौ, छोटेलाल मु० कठवारी, विरधीलाल मु० भिलावटी, पीनामल मु० रहपुरा अहीर, डूंगरसिंह मु० रहपुरा, अहीर, इमरता मु० कासौठी, परसादी मु० कासौठी, बलवंतसिंह मु० मई, मोतीलाल मु० मई, टीकाराम मु० रायभा, मूलचन्द मु० मंगूरा, घनश्याम दास मु० खेरासाधन, रामचन्द मु० पनवारी, किरोरी मल मु० आगरा, माईथान, मुन्शी नन्दकिशोर व चन्द्रभान, पन्नीलाल मु० बस्तई, शिवचरन मु० रायभा, चिरंजीलाल मु० मिढाकुर, शंकरलाल मु० मिढाकुर, कल्लूराम व चोखेलाल मु० मिढाकुर छिद्दामल मु० डावली, जीवाराम मु० डाबली, गोपीचन्द मु० रहपुरा जाट, परसादीलाल मुनीम मु० रहपुरा जाट, गनेशीलाल मु० रायभा, उत्तमचन्द मु० भुडुरूसू, छिद्दा मु० नगला अकपुरा, तोताराम मु० किरावली, भूपाल मु० किरावली, गनेसीलाल मू० बसईया, मटरेमल म० आगरा, कन्हैयालाल मु० बसईया, मंगलसैन मु० अन्दूस, रामचंद मु० पनवारी, बिहारीलाल मु० रुनकता, कन्हीयालाल मु० घनौली. रामचन्द मु० गोपऊ. फतेलाल मु० महदऊ, गंगाधर मु० उमेदीपुरा, संकरलाल मु० संजा का नगरा, नरायन परसाद मु० गढी चन्द्रमन।

यह पुस्तक कई मामलों में बहुत महत्वपूर्ण है। एक तो इससे उस समय के प्रचलित रीति-रिवाजों का पता चलता है। दूसरे इससे यह सिद्ध होता है कि प्राचीन समय में हमारे पूर्वज समय-समय पर मीटिंग (सभा) आयोजित किया करते थे तथा समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया करते थे। इस प्रकार की मीटिंग में सम्मिलित होने के लिए सभी गाँवों से लोग आया करते थे। आने जाने के साधनों का अभाव होने पर भी काफी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या में लोग एकत्रित हुआ करते थे। वे इन मीटिंगों में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय भी लिया करते थे।

एक अन्य बात जो इससे उजागर होती है वह है कि आगरा के आस-पास के किन-किन गाँवों में पल्लीवाल रहते थे। हमारे बुजुर्गों के क्या-क्या नाम थे, यह भी पता चलता है।

पल्लीवाल जाति के सामाजिक रीति-रिवाजों से सम्बन्धित 'पल्लीवाल रीति प्रभाकर' नामक एक अन्य पुस्तक का प्रकाशन विक्रम सं० 1970 (सन् 1914) में हुआ था। इस पुस्तक को लाला गुलाबचन्द जी, लाला बुद्धसिंह जी पटवारी वरारा तथा लाला निहालचन्द जी ने वनाया और मास्टर कन्हैयालाल जी बी ए.एल टी. तथा मास्टर मंगलसेन जी ने 'शोध वैदिक-यन्त्रालय, अजमेर में छपवाकर प्रकाशित कराया। इस पुस्तक की भूमिका से पता चलता है कि उस समय समाज में शिक्षा का अभाव था तथा समाज में कुरीतियाँ व्याप्त थीं। समाज की उन्नति के उद्देश्य से ही आगरा के बरारा नामक ग्राम में 'वंशोन्नति-सभा' की स्थापना वि. सं. 1967 (सन् 1911) में की गई। तदुपरान्त पल्लीवालों के रीति-रिवाजों को समाज में प्रचारित करने के उद्देश्य से उक्त पुस्तक का प्रकाशन किया गया।

पुराने रीति-रिवाजों की अब प्रचलित रीति-रिवाजों से तुलना करने पर पता चलता है कि आज बहुत से व्यर्थ के रिवाजों को समाप्त कर दिया गया है। विभिन्न अवसरों पर मन गढंत कुदेवों को पूजना भी वहुत कम हो गया है। घर में किसी के मर जाने पर पहले ब्राह्मणों को खिलाया जाता था तथा समाज को भोज दिया जाता था, लेकिन आजकल मृत्युभोज की कुरीति भी वहुत कम हो गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज में पहले बाल-विवाह का प्रचलन था। अब वह बिल्कुल समाप्त हो गया है । 60-70 वर्ष पहले तक अनमेल विवाहों का भी प्रचलन था। पचास वर्ष के पुरुष भी पत्नी के मर जाने के बाद नाबालिक कन्याओं से विवाह कर लेते थे। यह कुप्रथा प्राय: भारत की सभी जातियों में प्रचलित थी। लेकिन ऐसा अब शायद किसी भी जाति में नहीं होता है।

सामान्यत: समाज में पुरुष कई शादियाँ नहीं करते हैं। स्त्रियों में भी पुनर्विवाह प्राय: नहीं होता है। समाज में अन्तर्जातीय विवाह करते हैं लेकिन फिर भी अधिकांश लोग समाज में ही शादी विवाह करना पसंद करते हैं।

(4-11) जातीय सभायें/संस्थायें—

पल्लीवाल जाति को आज हम जिस संगठित रूप में देख रहे हैं उसके पीछे समाज के पुराने लोगों का बहुत योगदान रहा है। आज से लगभग सौ वर्ष पहले तक समाज एक प्रकार से असंगठित था। उसका कोई अपना ऐसा मंच नहीं था जिससे समाज की कोई एक ध्वनि आती हो। समाज को संगठित तथा उन्नतशील बनाने के उद्देश्य से एक संस्था की स्थापना 11 दिसम्बर सन् 1892 में समाज के उत्साही एवं शिक्षित युवकों द्वारा की गई। इस संस्था का नाम 'पल्लीवाल धर्म प्रवर्धनी क्लब' रखा गया। जिस समय इस संस्था की नींव रखी गई, उस समय 'आर्य-समाज' जैसे लोकप्रिय सुधारवादी आन्दोलनों का जोर था। पल्लीवालों की उक्त संस्था भी इनसे प्रभावित रही तथा इस संस्था का भी मुख्य उद्देश्य समाज में फैली कुरीतियों को दूर करना तथा समाज को प्रगतिशील बनाना रहा। कुछ समय बाद इस संस्था का नाम परिवर्तित करके 'पल्लीवाल जैन महासमिति' कर दिया गया। इसका प्रथम अधिवेशन सन् 1920 में आगरा में हुआ। इस संस्था ने बीस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ष की अवधि तक समाज की संकुचित विचारधारा को दूर करने तथा समाज को संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। तदोपरान्त कार्यकर्त्ताओं के अभाव में यह संस्था लगभग समाप्त हो गई। इस संस्था के संगठनात्मक कार्यों में सबसे बड़ी उपलब्धि पल्लीवाल समाज के विभिन्न घटकों (मुरैना तथा ग्वालियर के पल्लीवाल, कन्नौज, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद के पल्लीवाल, सिकन्दरा के सैलवाल, पालम तथा अलवर के जैसवाल) में आपस में विवाह सम्बन्ध स्थापित करवाना रही। इन संस्थाओं से सम्बन्धित लोगों में मुख्य थे—मास्टर कन्हैयालाल जी, रायसहाब कल्याणराम जी, सेठ रामचन्द जी तथा सेठ गोपीचन्द जी आदि।

समाज को फिर से संगठनात्मक नेतृत्व प्रदान करने के लिए समय-समय पर विभिन्न लोगों द्वारा प्रयत्न किये जाते रहे। इसी के फलस्वरूप 20 अप्रैल सन् 1969 को 'श्री अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा' की स्थापना की गई। इस संस्था को स्थापित करने में डा० क्रान्ति कुमार जैन, डा० किशनचन्द जैन, श्री ब्रिजेन्द्र कुमार जैन तथा श्री प्रकाश चन्द जैन का मुख्य योगदान रहा।

(4-12) पत्रकारिता—

समाज का बुद्धि जीवी वर्ग इस बात का अनुभव कर रहा था कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक समाज की सूचनाएं पहुँचाई जाएें तथा सदियों से चली आ रही रूढिवादिता तथा कुरीतियों को दूर करने की अपील की जाए, जब तक ऐसा नहीं होगा, संस्थाओं के प्रयोजन अधिक सफल नहीं होंगे। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समाज की पत्रिका निकालने का प्रयत्न लगभग 60 वर्ष पूर्व किया गया। सन् 1925 में 'पल्लीवाल जैन' नामक पत्रिका का प्रकाशन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रारम्भ हुआ। इसके संपादक पं. चिरंजीलाल जी थे। प्रारम्भिक वर्षों में यह पत्रिका त्रैमासिक थी। सन् 1934 में इसका मासिक प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका के संपादक क्रमशः श्री हजारी लाल जैन, श्री प्रताप चन्द जैन तथा श्री सूरजभान जैन 'प्रेम' रहे। वाद में इस पत्रिका का संपादन कार्य क्रमशः मा० रामसिंह जैन, श्री नेमीचन्द वरवासिया तथा श्री गोर्धनदास जैन द्वारा किया गया।

इसके अतिरिक्त सन् 1940 में 'पल्लीवाल वन्धु' का प्रकाशन किया गया। इसके संपादक श्री रोशनलाल जैन थे। सन् 1963 में 'जैन-संगम' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ; इसके संपादक श्री महावीर कोटिया थे। अन्ततोगत्वा इन सभी पत्रिकाओं के प्रकाशन न्यूनाधिक अवधि के पश्चात् वन्द हो गये।

सन् 1969 में 'श्री अखिल भारतीय,पल्लीवाल जैन महासभा' के मुख-पत्र के रूप में 'पल्लीवाल जैन पत्रिका' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके प्रकाशन का शुभारम्भ आगरा से हुआ तथा इसके प्रथम संपादक मा० रामसिंह जैन थे। तत्पश्चात् इसका प्रकाशन जयपुर से हुआ तथा कुछ वर्षों बाद पुनः यह पत्रिका आगरा आ गई। आजकल इसका प्रकाशन मथुरा से हो रहा है।

(4-13) जनगणना—

समाज की जनगणना का प्रथम प्रयास सन् 1916 में लाला बंशीधर जी द्वारा किया गया। यह जनगणना एक वर्ष में पूर्ण हुई। इस कार्य में लाला सूरजभान जी 'प्रेम' लाला गोपीलाल जी तथा मास्टर कन्हैयालाल जी का विशेप सहयोग रहा। सन्1948 में पल्लीवालों के परिवारों की अनुमानित संख्या लगभग 4 000 है तथा कुल जनसंख्या लगभग 20,000 है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(4-14) इतिहास लेखन—

पल्लीवाल जाति के इतिहास से सम्बन्धित सबसे प्राचीन पुस्तक 'पल्लीवाल-परीक्षा' का उल्लेख मिलता है। यह हस्तलिखित पुस्तक संवत् 1300 में लिखी गई थी। इसका उल्लेख 'महाकवि चन्द के वंशधर' नामक लेख में प्रो. रमाकान्त त्रिपाठी[23] ने किया है। लेकिन यह पुस्तक अनुपलब्ध होने के कारण इसकी कोई विशेष जानकारी नहीं है।

अन्य बहुत सी जातियों की तरह पल्लीवाल जाति में भी राय भाट (चारण-भाट) का प्रचलन था। इन रायों का मुख्य कार्य जाति के विभिन्न वंशों / गोत्रों की वंशावलियों को बनाना तथा उन्हें पूर्ण करना था। यदि जाति में कुछ विशेष कार्य हुआ हो या कोई विशेष घटना घटी हो तो उसका भी वे दस्तावेज तैयार करते थे। पल्लीवाल जाति से सम्बन्धित वंशावलियों तथा घटनाओं का पूर्ण दस्तावेज 'प्रार्थना-पुस्तक' नामक हस्त लिखित कृति में उपलब्ध है। लेकिन इसमें क्रमवार घटनाओं का उल्लेख न होने तथा बहुत सी महत्वपूर्ण घटनाओं को छोड़ देने के कारण इसे इतिहास नहीं कहा जा सकता है।

प्रस्तुत इतिहास से पूर्व जाति के इतिहास को क्रमबद्ध तरीके से लिखने के दो प्रयास हुये हैं। सन् 1922-23 में सर्व प्रथम 'लघु पल्लीवाल इतिहास' लिखा गया। इसका प्रकाशन सतना (रीवा) से हुआ था। सन् 1962 में पल्लीवाल जैन इतिहास' का प्रकाशन भरतपुर से हुआ था। इसके लेखक श्री दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविन्द' थे। भरतपुर से प्रकाशित इस इतिहास को लिखने में श्वेताम्बर पल्लीवालों से सम्बन्धित लेखों/मूर्ति लेखों का विशेष आधार लिया गया था। दिगम्बर पल्लीवालों के ऐतिहासिक तथ्य तथा मूर्ति लेखों आदि का उपयोग नहीं किया गया था। अतः यह इतिहास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी अपूर्ण रहा। इसी कारण प्रस्तुत इतिहास लिखा गया है; इसे लिखने में जाति से सम्बन्धित प्राप्त सभी सामग्री का यथा सम्भव पूर्ण उपयोग किया गया है।

(4-15) शिक्षण संस्थाऐं, धर्मशालाएँ तथा औषधालय आदि—

आज समाज द्वारा संचालित कई विद्यालय हैं। एक हाई स्कूल तथा जूनियर हाई स्कूल आगरा में हैं। एक पब्लिक स्कूल लगभग दो वर्ष पूर्व बरारा (आगरा) में खोला गया। सेठ छदामी लाल जी द्वारा स्थापित एक डिग्री कॉलेज (श्री सी. एल. जैन डिग्री कॉलेज) फिरोजाबाद में है। समाज की कई धर्मशालाएँ भी हैं। धूलिया गंज, आगरा, अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, भरतपुर तथा हिण्डौन आदि में एक एक धर्मशाला है। सेठ छदामीलाल जी द्वारा बनवाई एक विशाल धर्मशाला फिरोजाबाद में है। कुछ धर्मार्थ औषधायल भी है। आगरा में धूलिया गंज में स्थित 'श्री महावीर होम्योऔषधालय' हैं। अजमेर के पाल-बीचला में 'विजय पौली क्लिनिक' है, इसमें आधुनिक पद्धति पर आधारित विभिन्न चिकित्सा सुविधाएँ हैं। अलवर में भी आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति पर आधारित 'श्री चन्द्र प्रभु औषधालय' है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचम—अध्याय

पल्लीवाल जाति के विशिष्ट व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय

पल्लीवाल जाति में समय-समय पर बड़े-बड़े विद्वान पैदा होते रहे हैं जिन्होंने जैन धर्म का प्रचार किया तथा धर्म के मर्म को समझ कर अपने जीवन में भी उतारा। इन विद्वानों में से कुछेक तो बहुत प्रसिद्ध हैं तथा पूरा जैन समाज उनसे परिचित है, लेकिन बहुत से ऐसे भी हैं जिनके बारे में पल्लीवाल जाति के अधिकतर लोग नहीं भी जानते हैं। जनसंख्या की दृष्टि से पल्लीवाल जाति एक छोटी सी जैन जाति है, लेकिन इसमें इतने बड़े-बड़े विद्वान व विशिष्ट पुरुष हुए हैं, यह इस जाति के लिए बहुत ही गौरव की बात है। यहाँ पर उन्हीं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

(5-1) कवि धनपाल पल्लीवाल

धनपाल नाम के दो विद्वान हुए हैं। एक ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुए हैं। ये ब्राह्मण थे तथा बाद में दिगम्बर जैन धर्म अपना लिया था। ये बहुत विद्वान थे। इन्होंने संस्कृत में 'तिलक मंजरी' नामक गद्य की रचना की।

दूसरे धनपाल कवि तेरहवीं शताब्दी में हुए हैं। इन्होंने 'तिलक मंजरी सारः' नामक संस्कृत काव्य की रचना की। अपनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचना के प्रारम्भिक पाँच पदों में इन्होंने स्पष्ट किया है कि इनकी यह रचना उपरोक्त धनपाल के 'तिलक मंजरी' पर ही आधारित है। 'तिलक मंजरी सारः' के रचयिता कवि धनपाल ने अपनी इस रचना के अन्त में अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है—

'अणहिल्लपुरख्यातः पल्लीवाल कुलोद्भवः।
जयत्यशेषशास्त्रज्ञः श्री मान् सुकविरामनः॥ 1 ॥

सुक्लिष्ट शब्द सन्दर्भमद्भुतार्थं रसोर्मि यत्।
येन श्री नेमिचरितं महाकाव्यं विनिर्ममे॥ 2 ॥

चत्वारस्तनुजास्तस्य ज्येष्ठस्तेषु विशेषवित्।
अनन्तपालश्चक्रे यः स्पष्टाः गणितपाटिकाम्॥ 3 ॥

धनपालस्ततो नव्य काव्य शिक्षा परायणः।
रत्नपालः स्फुरन्प्रज्ञो गुणपालश्च विश्रुतः॥ 4 ॥

धनपालोऽल्पतुश्चापि पितुरश्रान्तशिक्षया।
सारं तिलकमंजर्याः कथायाः किंचिदग्रथम्॥ 5 ॥

इन्दु दर्शन-सूर्यांक (12ɔ1) वत्सरे मासि कार्तिके।
शुक्लाष्टम्यां गुरावेष कथासारः (:) समर्पितः॥ 6 ॥

ग्रन्थः किन्चदम्यधिकः शतानि द्वादशान्यसौ।
वाच्यमानः सदा सद्भिर्यावदर्कं च नन्दतात्॥ 7 ॥

भावार्थ—रचयिता के पिता आमन का जन्म अणहिल्लपुर (पाटण) के सुप्रसिद्ध कुल पल्लीवाल में हुआ था। आमन एक सुप्रसिद्ध महान् कवि हैं तथा उन्होंने 'श्री नेमिचरितम्' नामक महाकाव्य की रचना की है। इनके चार पुत्र हैं, उनमें सबसे बड़े अनन्तपाल हैं जिन्होंने 'स्पष्ट पाटिगणित' की रचना की। दूसरे धनपाल स्वयं हैं जिसने इस काव्य की रचना की। अगले दो पुत्र रत्नपाल तथा गुणपाल हैं। पिता द्वारा दी गई शिक्षा के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कारण ही धनपाल काव्य रचना के क्षेत्र में दक्ष हैं तथा इस ही के परिणाम स्वरूप वे इस रचना को बना सके हैं। यह कार्य इन्दु-दर्शन सूर्यांक सम्वत् यानि कि वि० सं० 1261 के कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन गुरुवार को पूर्ण किया। इस काव्य में बारह सौ से कुछ अधिक पद हैं। कवि ने ऐसी आशा प्रगट की है कि जब तक सूर्य रहेगा, इसे पढ़ने वाले इससे आनन्द प्राप्त करेंगे।

यहाँ से यह स्पष्ट है कि धनपाल का जन्म पल्लीवाल कुल में हुआ था। मुनि श्री जिनविजय जी तथा श्री नाथूराम प्रेमी के अनुसार 'पल्लीपाल' शब्द 'पल्लीवाल' का ही प्राकृत भाषा का रूपांतरण है। अत: कवि धनपाल पल्लीवाल जात्युत्पन्न ही थे। उस समय गुजरात के पश्चिमी भाग मैं चालुक्यों के सोलंकी साम्राज्य की राजधानी अणहिल्लपुर (पाटण) के सुप्रसिद्ध पल्लीपाल कुल में कवि के पिता आमन का जन्म हुआ था। आमन भी विद्वान थे तथा इन्होंने नेमिचरितम्' की रचना की। आमन के बड़े पुत्र अनन्तपाल ने भी 'पाटिगणित' लिखा। इससे पता चलता है कि आमन का पूरा परिवार बहुत पढ़ा-लिखा था तथा ये सभी विद्वान थे। लेकिन दुर्भाग्यवश इस परिवार के धनपाल की मात्र एक रचना 'तिलक मंजरी सार:' ही उपलब्ध है। अन्य रचनायें या तो नष्ट हो गईं अथवा अभी तक प्रकाश में नहीं आई हैं।

मुनि श्री जिनविजय जी के अनुसार धनपाल पल्लीवाल दिगम्बर थे। श्वेताम्बर पंडित लक्ष्मीधर पल्लीपाल-धनपाल के समकालीन थे। ये भी अणिहल्लपुर के निवासी थे तथा इन्होंने भी 'तिलक मंजरी कथा सार' की रचना वि० सं० 1281 में की, लेकिन इन्होंने अपनी रचना में न तो ग्यारहवीं शताब्दी के धनपाल का (जिन्होंने मूल 'तिलक मंजरी' लिखी) और न ही पल्ली-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाल का (जो अणिहल्लपुर के ही निवासी थे तथा लक्ष्मीधर से मात्र बीस वर्ष पहले ही लोकप्रिय 'तिलक मंजरी सार:' की रचना की) कोई उल्लेख किया है। ऐसा मानना तो गलत होगा कि लक्ष्मीधर अपने नगर के तथा अपने समकालीन लोक प्रिय कवि पल्लीपाल धनपाल तथा पं० आमन से अपरिचित रहे हों। पं० लक्ष्मीधर ने इनके नामों का उल्लेख नहीं किया उसका मात्र कारण यह था कि ये सभी दिगम्बर थे तथा पं० लक्ष्मीधर पल्लीपाल-धनपाल को अपना प्रतिद्वन्दी मानते थे। पल्लीपाल धनपाल दिगम्बर थे, इसी कारण श्वेताम्बर शास्त्र भण्डारों में उस समय की अन्य सभी रचनाएँ तो सुरक्षित हैं, लेकिन पल्ली-पाल धनपाल, पं० आमन तथा पं० अनन्तपाल की रचनाएँ नहीं हैं।

इस प्रकार पं० आमन, पं० अनन्तपाल तथा कवि धनपाल पल्लीवाल जाति के थे तथा दिगम्बर जैन धर्मानुयायी थे। इनका पूरा परिवार धार्मिक कार्यों में संलग्न था।

कवि धनपाल पल्लीवाल कृत 'तिलक मंजरी सार:' लोक कथा पर आधारित संस्कृत का एक महाकाव्य है जिसमें एक ओर तो राजकुमार हरिवाहन तथा विद्याधरी राजकुमारी तिलक मंजरी तथा दूसरी ओर राजकुमार समरकेतु तथा राजकुमारी मलयसुन्दरी के प्रेम-प्रसंगों का वर्णन है। इस महाकाव्य में अनु-ष्टुभ् छन्दों का प्रयोग किया गया है। छन्दों की कुल संख्या 1205 है जिनमें से अंतिम 7 छंदों में कवि ने अपना परिचय दिया है। शेष छंदों को नौ प्रयाणकम् (अध्यायों) में विभक्त किया है। प्रत्येक अध्याय के अंत में कवि ने 'विश्राम' शब्द का प्रयोग किया है। प्रथम अध्याय के प्रथम छंद में कवि ने प्रथम तीर्थंकर ऋषभ-देव का स्मरण करते हुए उनसे आशीर्वाद माँगा है। यह छंद निम्न प्रकार है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'श्री नाभेयः श्रियं दिश्यात् यस्यांशतटयोर्जटाः ।
भेजुर्मुखाम्बुजोपान्तभ्रान्तभृङ्गावलिभ्रमम् ।। 1 ।।

यह एक सुन्दर काव्य है जिसमें आवश्यकतानुसार विभिन्न अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है ।

इसका सर्वप्रथम प्रकाशन 'लालभाई दलपतभाई संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद' से सन् 1969 में हुआ था जिसकी विस्तृत भूमिका गुजरात कालेज, अहमदाबाद के सीनियर लेक्चरर श्री नारायन मनीलाल कंसारा ने लिखीत है ।

(5-2) तयागच्छीय श्रीमद् विद्यानन्दसूरि एवं श्री धर्मघोषसूरि

पल्लीवाल जातीय प्रसिद्ध श्रेष्ठि नेमड़ के पुत्र राहड़ तथा उनके पुत्र के पुत्र जिनचन्द्र की चाहिणी नामा धर्म परायणा सुशीला स्त्री से एक कन्या तथा पाँच पुत्र हुए थे। चौथा और पांचवा पुत्र वीर धवल और भीमदेव थे। नेमड़ का समस्त परिवार दृढ़ जैन धर्मी, धर्म कर्म परायण गुरु भक्त एवं संस्कार पवित्र था ।

नेमड़ के कुल में इन दो-वीर धवल और भीमदेव ने संसार की असारता का विचार करके भव सुधारने की शुभ भावनाओं के उदन से आकर्षित होंकर तथागच्छीय देवभद्रसूरि, विजयचन्द्र-सूरि और देवेन्द्र सूरि की आम्नाथ में वि० सं० 1302 में उज्जैन नामक प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक नगरी में भगवती दीक्षा ग्रहण की और श्री वीरधवल मुनि विद्यानन्द और श्री भीमदेव धर्मकीर्ति नाम से क्रयशः विश्रुत हुए ।

दोनों भ्राताओं ने गुरू सेवा में रहकर कठिन संयम साध कर उत्तम चारित्र प्राप्त किया एवं शास्त्राभ्यास करके प्रशंसनीय विद्वता प्राप्त की । विश्रानन्दसूरि ने 'विद्यानन्द' नामक व्याकरण बनाया । श्री देवेन्द्र सूरि द्वारा रचित 'नव्य कर्म' ग्रन्थों का श्री धर्मघोपसूरि (धर्म कीर्ति) के साथ रह कर संपादन किया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्यानन्द व्याकरण एवं नव्य कर्म ग्रन्थों का संपादन ये दो कार्य ही इनकी उद्‌भट विद्वता का स्पष्ट परिचय करा देने को पर्याप्त हैं। वि० सं० 1323 में इन दोनों भ्राताओं के तेज तप, संयम एवं शास्त्राभ्यास, विद्वतादि से प्रसन्न होकर श्री विद्यानन्द मुनि को सूरि पद और धर्मकीर्ति को उपाध्याय पद प्रदान किया। वि० सं० 1327 में श्री देवेन्द्रसूरि का मालवा में स्वर्गवास हो गया। उस दिन के ठीक तेरह दिन पश्चात् श्री विद्यानन्द सूरि भी स्वर्गवासी हो गये। उपाध्याय धर्मकीर्ति धर्मघोष सूरि नाम से पद पर विराजे। श्री धर्मघोषसूरि बड़े विद्वान थे और इनका गुर्जर सम्राटों तथा माण्डव के शासकों पर अच्छा प्रभाव था। ये विद्वान होने के साथ साथ मन्त्रवादी भी थे। इन्होंने बहुत से लोगों को जैन धर्म में दृढ़ किया तथा जैन धर्म का प्रचार किया।

श्री धर्मघोष सूरि ने कई ग्रन्थ लिखे। संघाचाराख्य, भाण्य-वृत्ति, सुअधमेतिस्तव, कायस्थिति, भवस्थितिस्तवन, चतुर्विंशति पर जिनस्तवन 24, शास्त्राशमति नाम का आदि स्तोत्र, देवेन्द्र-निशम् नाम का श्लेष स्तोत्र, युयंयुवा इति श्लेसस्तुतयः, और जयऋषभेति आदि स्तुत्यादयः इनकी ही रचनाएँ हैं।

इस प्रकार साहित्य और धर्म की प्रभावना करते हुए श्री धर्म-घोष सूरि का स्वर्गवास वि० सं० 1357 में हुआ। प्राचीन जैना-चार्यों में विद्वता एवं धर्म-प्रचार-प्रसार की दृष्टि से आपका स्थान बहुत ऊँचा है।

(5-3) पं० रूपचन्द

रूपचन्द नाम के तीन विद्वान हुये हैं। पाण्डे रूपचन्द कविवर पंडित बनारसीदास जी के गुरु थे। इनका नामोल्लेख पं० बना-रसीदास जी ने अपने आत्म-चरित 'अर्द्ध-कथानक' में किया है। पाण्डे रूपचन्द जी ने 'समवसरण पूजा' तथा 'केवलज्ञान कल्याण चर्चा' की रचना की तथा इनकी प्रशस्तियों में अपना पूर्ण परिचय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी दिया है। ये अग्रवाल जाति के थे तथा इनका गोत्र गर्ग था। पाण्डे रूपचन्द जी की मृत्यु वि० सं० 1694 में हुई।

दूसरे पं० रूपचन्द पं० बनारसीदास जी के उन पाँच साथियों में से एक थे जिनके साथ बनारसीदास जी परमार्थ की आध्यात्मिक चर्चायें किया करते थे। इनका नामोल्लेख पं० बनारसी दास जी ने अपने 'अर्द्ध-कथानक' तथा 'नाटक समयसार' दोनों में किया है। 'नाटक समयसार' की प्रशस्ति में कविवर लिखते हैं—

'रूपचन्द पंडित प्रथम, दुतिय चतुर्भुज नाम ।।
तृतिय भगौतीदास नर, कौंरपाल गुनधाम ।।
धर्मदास ये पंच जन, मिलि बैठें इक ठौर ।
परमारथ चरचा करें. इनके कथा न और ।।'

इन पंडित रूपचन्द ने दोहा परमार्थ या परमार्थी दोहा शतक, परमार्थ गीत या गीत परमार्थ, पंच कल्याण मंगल या पंच मंगल पाठ, अध्यात्म सवैया, खटोलना गीत तथा स्फुट गीत की रचनाएँ की हैं।

तीसरे रूपचन्द पं० वनारसीदास जी के बहुत वाद में हुये हैं। ये भी उपरोक्त दो रूप चंदों की तरह आगरा के रहने वाले थे। इन्होंने पं० वनारसीदास जी के 'नाटक समयसार' की टीका संवत् 1798 में की। इनके द्वारा की गई प्रतिलिपि की कुछ हस्तलिखित रचनाएँ मोती कटरा (आगरा) के दिगम्बर जैन मन्दिर में भी मौजूद हैं। [26]

पं. नाथूराम जी प्रेमी के अनुसार रूपचन्द नाम के चार विद्वान हुए हैं। [36] इनके अनुसार पाण्डे रूपचन्द तथा 'समवसरण पाठ' (संस्कृत) के रचयिता रूपचन्द दो अलग-अलग व्यक्ति हैं : लेकिन अधिकतर विद्वान श्री प्रेमी से सहमत नहीं हैं तथा वे 'समवसरण पूजा' के रचयिता पाण्डे रूपचन्द को ही मानते हैं।

एक जनश्रुति के अनुसार 'पंच मंगल पाठ' के रचयिता पं० रूपचन्द पल्लीवाल जाति के थे। अतः पं० बनारसीदास जी के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाँच साथियों में से एक पं० रूपचन्द पल्लीवाल थे। इनका जन्म कन्नौज में हुआ था तथा बाद में ये आगरा आकर रहने लगे थे। चूँकि पं० बनारसीदास 400 वर्ष पूर्व हुये हैं, अत. ये रूपचन्द जी भी400वर्ष पूर्व के विद्वान हैं। इनकी पत्नी का नाम मणि या भणि था। इनके कोई भी सन्तान नहीं थी। इन्होंने जो रचनाएँ की हैं, उनका उल्लेख ऊपर ही कर चुके हैं। 'पंच मंगल पाठ' इनकी सर्वाधिक लोक प्रिय रचना है। प्रतिदिन अभिषेक के समय इसे प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिर में पढ़ा जाता है। इस पाठ में तीर्थंकर भगवान के गर्भ, जन्म, ज्ञान, तप और निर्वाण के समय जो लक्षण प्रकट होते हैं उनका दिग्दशन बड़ी सुन्दर तथा सरल भाषा में कराया हैं। पं० रूपचन्द जी ने केवल ज्ञान की महिमा का वर्णन निम्न प्रकार से किया है—

"क्षुदा तृषा अरु राग द्वेष असुहावनो।
जन्म जरा अरु मरण त्रिदोष भयावनो॥
रोग शोक भय बिस्मय अरू निद्रा हनी।
खेद स्वेद मद मोह अरति चिन्ता गनी॥
गनिये अठारह दोष तिन कर रहित देव निरंजनो।
नव परम केवल लब्धि मंडित शिवरमण मन रंजनो॥
श्री ज्ञान कल्याणक सुमहिमा सुनत अति सुख पाइयो।
भणि रूपचन्द सुदेव जिनवर जगत मंगल गाइयो।"

(5-4) दीवान जोधराज

दीवान जोधराज का जन्म विक्रम संवत् 1790 की कार्तिक शुक्ला पंचमी को हुआ था। ये पल्लीवाल जात्युत्पन्न डगिया चौधरी गोत्रीय थे। आप हरसाणा (हरसाने) नगर के रहने वाले थे, जिसके शासक महाराजा केसरीसिंह थे यह नगर अलवर जिले में स्थित है। जोधराज महाराजा-केसरीसिंह के राज्य-दरबार में दीवान पद पर आसीन थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक किंवदन्ति के अनुसार महाराजा केसरीसिंह आपसे अप्रसन्न हो गये। उन्होंने आपको मृत्यु दण्ड की सजा दे दी। महाराजा की आज्ञानुसार दीवान जोधराज को तोप के सामने खड़ा कर दिया गया। जैसे ही तोप दागी जाने वाली थी कि दीवान जोधराज ने चांदनपुर की अतिशय युक्त भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा का ध्यान लगाया तथा संकल्प किया कि 'यदि मैं जीवित रहा तो सर्व प्रथम भगवान महावीर के दर्शन करूँगा तथा मन्दिर का जीर्णोद्धार कराऊँगा। इतने में तोप दाग दी गई लेकिन तोप नहीं चली। तीन बार यह प्रयास किया गया, लेकिन तोनों बार तोप नहीं चली। यह बात जब महाराजा केसरीसिंह को मालूम हुई तो उन्होंने दीवान जोधराज को मुक्त कर दिया तथा वे स्वयं दीवान जोधराज के साथ भगवान महावीर की अतिशय युक्त प्रतिमा के दर्शन करने गये। वाद में दीवान जोधराज ने मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया।

इस घटना का उल्लेख पं० कैलाशचन्द्रजी शास्त्री (बनारस) ने गोरखपुर से प्रकाशित पत्र 'कल्याण' के तीर्थांक (वर्ष 31, संख्या 1) में प्रकाशित अपने लेख में भी किया है। लेकिन यह मात्र किंवदन्ति है। इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह स्पष्टीकरण स्वयं पं० कैलाशचन्द जी ने 'जैन सन्देश' (मथुरा) के 30 जून 1986 के अंक में अपने सम्पादकीय में दिया है।[40]

दीवान जोधराज ने कई मूर्तियों की प्रतिष्ठाएँ भी करायीं थीं। उनमें से एक मूर्ति मथुरा के राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित है जिसकी प्रतिष्ठा संवत 1826 में कराई थी[41]। श्वेताम्बर समाज का मानना है कि दीवान जोधराज श्वेताम्बर मतावलम्वी थे क्योंकि उनके द्वारा प्रतिष्ठापित मूर्ति श्वेताम्बरी हैं। वस्तुत: वे किसी आम्नाय विशेष के हटी नहीं थे। उनके हृदय में श्वेता-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविवर पं. श्री दौलतरामजी

(अलवर के मूर्धन्य चित्रकार श्री विष्णु जी शर्मा की तूलिका से साभार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्बर और दिगम्बर दोनों आम्नायों के लिए एक सा आदर भाव था। यदि ऐसा नही होता तो वे दोनों आम्नायों के उद्धार की बात नहीं सोचते। एक ओर तो श्वेताम्बर मूर्तियों की प्रतिष्ठाएँ करायीं तथा दूसरी ओर भगवान महावीर की दिगम्बर प्रतिमा के दर्शन किये तथा मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। भगवान महावीर की यह प्रतिमा मूलतः एवं सर्वतः दिगम्बर प्रतिमा ही है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि दीवान जोधराज दिगम्बर आम्नाय के प्रति अधिक उदार थे। वास्तव में होता यह है कि यदि कोई भी राजा या उच्च-पदाधिकारी अधिक लोकप्रिय हो जाता है तो सभी धर्मों वाले उसे अपने धर्म का मानने वाला कहते हैं। उदाहरण लिए राजा श्रेणिक को ही ले लीजिए। उसे जैन, बौद्ध तथा हिन्दू सभी अलग-अलग अपने धर्म का मानने वाला कहते हैं। वस्तुत; जो भी लोकप्रिय बड़ा राजा या अधिकारी होता है वह सभी धर्मों के प्रति समान आदर भाव रखता है। यही बात दीवान जोधराज के लिए भी समझनी चाहिए।

(5-5) कविवर पं० दौलतराम जी—

दौलतराम नाम के दो विद्वान हुए हैं। इनमें से प्रथम बसवा निवासी थे। ये महाराजा जयपुर की सेवा में उदयपुर रहते थे। वहीं रहते हुए इन्होंने कितने ही ग्रन्थों की रचना की, उनमें पद्म-पुराण भाषा, आदि पुराण भाषा, पुण्याश्रव कथा कोष, आध्यात्म बारहखड़ी, जीवंधर चरित भाषा, जैन क्रियाकोष आदि मुख्य हैं। ये अठारहवीं शताब्दी के विद्वान थे।

दूसरे दौलतराम हाथरस के निवासी थे तथा पल्लोवाल जाति के थे। ये अपने समय के अद्वितीय आध्यात्मिक कवि थे। 'छहढाला' नामक महान रचना इन्हीं की है। हम इन्हीं के जीवन का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत करेंगे।

कविवर पं० दौलतराम जी का जन्म सम्वत् 1850 और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1855 के मध्यवर्ती समय में हाथरस के निकट सासनी नामक ग्राम में हुआ था। इनकी जन्म पत्री सन् 1857 के गदर के समय भागते हुये इनके पुत्रादिक से गिर पड़ी, इस कारण इनकी जन्मतिथि का निर्णय होना कठिन है, परन्तु इनके सुपुत्र श्री टीकाराम जी के कथनानुसार पंडित जी का जन्म विक्रम् संवत् 1855 या 1856 की साल हुआ था। आपके पिता का नाम टोडरमल्ल था। आपकी जाति पल्लीवाल और गोत्र गंगीरीवाल था, परन्तु आप 'फतहपुरिया' नाम से उल्लेखित किये जाते थे। आपके पिता के एक भाई थे, उनका नाम चुन्नीलाल था तथा वे श्री टीकाराम जी से छोटे थे। ये भी हाथरस में ही रहते थे। ये दोनों भाई कपड़े का व्यापार करते थे।

आपका विवाह अलीगढ़ निवासी सेठ चिन्तामणी जी की सुपुत्री के साथ हुआ था। आपके दो पुत्र थे, जिनका जन्म क्रमशः संवत् 1882 और संवत् 1886 में हुआ था। उनके बड़े पुत्र का नाम टीकाराम था तथा ये लश्कर में रहते थे। छोटा पुत्र असमय में ही अपनी स्त्री और एक पुत्री को छोड़कर परलोकवासी हो गया था।

यद्यपि इनके पिता कपड़े का व्यवसाय करते थे, परन्तु बचपन से ही इनकी रुचि विद्याध्ययन में ही विशेष थी, इस कारण इनके पिता ने भी हर्ष के साथ इन्हें विद्याध्ययन में ही लगे रहने दिया, किन्तु इन्होंने किस गुरु के पास विद्याध्ययन किया, इसकी कोई जानकारी नहीं है।

आपने थोड़े दिन हाथरस में ही वजाजी का कार्य किया तथा बाद में आप अलीगढ़ रहने लगे थे। संवत् 1882 या 83 में मथुरा के सुप्रसिद्ध सेठ राजा लक्ष्मणदास जी सी० आई० के पिता सेठ मनीराम जी पं० चंपालाल जी के साथ कारणवश हाथरस गये। वहाँ उन्होंने मन्दिर जी में कविवर को गोम्मटसार का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वाध्याय करते हुये देखा। वे बहुत खुश हुये और उन्हें अपने साथ मथुरा ले आये। वहाँ उन्हें बहुत आदर के साथ रखा, परन्तु पंडित जी को वह भोगोपभोग सम्पदा अरुचिकर प्रतीत हुई, फलस्वरूप वे कुछ दिन बाद वहाँ से लश्कर और बाद में अपनी जन्मभूमि सासनी में आ गये।

कुछ समय बाद पंडित जी सासनी से अलीगढ़ आकर छींट छापने का कार्य करने लगे। छपाई का काम करते हुये भी आप अपने विद्याभ्यास का अनुराग कम न कर सके और चौकी पर जैन सिद्धान्त के ग्रन्थ रखकर छपाई का काम करते हुये 50 या 60 पद्य रोजाना कण्ठस्थ कर लेना आपका दैनिक कर्तव्य था। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान थे तथा जैन सिद्धान्त के परिज्ञान की आपकी बलवती भावना थी। उस समय आपके कुछ पूर्वकृत कर्म का अशुभोदय था जिसे आपने विवेक और धैर्य के साथ सहा। कुछ दिनों पश्चात् पंडित जी अलीगढ़ से देहली आ गये और देहली में साधर्मी, वात्सल्य प्रेमी सज्जनों की गोष्ठी को पाकर अपना अधिकांश समय तत्व चिन्तन, सामायिक और सिद्धान्त शास्त्रों के स्वाध्याय जैसे प्रशस्त कार्यों में व्ययीत करने लगे।

आपका सैद्धान्तिक ज्ञान बढ़ा-चढा था और आपको तत्वचर्चा करने में खूब रंग आता था। वस्तुतत्व का विवेचन करते हुये उनका हृदय प्रमोद भावना से परिपूर्ण हो जाता था। बीच में श्रोताओं के प्रश्न होने पर उनका उत्तर बड़ी ही प्रसन्नता के साथ देते थे। श्रोताजन उनके सन्तोषजनक उत्तरों को सुनकर हर्षित होते थे और उनकी मधुर वानी का पान बड़ी भक्ति और श्रद्धा के साथ करते थे। आपने वस्तुतत्व का मन्थन कर उसमें से जो नवनीत रूप सार अथवा पीयूष निकाला उसका अनुभव आपकी संवत् 1891 में रची जाने वाली एक महान् कृति छहढ़ाला से ही हो जाता है।

कविवर ने संवत् 1910 में माघ वदी चतुर्दशी के दिन गिरि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राज सम्मेद शिखर जी की यात्रा की। उसकी स्मृति में एक पद भी बनाया था। भगवान पार्श्वनाथ की वन्दना कर हृदय में विचार किया कि हे भगवान ! कब यह अवसर पाऊँ, जिस दिन मैं स्व-स्वरूप का अनुभव कर पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करूँ।

इस तरह कविवर ने देहली में उसके बाद 0-12 वर्ष और जीवनयापन किया। उनका जीवन बड़ा ही सीधा-सादा और आडम्बरहीन था। दुनियाँ के भोग भाव उन्हें असुन्दर प्रतीत होते थे और प्रकृति के प्रतिकूल पदार्थों के समागम होने पर भी उनमें उनकी अरुचि तो रहती ही थी, पर उसकी चर्चा करना भी उन्हें इष्ट नहीं था।

एक किंवदन्ती है कि एक बार मथुरा में पंडित जी अपने एक सम्बन्धी के घर रुके। रात में उनके सोने के लिये एक अलग कमरे में पलंग विछा दिया गया। लेकिन रातभर पंडित जी को नींद नहीं आई और वे पलंग के चारों ओर घूमते रहे। उनको नींद न आने का कोई और कारण नहीं वल्कि पलंग के गद्दे के ऊपर बिछा रेशमी चादर था। वे रातभर यह ही विचार करते रहे कि न जाने कितने कीड़ों को मारकर यह चादर तैयार की गई है, अतः इस चादर पर मैं कैसे सो सकता हूँ। ऐसी थी उनकी विरक्ति। तथा अहिंसा के प्रति प्रेम।

कहते हैं कि कविवर को एक सप्ताह पहले अपने मृत्यु के समय का परिज्ञान हो गया था, उसी समय से उन्होंने अपना समय और भी धर्म साधन में बिताने का प्रयत्न किया और कुटुम्बियों के प्रति रहा-सह्रा मोह भी छोड़ने का प्रयास किया। संवत् 1923 या 1924 में ठीक मध्यान्ह के पश्चात् इस नश्वर शरीर का परित्याग कर देवलोक को प्राप्त किया। उसी दिन गोम्मटसार का स्वाध्याय पूरा हुआ था। उन्होंने अपने शरीर का त्याग महामन्त्र का जाप करते-करते किया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविवर ने 'छहढाला' के अतिरिक्त बहुत से आध्यात्मिक पदों की भी रचना की। पं० पन्नालाल जी बाकलीवाल ने सर्व प्रथम इनकी रचनाओं का संग्रह 'दौलत विलास प्रथम भाग' के नाम से ईस्वीं सन् 1904 में प्रकाशित किया था। उसके पश्चात् कलकत्ता से 'दौलत पद संग्रह' प्रकाशित हुआ। लेकिन इन प्रकाशनों में दौलतराम जी की सभी रचनायें नहीं आ सकीं। सन् 1955 में अलीगंज (एटा) से 'दौलत विलास' नाम से संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें यथासम्भव दौलतराम जी की समस्त रचनाओं को संग्रहीत किया गया है।

पं० दौलतराम जी की सभी रचनाओं का वहुत प्रचार रहा है। दिगम्बर जैन समाज में तो शायद ही कोई ऐसा घर होगा जहाँ छहढाला न हो। 'छहढाला' वस्तुत: एक छोटी कृति अवश्य है, लेकिन इसमें गागर में सागर भरा हुआ है। छहढाला में छह अध्याय हैं जिनमें क्रमश: संसार की दशा का वर्णन, संसार भ्रमण का कारण, संसार से मुक्ति का उपाय वारह भावनाओं का वर्णन तथा साधु चर्या का वर्णन किया गया है। हिन्दी भाषा में 'छहढाला' से सुन्दर तथा सरल और कोई रचना नहीं है। पं० दौलतराम जी के सभी पद भी आध्यात्मिकता से भरे हुये हैं। जैन पदकारों में कविवर दौलतराम जी का प्रमुख स्थान है। उनकी सिद्धहस्त परिमार्जित लेखनी द्वारा लिखे गये पद हिन्दी साहित्य की अक्षय-निधि हैं।

(5-6) कविवर मनरंगलाल जी

आप पं० दौलतराम जी के समकालीन कवि थे। आपके पिता का नाम श्री कनोजीलाल तथा माता का नाम देवकी था। आप कन्नौज के रहने वाले थे। आप के जन्म संवत् के बारे में तो नहीं मालूम है लेकिन इतना अवश्य है कि आपने जेठ सुदी 11 गुरू-सम्वत् 1880 नक्षत्र स्वाति सूर्य के उत्तरायण में 'नेमिचन्द्रिका'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नामक ग्रन्थ पूरा किया। यह ग्रन्थ आपने अपने सुमित्र श्री गोपाल दास जी के अनुरोध पर वनाया। इन्हीं गोपालदास जी के लिये पं० मनरंगलाल जी ने 'हितोपदेश षट पंचासि' की रचना सं. 1881 में की। नेमिचन्द्रिका' तो बहुत प्रसिद्ध है तथा इसके बारे में कई विद्वानों ने लिखा है। लेकिन 'हितापदेश षट पंचासि' का कहीं उल्लेख नहीं आता है। इसकी एक प्रति जनरल गंज, कानपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर में उपलब्ध है जिसे अगहन शुक्ला 9 कुंज वासरे सं० 1888 में लाला हिलसुखराय के पुत्र रामसहाय ने लिखा। इस रचना के प्रारम्भ में कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

"कन्नौज वास श्रावक कुल एव बन्स जानिये,
कनोजीलाल तात मात देवकी बखानिये।
तयो सुपुत्र मन्नरंग ने करी सु छप्पनी,
पढ़ो गुनो सुनो सवैय मोह की उथप्पनी॥
यह षट पंचासत हित उपदेश,
कीनी श्रावण महिना सूवेश।
अलि पक्ष सप्तमी तिथि गनाय,
रविवार श्रेष्ठ जानो वनाय॥
अठ शत इक्यासी गनेउ,
सो सम्वत भ्राता जान लेउ।
प्रेरक याके सुगुपालदास,
तिन हेत करी यह सुनिवास॥

इस ग्रन्थ में छत्तीस छन्द हैं। इसका नाम 'हितोपदेश षट पंचासि' का सम्पूर्णम्। लिखितम लाला हिलसुख राय तश्य लाला रामसहाय अगहन शुक्ला 9 कुंज वासरे सं० 1888॥"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पं० मनरंग लाल बहुत ही विद्वान थे। उनके मित्र गोपाल दास भी विद्वान थे तथा समय-समय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर कविवर मनरंगलाल जी को धार्मिक रचना लिखने के लिये प्रेरित करते रहते थे। आपकी अन्य रचनाओं में 'शिखिर-विलास,' 'सप्त व्यसन चरित्र' 'सप्तर्षि पूजा' तथा 'चौबीसी पूजा पाठ' मुख्य हैं। 'चौवीसी पूजा पाठ' की रचना संवत् 1857 में की थी। इन सबके अतिरिक्त आपने बहुत से पदों की रचना भी की, जिनमें संसार की असारता को बहुत सरल ढंग से समझाते हुये संसार से वैराग्य लेने के लिये प्रेरित किया गया है। उनका बहु-प्रचलित एक पद निम्न प्रकार है—

"नर भव पायो नहीं कुशलात।
कोई रोगी, कोई शोकी, काहू के घर अरि सम भ्रात ॥
काऊ के घर घरनी नाहीं, विन घरनी घबरात ॥
घरनी भई तो पुत्र नाहिं हुओ, समझ सोच पछतात ॥
पुत्र भयो तो भयो दुर्व्यसनी, दुख देवै दिन रात ॥
कानी कोड़ी धन नहिं घर में, बड़ी विपत की बात ॥
अथवा धन हुओ काऊ विधि, तो ततछिन हुओ घात ॥
धरी रहेगी सम्पति 'मनरंग', क्या जाने को खात ॥"

श्री अगर चन्द जी नाहटा ने अपने लेख 'पल्लीवाल कवि मनरंगलाल की नेमिचन्द्रिका'[28] में कवि मनरंग लाल जी का परिचय निम्न प्रकार दिया है—

दिगम्बर सम्प्रदाय में पल्लीवाल जाति के कुछ कवि हुए हैं जिनमें कविवर दौलतराम जी तो काफी प्रसिद्ध हैं। दूसरे कवि मनरंगलाल जी वैसे प्रसिद्ध नहीं हो सके। पर उनके द्वारा रचित 'नेमिचन्द्रिका' एक अच्छा काव्य है जो दिगम्बर शास्त्र भण्डारों में प्राप्त है। उसे प्रकाश में लाना बहुत ही आवश्यक है। पल्लीवाल समाज को उसकी जानकारी मिलनी ही चाहिए, इसलिए इस लेख में उसका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। इस विषय में पं० माधवराम शास्त्री 'न्याय तीर्थ' ने अब से करीब 30 वर्ष पहले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'जैन सिद्धान्त भाष्कर' में लेख प्रकाशित करते हुये काव्य की काफी प्रशंसा की थी। ग्रन्थ के नाम से उसका विषय स्पष्ट है कि भगवान नेमिनाथ का जीवन संबंधी यह सुन्दर काव्य है। कवि मनरंगलाल का 'चौबीस पाठ' 'सप्त ऋषि पूजा', 'सप्त व्यसन चरित्र' और 'शिखर सम्मेलन महात्म्य' नामक ग्रन्थ रचनाओं का उल्लेख पं.माधोराम शास्त्री ने अपने लेख में किया था। अत:कवि की प्राप्त समस्त रचनाओं का संग्रह-ग्रन्थ प्रकाशित हो सके तो बहुत ही अच्छा हो।

प्रकाशित के अनुसार कवि का परिचय इस प्रकार है—

कन्नौज में श्रावकों का एक समुदाय था जो अधिकांश अपना समय जिनेन्द्र पूजा, सैद्धान्तिक चर्चा आदि धार्मिक कार्यों में लगाकर समय व्यतीत करता था। उस समुदाय में हुल्लासराय नामक श्रावक का भी नाम था। हुल्लासराय प्राय: अपना पूरा समय देव, शास्त्र, गुरु के पूजा पाठ में तथा तत्व चर्चा में लगाया करते थे। ये इक्ष्वाकुवंशी थे, इनकी जाति 'पल्लीवाल' और गौत्र 'शिव' था। इनके दो पुत्र थे, जिनमें जेष्ठ पुत्र कनौजीलाल और कनिष्ठ गोविन्दराम थे। शुभ कर्मोदय से कनौजीलाल को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम मनरंगलाल रखा गया। कन्नौजीलाल को अन्य पुत्र रत्नों की भी प्राप्ति हुई, किन्तु सबमें जेष्ठ मनरंगलाल थे मनरंगलाल के सुयोग्य मित्र गोपाल दास थे। इन दोनों में मैत्री भाव अत्यन्त घनिष्ठथा। गोपालदास जिनेन्द्र देव, शास्त्र और गुरु में अत्यन्त श्रद्धा रखते थे। शास्त्र प्रेमी थे। छल कपट और क्रोध के लिए इनके अन्दर स्थान नहीं था। इनके पिता का नाम खुस्यालचन्द्र था। गोपालदास शास्त्रों का संग्रह करने के लिये हमेशा कटिबद्ध रहते थे। इन्हीं के अनुरोध से तथा इनके वचनों को अमृत समान अत्यन्त प्रिय समझ कर मनरंगलाल ने नेमिनाथ की चन्द्रिका नाम की पुस्तक की रचना जेठ सुदी 11 गुरु सं० 1890 नक्षत्र स्वाति सूर्य के उत्तरायण में पूरी की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मास जेष्ठ शशि पक्ष की एकादशी विचारि
नखत स्वाति गुरुवार दिन, उत्तरायन रविसार ।।1।।
एक सहस अरू आठ सतक, बरस असीति और।
याही संवत् मो करी, पूरन इह गुण और ।।2।।

5172

कवि मनरंगलाल ने अपनी जाति, गौत्र और पूर्वजों का उल्लेख निम्न पदों में किया है—

अब सुनहु मित्र बनाय बकी विधि कौन विधि बनिवो भयो।
शुभ दे अन्दर वेद मजट कान्ह-कुन्ज भलो ठयो ।।
तहा पल्लिवार इक्ष्वाकुवंशी, कहे काशिव गोत्रिया।
जिनदेव शास्त्र सिद्धान्त सुगुरु नीति जिनके अतिप्रिया ।।
शुभ करहिं चर्चा पठहिं निश दिन धरहिं सरधा जानिके।
तिन सवनि मह इक बसत श्रावक नाम कहौ बखानिकै ।।
हुल्लासराय सुनाम तिनको, कहत सच जन टेरिके।
तिनके जुगल सुन भयो भपर. सिद्ध सव अधि परिके ।।
शुभ जेष्ठलाल कनौजी, गोविन्दराव नाम कनिष्ट की।
तिन शिशुन मह जो जेष्ठ मनरंगलाल नाम कहै सबै ।।
तिनलाल तनरंग के सुमित्र गुपालदास भये तबै ।।

नेमिचन्द्रिका एक खण्ड काव्य है। इसकी पद संख्या 486 हैं। कवि ने इसमें दोहा, चौपाई भुजंग प्रयान, नाराव, सोरठ, अडिल्ल गीता छप्पल, त्रोटक, पद्धरी आदि छन्दों का प्रयोग किया है। इस ग्रन्थ में सभी छन्द ग्रन्थ हैं।

कवि मनरंगलाल की नेमिचन्द्रिका की प्रशंसा डा॰नेमीचन्दजी शास्त्री ने भी अपने 'हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन' में की है। उनकी अन्य रचना 'चौबीसी पूजा पाठ' के लिए भी इन्होंने लिखा है। मनरंग का 'चौबीसी पूजा पाठ' संगीत की दृष्टि से अद्भुत है। इसमें प्रायः सभी प्रमुख संस्कृत के छन्दों का प्रयोग कवि ने बड़ी निपुणता से किया है। वार्षिक वृतों को श्रुतिमधुर बनाने का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवि ने पूरा प्रयास किया है। न, म, त, र, ल और व वर्णों की आवृति द्वारा अनेक छन्दों में मिठास विद्यमान है। कर्णकटु, कर्कश और अर्थहीन शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया है। छन्दों की लय और ताल का पूरा ध्यान रखा है।

बाबू कामता प्रसाद जैन के 'हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' के पृष्ठ 211 में लिखा है—"मनरंगलाल जी कन्नौज के रहने वाले पल्लीवाल दिगम्बर जैन श्रावक थे। उनके पिता का नाम कन्नौजीलाल जी और माता का नाम देवकी था। कन्नौज में गोपालदास जी एक धर्मात्मा सज्जन थे। उनके कहने से कवि ने 'चौबीस तीर्थंकर का पाठ' सं० 1857 में रचा था। इनकी कविता अच्छी और मनोहर है। इसके अतिरिक्त 'नेमिचन्द्रिका', 'सप्त-व्यसन', और 'सप्तर्षि पूजा' नामक ग्रन्थ भी इन्हीं के रचे हुए हैं। 'शिखर सम्मेदाचल महात्म्य (शिखिर विलास) नामक इनकी एक रचना हमारे संग्रह में है, जिसे इन्होंने 1879 में रचा था। वृन्दावन चौबीसी के साथ ही मनरंग चौबीसी, पाठ का खूब प्रचार है। दोनों ही कई वार छप चुके हैं। भाव सौष्ठव जो मनरंग के पाठ में है वह शब्दालंकार की छटा में वृन्द के पाठ में छिप गया है।"

नेमिचन्द्रिका का नाम की एक और रचना भी बद्रीप्रसाद जैन ने काशी से सन् 1923 में प्रकाशित की थी। जो संवत् 1761 के भादवा सुदी 2 सोमवार को रची गई है। पर उसमें रचयिता का नाम नहीं है।

'नेमिचन्द्रिका' के रचनाकाल को लेकर विद्वानों में बहुत मतभेद हैं।[30] कुछ विद्वान इसका रचनाकाल संवत् 1883 मानते हैं। 'हिन्दी के मध्यकालीन खण्ड काव्य' में डा० सियाराम तिवारी ने इसका रचनाकाल सन् 1823 ई तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 'खोज विवरण' ('सभा' सन् 1926-28, प्रथम परिशिष्ट, संख्या 291) में संवत् 1830 माना है। वस्तुतः कवि मनरंग ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसकी रचना संवत् 1880 में की थी, जैसा कि हमने प्रारम्भ में ही कहा है। संवत् 1883 में इस नेमिचन्द्रिका की कई प्रतियाँ की गई थीं। इसकी एक प्रति दि० जैन मन्दिर (बड़ा तेरापंथियों का), जयपुर में उपलब्ध है (वेष्ठन—9।6), उसका लिपिकाल संवत् 1883 व लिपिकार—खुशाल चन्द पल्लीवाल हैं।[29] इसकी पत्र संख्या 19 तथा कुल छन्द संख्या 86 है। नेमिचन्द्रिका में लिखा है–

'एक सहस्त्र अरु आठ सतक, वरष असिति और।
यही संवत् मो करी पूरण इह गुण गौर ॥56॥'

'नेमिचन्द्रिका' एक खण्ड काव्य है। इसकी भाषा व्रज भाषा है जिस पर खड़ी वोली तथा कन्नौजी भाषा का भी प्रभाव है। इस खण्ड काव्य को कवि ने दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छन्दों में निवद्ध किया है। शैली सरल तथा मार्मिक है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि कवि मनरंगलाल की प्रसिद्धि पं० दौलतराम जैसी नहीं है। फिर भी इनका 'चौबीसी पूजा पाठ' का तो दिगम्बर सम्प्रदाय में वहुत प्रचार रहा है। 'नेमिचन्द्रिका' आदि अन्य रचनाएँ अप्रकाशित ही हैं। पल्लीवाल समाज का तो यह कर्तव्य हो जाता है कि अपनी जाति का गौरव वढ़ाने वाले उस कवि की सब रचनाओं का संग्रह तथा प्रकाशन करे। उन रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन किसी विद्वान से लिखवाकर पल्लीवाल समाज में खूब प्रचार किया जाना चाहिये, जिससे जातीय गौरव की भावना अधिकाधिक विकसित हो सके। इस तरह के पल्लीवाल समाज के अन्य विद्वानों या कवियों की रचनाओं को भी प्रकाश में लाना चाहिए।

(5-7) श्री बुधसेन पल्लीवाल

आपके बारे में विशेष जानकारी तो नहीं मिली है, लेकिन आपका नाम एक स्थान पर आता है। आपने आचार्य सकलकीर्ति कृत 'सद्भाषिता' की टीका संवत् 1946 में की। इससे अनुमान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगाया जा सकता है कि आप बहुत विद्वान थे। आपने अन्य ग्रन्थों की टीकाएँ अथवा रचनाएँ की या नहीं, इसकी कोई जानकारी नहीं है।

(5-8) पं० नन्नूमल जी

आपका जन्म सन् 1860 ई० में आगरा में हुआ। आप आगरा के ही रहने वाले थे। आपकी जाति पल्लीवाल तथा गोत्र वारोलिया था। आप आगरा के 'दिगम्बर जैन विद्यालय' के संस्थापक थे। आप बहुत विद्वान थे। आपने बहुत से शास्त्रों का अध्ययन किया था। आप नित्यप्रति धूलिया गंज, आगरा, स्थित 'श्री पल्लीवाल दिगम्वर जैन मन्दिर' में शास्त्र प्रवचन किया करते ये। आपका स्वर्गवास सन् 1920 में आगरा में हो गया।

पंडित जी के बारे में एक बात प्रसिद्ध है। आप किसी छाते वाले के यहाँ नौकरी करते थे। आप वर्षभर में मात्र छह माह ही नौकरी करते थे तथा बाकी के दिनों में आप आगरा तथा इसके आसपास के गाँवों में भ्रमण करके जैन धर्म का प्रचार करते थे।

(5-9) लाला लालमन जैन

लाला लालमन जी जैन-समाज के उन अग्रणी लोगों में से हैं जिन्होंने जैन शास्त्रों को प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया। इनका जन्म आषाढ सुदी 8 वि. संवत् 1919 (सन् 1862 ई०) को तहसील रामगढ़, रियासत अलवर (राजपूताना) में सिपाही विद्रोह के पाँच वर्ष वाद हुआ था। इस गाँव को ठाकुर रामसिंह जी ने संवत् 1810 में वसाया था और लाला लालमन जी के पड़दादा चैनसुख दास जी पल्लीवाल जैन चीमा-सामू (रियासत जयपुर) से ठाकुर साहब के साथ आकर दीवान रहे थे। इस गांव को ठाकुर रामसिंह जी के सुपुत्र स्वरूपसिंह जी से महाराजा अलवर ने संवत् 1840 में अपने आधीन कर लिया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपके पिता लाला लोकमन जी जैन धर्म के पक्के श्रद्धानी थे और साधारण सी परचूनी की दुकान करते थे। आपने बाल्यावस्था में रामगढ़ के देवनागरी व उर्दू के स्कूल में समयानुकूल उच्च शिक्षा प्राप्त करके संस्कृत का भी अच्छा अभ्यास कर लिया था।

आपका विवाह सं० 1934 में आगरा निवासी लाला घासीराम जी की सुपुत्री से हुआ था। शिक्षा पाने के बाद आप कुछ समय के लिए रियासत अलवर में पटवारी हो गये। उन्हीं दिनों आपके श्वसुर लाला घासीराम जी बदली होकर लाहौर में गवर्नमेंट प्रेस में आ गये और उन्होंने आपको अंग्रेजी व फारसी की शिक्षा दिलाने के लिए लाहौर में सन् 1880 में बुला लिया और फारसी का मिडिल पास कराकर अंग्रेजी पढ़ने के लिए रंग महल स्कूल में दाखिल करवा दिया। सन् 1882 में सरकार की तरफ से डाक्टरी में पढ़ने वाले लड़कों को दस रुपये माहवार वजीफा दिया जाता था और उर्दू मिडिल तक की शिक्षा वाले लड़के लिये जाते थे। आपको भी लाला घासीराम जी ने डाक्टरी श्रेणी में दाखिल करवा दिया। जब सर्जरी पढ़ने वाले कमरे में सब विद्यार्थी एकत्रित हुये और एक लाश पोस्ट मार्टम के लिये लाई गई तब पोस्टमार्टम होते देखकर आपको डाक्टरी पेशे से घृणा हो गई और यहाँ से अपना नाम कटवा दिया। तब इनको अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक स्कूल में दाखिल करवा दिया।

लाला लालमन जी की इस बात से लाला घासीराम जी बहुत नाराज हुये। कुछ दिनों बाद जब लाला घासीराम जी का शिमला के गवर्नमेंट प्रेस के लिए तबादला हो गया तब वे लालमन जी को बिना कुछ बताये शिमला चले गये। इस बात से लालमन जी को बहुत क्षोभ हुआ।

फिर लाला लालमन जी ने लाला घासीराम जी के एक मित्र विलियम साहब की मदद से प्रेस का काम सीखा तथा दस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुपये माहवार पर नौकरी कर ली। आपको इस काम में कभी-कभी रात के ग्यारह-बारह वज जाते थे।

आजीविका के लिए इतना परिश्रम करते हुये भी आपने अपने नित्यकर्म सामायिक, पूजन, जाप व स्वाध्याय को कभी नहीं छोड़ा। इस कार्य के लिए उस समय पुस्तकें उपलब्ध नहीं होती थीं, अतः इन्होंने अपने हाथ से लिखकर गुटके तैयार किये थे जिनमें से दो गुटके तो अभी तक आपकी यादगार के तौर पर लाहौर के मन्दिर जी के शास्त्र भंडार में रखे हुये हैं।

नित्य पाठ की, पूजन की व स्वाध्याय के लिये पुस्तकों का लाहौर में न मिलना एक प्रेस में कार्यकर्ता के रूप में आपको हृदय में बहुत खटकता था। इस कारण आपके मन में इन सबों के प्रकाशन का विचार आया। इस विचार के कुछ और जैनी भाई भी थे। इन सबों ने अनुभव किया कि किसी दूसरे छापेखाने में धार्मिक पुस्तकें छपवायें तो उनकी छपाई विनय व शुद्धतापूर्वक नहीं हो सकती है। अतः एक छोटा सा निजी प्रेस खोलने का फैसला किया। यह कार्य बिना धन के असम्भव था, अतः कुछ अन्य लोगों के आर्थिक सहयोग (हिस्सेदारी) के साथ सन् 1888 में 'पंजाब इकानोमीकल प्रेस' के नाम से अपना प्रेस खोल दिया। आप इस नौकरी को छोड़कर इस प्रेस में पच्चीस रुपये माहवार पर प्रिंटर व मैनेजर के पद पर कार्य करने लगे।

आपने अपनी मित्र मंडली की राय के अनुसार 'जैन धर्मोन्नतिकारक' नामक एक छोटा सा ट्रेक्ट छपवाकर बिना मूल्य के जैन समाज में वितरण किया, जिसमें वन्द जैन ग्रन्थ भंडारों में जिनवाणी की चूहे तथा दीमकों के कारण कितनी दुर्दशा हो रही है, इस बात का उल्लेख किया। इसके बाद जैन धर्म की छोटी-छोटी पुस्तकें आदि का प्रकाशन प्रारम्भ किया। ग्रन्थ प्रकाशन कार्य का प्रचार करने के उद्देश्य से 'जैन पत्रिका' (दिगम्बरी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नामक एक स्वतन्त्र मासिक पत्र निकलता था। श्वेताम्बर समाज का पत्र 'आत्मानन्द जैन पत्रिका' (श्वेताम्बरी) भी निकलती थी तथा श्वेताम्बर और स्थानकवासी समाज की धार्मिक पुस्तकें भी छपती थीं।

उस समय धार्मिक ग्रन्थों का प्रेस में प्रकाशित करवाना बहुत पाप समझा जाता था। संकीर्ण विचारधारा वाले लोग ग्रन्थों का प्रकाशन करने वाले लोगों को अधर्मी कहते थे तथा इस कार्य को जिनवाणी का अनादर समझते थे। मात्र हस्तलिखित ग्रन्थों को ही शुद्ध समझते थे। ऐसी विषम स्थिति का लाला लालमन जी को भी सामना करना पड़ा। उनको लोगों ने भला-बुरा भी कहा। लेकिन इन सबके बावजूद लालमन जी अपने-कार्य में सफल हुये।

प्रेस का उनका यह कार्य सन् 1916 तक सुचारु रूप से चलता रहा। लेकिन इसके बाद अंग्रेजी सरकार की नीति तथा कागज के बढ़ते हुये मूल्य के कारण यह कार्य बन्द कर दिया गया तथा कंपनी के भागीदारों ने यह प्रेस दूसरों को बेच दिया। आपने अपने छोटे भाइयों लाला शंभूनाथ तथा लाला छोटेलाल को भी प्रेस का कार्य सिखाया था। सन् 1916 के बाद इन दोनों ने भी प्रेस का कार्य छोड़कर लाहौर में ही अन्य व्यवसाय कर लिये। आपने अन्य लोगों को भी प्रेस का कार्य सिखाया था जो बाद में पंजाब तथा यू० पी० में आ गये।

आपने बहुत से उच्चकोटि के जैन शास्त्रों का अध्ययन किया था। आपका नित्यप्रति स्वाध्याय करने का नियम था। आपने सभी तीर्थ स्थानों की यात्राएँ भी कीं। सन् 1918 में आप अपने जेष्ठ पुत्र लाला मनोहरलाल जी इंजीनियर के पास भीलवाड़ा (मेवाड़) में आ गये तथा वहाँ पर शास्त्र स्वाध्याय तथा धार्मिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चर्चाएँ करने लगे। सन् 1919 में आपने सातवीं प्रतिमा धारण कर ली और घर में रहकर ही अन्त तक धर्म साधन करते रहे। आप अपने अन्तिम समय में काफी बीमार रहे। अन्त में आपका स्वर्गवास, समाधिमरण युक्त. कार्तिक बदी 5 संवत 1981 (यानि कि 18 अक्टूबर सन् 1924) को दिन के 2-45 बजे णमोकार मन्त्र व अरिहन्त का मनन करते करते हो गया।

आपके तीनों पुत्र मनोहरलाल जी, रोशनलाल जी तथा चन्दूलाल जी सुशिक्षित तथा अच्छे पदों पर कार्यरत थे। श्री रोशन लाल जी सन् 1919 से सन् 1935 तक लाहौर के दिगम्बर जैन मन्दिर जी के मन्त्री पद पर कार्य करते रहे।

लाला लालमन जी की प्रेरणा से कई धार्मिक कार्य बिभिन्न स्थानों पर हुये। भीलवाड़ा में पंचों से कहकर औषधालय खुलवाया, वहाँ के मन्दिर मे बहुत सारे ग्रन्थ मँगवाये। विजयनगर (मेवाड़) में जिन चैत्यालय बनवाया जो बाद में एक शिखर बन्द आलीशान जिन मन्दिर बन गया। वहाँ भी शास्त्र भण्डार स्थापित करवाया। देवलिया के जिन-मन्दिर में नित्य पूजन का बन्दोबस्त करवाया। इस प्रकार लाला लालमन जी मात्र पल्लीवाल समाज के ही नहीं बल्कि पूरे जैन समाज के लिए एक आदर्श पुरुष थे।

(5-10) पं० चिरन्जीलाल जो

आप पण्डित नन्नूमल जी के समकालीन थे। आप भी आगरा के ही निवासी थे। आपका जन्म मार्गशीर्ष सुदी 11 संवत् 1924 को हुआ था। पं० नन्नूमल जी के मरणोपरान्त आपनें आगरा के 'दिगम्वर जैन विद्यालय' का कार्यभार सँभाला। धूलिया गंज (आगरा) स्थित 'श्री पल्लीवाल दिगम्बर जैन मन्दिर' में आप समय-समय पर शास्त्र प्रवचन करते रहते थे।

आपने 'पल्लीवाल जैन सम्मेलन' की बहुत सी सभाओं का सभापतित्व किया। आपकी धार्मिक वीद्वता तथा सामाजिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेवाओं के कारण आपको 'जाति-भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

पंडित जी 'दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस', आगरा के प्रथम ट्रस्टियों में से एक थे। वोर्डिंग भवन के निर्माण में आपका सराहनीय योगदान रहा। आप पल्लीवाल जाति के ही नहीं बल्कि आगरा जैन समाज में भी ख्याति पुरुष थे।

चैत्र बदी 13 संवत् 1982 को आप दिवंगत हो गये।

(5-11) मुनि श्री सूर्यसागर जी

आप पल्लीवाल जात्युत्पन्न थे तथा अलीगढ़ के रहने वाले थे। आपके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है, लेकिन इतना मालूम है कि लगभग 70 (सत्तर) वर्ष पहले आपका चतुर्मास योग एक वार ललितपुर में हुआ था।

(5-12) मा० कन्हैयालाल जी

मास्टर कन्हैयालाल जी का जन्म आगरा के ग्राम बरारा म सन् 1869 के सितम्बर मास में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भैरूलाल था। आप बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और होनहार थे। बरारा का शिक्षण समाप्त करने के बाद आप आगरा भेज दिये गये। वहाँ एम० ए० तक की उच्च शिक्षा प्राप्त की। वाद में आपने एल० टी० की परीक्षा भी पास की। उसके उपरान्त आप अजमेर के 'नारमल स्कूल' के यशस्वी प्रधानाध्यापक पद पर रहे।

वि० सं० 1943 में अठारह वर्ष की आयु में आपका विवाह संस्कार हुआ। आपके दो सुपुत्र विष्णुचन्द्र और प्रकाशचन्द्र क्रमश: वि० सं० 1960 और वि० सं० 1962 में हुये।

आप पर आर्य समाज जैसे सुधारवादी आन्दोलनों का बहुत प्रभाव था। आपने पल्लीवाल जाति की सामाजिक स्थिति सुधारने तथा जाति को संगठित करने के कई प्रयत्न किये। आपके प्रयत्नों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से समाज के सभी विद्यार्थियों की एक सभा 'पल्लीवाल धर्म-वर्धनी क्लब' नाम से 11 दिसम्बर सन् 1892 में स्थापित हुई। इस क्लब ने समाज में एक क्रान्ति पैदा कर दी थी। इसी के फल-स्वरूप वि० सं० 1977 जेष्ठ कृष्णा 7 को बरारा अधिवेशन मं 'पल्लीवाल जैन कान्फ्रेंस' की स्थापना हुई, जिसके आप सभापति चुने गये। आपके प्रयासों से ही मुरैना तथा फिरोजाबाद के पल्लीवालों के साथ रोटी-बेटी का व्यवहार प्रारम्भ हुआ। आज हम पल्लीवाल जाति को जिस संगठित रूप में देख रहे हैं उसका बुनियादी श्रेय आपको ही जाता है। पल्लीवाल जाति के सुधारक के रूप में आपका प्रथम स्थान रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

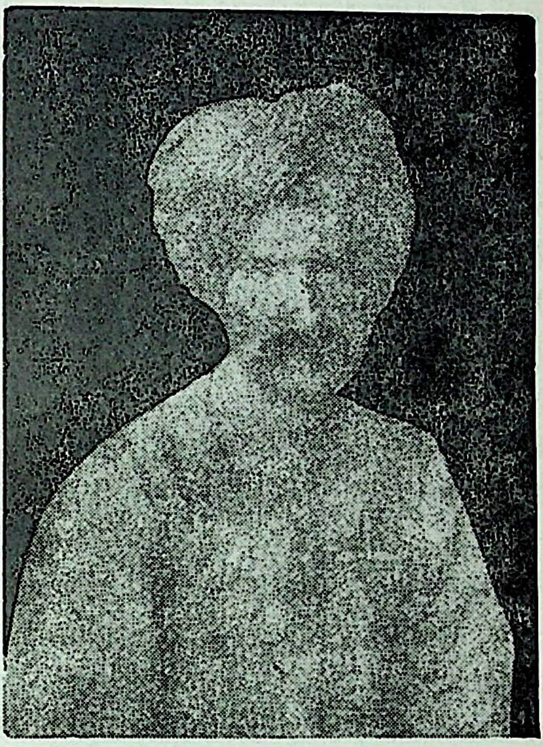

(5-3) कवि श्री बालाप्रसाद जी कानूनगो

आप हिन्दी (खड़ी वोली) के भक्त कवि थे। आपका जन्म माघ कृष्णा 6 संवत् 1937 को हुआ था। आपके पितामह दीवान शिवलाल जी का निवास स्थान खेड़ा मंगलसिंह था। यह स्थान अलवर राज्य का ताजीमी ठिकाना था तथा श्री शिवलाल जी यहाँ पर दीवान पद पर आसीन थे। आपके पिता लाला सूरजबख्श जी का जन्म भी लेड़े में ही हुआ था, वहाँ धर्म साधन न होने से दीवान शिवलाल जी रामगढ़ (अलवर राज्य) आकर बस गये। आप पल्लीवाल जाति के लोह किरोड़िया गोत्र के थे।

आपकी शिक्षा पूर्ण होने के बाद आपका विवाह राजगढ़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवासी दीवान सम्पतराम जी की सुपुत्री से संवत् 1952 में हुआ। प्रथम आपने सैटिलमैन्ट राज्य अलवर में राज्य सेवा प्रारम्भ की और पश्चात् डिस्ट्रिक्ट गुड़गाँवा व स्टेट पटियाला में भी सर्विस की। संवत् 1961 में भयानक प्लेग में पिता व भ्राता की आकस्मिक मृत्यु हो जाने से गुड़गाँवा की सर्विस छोड़कर पुनः अलवर राज्य में रिवेन्यू डिपार्टमेन्ट में मुलाजमत की और उत्तमता से राज्य सेवा सम्पादन करके आपने ऑफिस कानूनगो के पद से सन् 1941 में पेन्शन प्राप्त की।

आपके दो कन्याएें उत्पन्न हुईं। पहली कन्या का थोड़ी आयु के बाद निधन हो गया। दूसरी कन्या जन्म के समय कन्या तथा भार्या का भी देहावसान हो गया। पत्नी की मृत्यु के समय आपकी आयु मात्र 29 वर्ष की थी, फिर भी आपने दूसरी शादी करने से इन्कार कर दिया। आपने अपने भाई की एक मात्र कन्या का पूरी तरह से लालन-पालन किया तथा उसके पुत्र अमर चन्द को संवत् 1996 में दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किया।

आपकी प्रारम्भ से ही धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि थी। आपने कई बार तीर्थ यात्राएँ भी कीं। सेवा निवृत होने के पश्चात् तो आप अपना पूरा समय धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत करते थे। आपने कई पदों की रचनाएँ की। आपकी रचनाओं में 'श्रीचौबीस तीर्थंकर पुराण' (पद्य) 'चतुर्विंशति जिन पूजा' (बालकृत) 'नित्य पूजन विधान', तथा 'बाल पद संग्रह' प्रसिद्ध हैं। जनवरी सन् 1963 में आपका देहान्त हो गया।

'श्री चौबीस तीर्थंकर पुराण' में आपने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है—

',रजवाड़ों में है सरनाम, अलवर शहर महा सुख धाम।
तेजसिंह तहाँ हैं भूपाल, पालत प्रजा सर्व दुख टाल।
रजधानी ताकी विस्तार, तहाँ नजामत दश गुलजार।
तिनमें एक रामगढ़ जान, जो है गुनी जनों की ख़ान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० मक्खनलाल जैन

पल्लीवाल भूषण व्याख्यान वाचस्पती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिन मन्दिर तहाँ उतङ्ग, मध्य विराजित श्री जिनचंद।
दर्शन से अध तुरत नशाय, शान्ति छवी बरनी नहिं जाय।
जैन समाज तहाँ गम्भीर, धर्म ध्यान में अति ही धीर।
पूर्वजों का तहाँ निवास, वर्ष सैकड़ों का तँह वास ॥
पितामह जानो शिवलाल, करते थे धर्म ध्यान विशाल।
सूरजबख्श पिता मम जान, जो थे महा गुणों की खान ॥
तिनका सुत जानो यह दास "बात"समान करत अरदास।
पल्लीवाल जैन लो जान, तेरापन्थी आम्ना मान ॥
बात प्रसिद्ध जगत के माहिं, कवि कोई सन्तानी नाहिं।
मैं भी भयो हीन सन्तान, नाती दत्तक लीनो मान ॥
ताको अमर चन्द शुभ नाम, वह भी करत राज को काम।
मैं कुछ और कियो नहीं काज, आयु विताई सेवा राज ॥
सेवा राज वर्ष छत्तीस, करके ली उपवेतन बीस।
तास समय यह लिखा पुराण, ठाली बैठे धन्धा जाण ॥
शुभ संगत से यह फल लियो, छांड विकथा जिनवर गुण कह्यो।
सज्जन जन यह आयस दियौ, ता प्रसाद यह साहस कियो।
चौबीसों जिन पुराण निहार, कियो पद्य यह गद्य अनुसार।
गद्य समान पद्य कियो जान, कियो नहीं निज ओर मिलान।
छन्द काव्य से हूँ अनभिज्ञ, भक्ति भाव उर भयो सर्वज्ञ।
श्री जिनवर गूँथी गुण माल, शुद्ध करो मम भूल संभाल ॥
ज्ञानी जन से है अरदास, देख अशुद्धि करो मति हास।
सम्वत विक्रम दोय हजार, पोप शुक्ल शुभ दशमी सार ॥
ता दिन पूरण भयो पुराण,श्री जिन पूरण सहायप्रमाण।'

दोहा—'पूरण भयो पुराण यह, श्री जिन दया प्रसाद।
पढ़ो भव्य नित प्रेम से, क्षमो 'बाल' प्रमाद ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह गुणमाल जिनेश की, जो धारैं उर माँय।
भव भव दुःख विनाश के, अन्त शिवालय जाँय ॥

आपकी सभी रचनायें एक वार प्रकाशित तो हो चुकी हैं, लेकिन उनकी अधिक प्रसिद्धि नहीं हो पाई है। 'श्री चौबीस तीर्थंकर पुराण' (पद्य) आपकी एक बडी रचना है। इसमें चौबीसों भगवान का परिचय बहुत सुन्दर तरीके से दिया गया है।

(5-14) पं० मक्खनलाल जी 'प्रचारक'[33]

पंडित मक्खनलाल जी अपने समय के अद्वितीय आध्यात्मिक कवि थे। आप जैन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान थे। आप जैन धर्म का प्रचार करने के उद्देश्य से स्थान-स्थान पर भ्रमण करते तथा जैन धर्म की गूढ़ बातों को बहुत ही सरल तथा सरस भजनों तथा हिन्दी पदों के रूप में प्रचारित करते थे। इसी कारण आप 'प्रचारक' उपनाम से प्रसिद्ध हो गये।

आपका जन्म सन् 1881 में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री डालचन्द पल्लीवाल तथा माता का नाम श्रीमती नारायनी देवी था। आप अलीगढ़ जिले की अतरौली तहसील के ग्राम काजमाबाद के निवासी थे। किसी समय इस गाँव में पल्लीवालों के पचास घर थे, लेकिन अब तो शायद ही कोई पल्लीवाल वहाँ रहता हो।

पंडित जी का विवाह अल्प आयु में ही हो गया था, इस कारण इनकी शिक्षा प्रारम्भ में ठीक से नहीं हो पाई। बाद में आपने प्रथमा की परीक्षा पास की। आपने हस्तिनापुर के पास एक गाँव में बहुत समय तक अध्यापन कार्य किया। वहीं पर आपके पिताजी आ गये तथा गल्ले का व्यापार करने लगे। कुछ समय आपने चौरासी (मथुरा) के गुरुकुल में अवैतनिक रूप से कार्य किया। अन्त में आप दिल्ली आ गये तथा वहीं पर आपका स्वर्गवास 17 जून सन् 1972 को हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप बहुत ही सरल परिणामी थे तथा बहुत ही मधुरभाषी थे। साधर्मी भाइयों के प्रति आपके दिल में विशेष वात्सल्य भाव था। आपको समय-समय पर विभिन्न उपाधियों से सम्मानित किया गया। 'पल्लीवाल भूषण', 'व्याख्यान वाचस्पति', 'कुशल प्रचारक', 'कवि रत्न', 'समाज-सेवी' आदि कई उपाधियों के साथ आपका स्मरण किया जाता है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा आपको कई मान-पत्र भी भेंट किये गये।

आपका अधिकतर जीवन धर्म ध्यान में ही व्यतीत हुआ। आपने कई पुस्तकों की रचनाएँ कीं, जिनमें भव्य प्रमोद मक्खन जैन भजनमाला, ज्ञानानन्द भजनाकार, सिंहोदर-बज्रकरण नाटक, तथा अकलंक चरित्र बहुत प्रसिद्ध हैं। आपके सभी भजन बहुत ही सुन्दर तथा मनमोहक हैं। 'श्री सिद्ध चक्र के विधान' पर आपने कई भजन बनाये जो कि बहुत ही लोक प्रिय हैं। आध्यात्मिक जैन कवि के रूप में आपको हमेशा याद किया जाता रहेगा।

पं० मक्खनलाल जी ने अपना जीवन परिचय स्वयं भी लिखा है। इसे इनकी पुस्तक 'भव्य-प्रमोद' के साथ प्रकाशित कराया गया है (प्रकाशक-सरलादेवी जैन पुस्तकालय, 2532, धर्मपुरा, देहली–110006)। हम उसे ज्यों का त्यों निम्न प्रकार दे रहे हैं।

पंडित जी का जीवन परिचय स्वयं उनकी कलम से

सवैया 31

जिला अलीगढ़ माहि तहसील अतरोली
ग्राम काजमाबाद का जनम हमारा है,
पिताजी का नाम डालचन्द नरायनि मात
पल्लीवाल जैन कुन्द कुन्द पंथ धारा है,
विक्रम संवत् इनईस पर अड़तीस
माश पक्ष दिन शुभ रवि शशि तारा है,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मात तात का था इकलौता लाडिला तनुज
धरा नाम मक्खन जो लगा उन्हें प्यारा है।

बालपने की दशा

पांच वर्ष तक मात तात के खिलोने रहे
तीन चार वर्ष खेले बालन के संग में,
चार पाँच वर्ष पढ़े ग्राम के मदरसे में
बुद्धि थी प्रबल रंगे पढ़ने के रंग में,
किन्तु उस समय था रिवाज बुरा शादियों का
बालपने में विवाह होते बुरे ढंग में,
यह भी न समझि पाते कौन वर कौन वधू
कहते माँ बाप हम न्हाए लिये गंग में,

विवाह तथा उसके बाद की दशा—

विक्रम उन्नीसे इक्यावन के फागुन में
मात तात किया था विवाह बड़े हर्ष में,
उस समै था तेरे चौदह वर्ष का था बालपन
कुछ पढ़ै कुछ रहे आर्थिक संघर्ष में,
त्रेपन में जाय महाविद्यालय मथुरा में
प्रथमा की पढ़ी थी पढाई चार वर्ष में,
छप्पन में मात मुई. गोना हो गया उधर
पिताजी थे वृद्ध फसे ग्रह परामर्श में।
एक वर्ष लों सोचते रहे करें क्या काम
कोई भी पूछे नहीं पास न हो जब दाम।
सम्वत् सर उनईस से सत्तावन में जान
कार्तिक अष्टानिक विषे गजपुर किया पयान।
हस्तनापुर के निकट ग्राम महल का नाम
अध्यापक बनकर किया पाँच वर्ष लों काम,
वहीं पिताजी आ गये गल्ले का करि काम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपा जैनियों की रही कमा लिया कुछ दाम,
चले गये हम सरधने पिता बने सुर ईश
सेवा के बदले हमें दे गये शुभ आशीष,
कन्याशाला दिवश में रैन समय शिशु शाल
शिक्षा दे नो वर्ष लों दिखला दिया कमाल,
चौवीस वर्ष प्रचारकी की दिल्ली में आय
जैन अनाथाश्रम तना भवन दिया बनवाय,
ईस्वी सन् उन्नीस से अड़तीस लों करि काम
छोड़ अनाथालय किया एक वर्ष विश्राम ।

करधा छन्द

ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल मथुरा चौरासी सरनाम
अवैतनिक छै वर्ष अधिष्ठाता के पद पर कीना काम ।
आर्थिक दशा सुधारि बनाया अति विशाल गुरुकुल का धाम,
किया रातदिन कठिन परिश्रम घर का तजि कर काम तमाम ।
पुरुषारथ थक गये बुढ़ापे में सारे उत्साह भगे
होकर उदास सब संस्थाओं से दिल्ली घर पर रहने लगे ।।

दोहा

औरस सुत कोई नहीं दत्तक सुत है एक
नाम जितेन्द्र प्रकाश है राखे कुल की टेक,
कौन किसी को देत है कौन किसी का लेत
काटे इस भव आयके बोया पर भव खेत ।

'जीवन सम्बन्धी विशेष घटनायें'

उत्तर प्रदेश के जिला अलीगढ़ में काजमाबाद एक कस्बा है वहीं हमारा जन्म सन् 1881 में हुआ । किसी समय इस ही काजमाबाद में पल्लीवाल जैनियों के 50 घर थे, लेकिन अब केवल 2 घर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं। सन् 1934 में हमारे मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि यहाँ एक विशाल मेला कराया जाय। जैन समाज के कुशल व्याख्याता रायसाहब हकीम कल्याणराय जी, राजवैद्य पं० इन्द्रमणी जी तथा बाबूलाल जी (ताले वालों ने), बसंतलाल जी मालिक बसंत लौक फैक्ट्री अलीगढ़ ने इस कार्य में पूरा-पूरा सहयोग दिया। यह महोत्सव इस इलाके में अनूठे ढंग का रहा। यह मेला बड़ी धूम-धाम से चार दिन चला। इस मेले में जैन व अजैन बन्धुओं ने पूरा सहयोग दिया।

हमारे कोई सन्तान नहीं थी इसलिये हमारी घर वाली अपनी चचेरी बहन चम्पादेवी के सुपुत्र चि० जितेन्द्र प्रकाश को फिरोजावाद से सन् 1937 में ले आई थी। सन् 1941 में हमने गोद की रस्म कर दी। देहली व मथुरा को पढ़ाई के पश्चात् 17 मई सन् 1946को फिरोजावाद के सुप्रसिद्ध हकीम गुलजारीलाल जी जैन विशारद की सुपुत्री सरला देवी से जितेन्द्र प्रकाश का विवाह हुआ। उक्त अवसर पर हमने 501 रु० सामाजिक संस्थाओं को दान किये। अव जितेन्द्र प्रकाश के 4 लड़के 4 लड़कियाँ कुल 8 सन्तान हैं जिसमें सबसे बड़ी सुपुत्री शशि जैन का शुभ विवाह चि० सुरेश चन्द्र जैन सुपुत्र स्व० लाला वलदेव प्रसाद जी जैन तिस्सा वालों से 10 जुलाई सन् 1967 में हुआ।

हमारी स्त्री का सितम्बर 1950 में लम्बी बीमारी के बाद स्वर्गवास हो गया।

(5-15) मुनि श्री अनन्त सागर जी

मुनि श्री अनन्त सागर जी महाराज का जन्म वि. सं 1940 के लगभग हुआ था। आप पल्लीवाल जात्युत्पन्न थे तथा कानपुर में साझे में व्यापार करते थे। तीन साझेदारों में से एक श्री उमराव सिंह जी भी पल्लीवाल थे।

बचपन से ही आपको धर्म के प्रति बहुत रुचि थी। संसार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की असारता को विचारते हुये आपने क्षुल्लक दीक्षा धारण कर ली। एक दिन आप मन्दिर जी में भगवान का ध्यान कर रहे थे, उसी समय आपके मन में एक महान् विचार आया तथा भगवान की प्रतिमा के आगे अपने वस्त्र त्याग कर दिगम्बर दीक्षा धारण कर ली।

आपने अपने दीक्षा काल में मध्य भारत में बहुत भ्रमण किया तथा धर्म का प्रचार किया। आपके धर्मोंपदेशों से प्रभावित होकर बहुत से अजैन लोगों ने भी जैन धर्म स्वीकार कर लिया। कहते हैं कि धर्मपुरी (धार) का एक मुसलमान सूबेदार मुनि श्री से बहुत प्रभावित हुआ तथा अपने क्षेत्र में पशु हिंसा पर उसने रोक लगा दी।

मुनि श्री के जीवन में कई बार उपसर्ग भी आये। एक बार जाड़ों के दिनों में सायंकाल आप जंगल की ओर चले गये तथा एक शिला पर बैठ कर सामायिक करने लगे। ध्यान लगाते हुए आपको बहुत देर हो गई तथा रात्रि का समय हो गया। रात्रि में मुनि विचरण नहीं करते हैं, अतः आप इसी कारण उस शिला पर बैठे रहे। रात्रि में अत्यधिक ठण्ड के कारण आपके शरीर की खाल गल गई, लेकिन आप अपने ध्यान से विचलित नहीं हुए।

आपका स्वर्गवास वि० संवत् 1994 के लगभग इन्दौर में हो गया।

(15-16) डॉ. प्यारेलाल जी

आपका जन्म दौसा (जयपुर) में 19 फरवरी सन् 1888 ई० को हुआ था। आपके पिता श्री मुरलीधर जी वहाँ पर सहायक स्टेशन मास्टर थे। आपने अपनी चिकित्सा सम्बन्धी पढ़ाई आगरा में सन् 1909 में पूरी करने के बाद सरकारी सेवा ग्रहण करली। आपका अधिकतर समय आगरा में हीव्यतीत हुआ। कुछ समय आप कानपुर तथा वाराणसी भी रहे। आप सन् 1943 में सेवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवृत हो गये, तदोपरान्त आप आगरा में रहने लगे। 90 वर्ष की दीर्घायु के बाद आपका दिनाँक 31 दिसम्वर सन् 1978 को देहान्त हो गया।

सरकारी सेवा से निवृत होने के बाद से ही आपका एक मात्र कार्य धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना था। आपने आगम के चारों अनुयोगों का बहुत बारीकी से कई बार अध्ययन किया। करणानुयोग जैसे कठिन विषय भी आपको वहुत सरल तथा रुचि-कर लगते थे। आपने धवला, जयधवला तथा महाधवला का भी कई बार अध्ययन किया। यह कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि आगम ग्रन्थों का जितना अध्ययन डाक्टर साहव ने किया उतना उनके समय में शायद ही किसी ने किया हो। आपको ग्रन्थ खरीदने का भी बहुत शौक था। आपने अपना एक निजी पुस्तका-लय ही बना लिया था जिसमें हजारों की संख्या में शास्त्र थे। आपने वहुत से शास्त्र धूलियागंज, आगरा के 'पल्लीवाल' दिगम्बर जैन मन्दिर में दे दिये। इस मन्दिर में जितने भी शास्त्र हैं उनमें ने अधिकतर डाक्टर साहब द्वारा दिये गये हैं। आपके निजी-पुस्त-कालय में कई हस्त लिखित ग्रन्थ भी थे जिन्हें उनके पितामह तथा पिताजी ने लिखे थे। आप बहुत सी जैन पत्रिकाओं के आजीवन सदस्य भी थे।

आप बहुत समय तक विभिन्न सामाजिक, शिक्षण तथा धार्मिक संस्थाओं से सम्बन्धित रहे। आप मन्दिर जी में प्रातः काल शास्त्र प्रवचन भी करते थे। वर्षों से आप दिन में एक बार ही भोजन करते थे। आप इतनी बृद्धावस्था में भी नित्य प्रति मन्दिर आते थे। आप बहुत ही सरल परिणामी व्यक्ति थे। आपकी अन्तिम इच्छा थी कि आपके नेत्र दान कर दिये जायें तथा आपका दिवंगत शरीर मेडिकल कालेज के विधार्थियों को अध्ययन हेतु दे दिया जाय। आपके पुत्रों द्वारा इस अन्तिम इच्छा की पूर्ति 31 दिसम्बर सन् 1978 को आपके दिवंगत हो जाने पर पूरी कर दी गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपके चार पुत्र थे। बड़े पुत्र डा० रतनलाल जी 'सेठ' कानपुर में अपनी 'पैथोलोजीकल लैब' चलाते थे। सेठ जी भी बहुत धार्मिक व्यक्ति थे तथा इनको अपनी समाज से विशेष मोह था। आप हमेशा कानपुर से मन्दिरों की कार्यकारिणी में सक्रिय रहे। कानपुर में पल्लीवालों के घर एक दो ही रहे हैं। वे भी नौकरी के कारण ही वहाँ पहुँचे हैं। लेकिन सेठ जी अकेले ही हर महावीर जयन्ती पर तथा क्षमावाणी पर्व पर बड़े मन्दिर के सामने एक प्याऊ लगवाते थे तथा उसके ऊपर एक बड़ा बैनर 'पल्लीवाल प्याऊ' के नाम का टँगवाते थे। यह उनकी पल्लीवाल समाज के प्रति अटूट श्रद्धा का नमूना है। वे कानपुर में अकेले पल्लीवाल होने पर भी अन्य जैन समाज के सामने अपनी समाज का अस्तित्व सिद्ध करते रहे। सेठ जी का देहान्त भी अपने पिता की मृत्यु के कुछ समय बाद ही हो गया तथा तब से कानपुर में पल्लीवाल जाति का नाम ऊँचा करने वाला कोई भी नहीं रहा।

15-17) श्री मिठ्ठनलाल जी कोठारी

श्री मिठ्ठनलाल जी का जन्म दिनांक 26 सितम्बर सन् 1890 को ग्राम पहरसर (जिला भरतपुर) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मूलचन्द था। 9 वर्ष की आयु में आप लाला चिरंजीलाल जी के दत्तक पुत्र के रूप में आये। लाला चिरंजीलाल भरतपुर राज्य में कार्य करते थे। उनके स्वर्गवास के बाद श्री मिठ्ठनलाल जी को उनके स्थान पर रख दिया गया। आपके विश्वसनीय कार्यों के कारण आपको राज्य के दफ्तर कोठार में कोठारी पद पर पदोन्नत कर दिया गया।

आप सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में सक्रिय रहे। भरतपुर के 'पल्लीवाल श्वेताम्बर जैन मन्दिर' की स्थिति सुधारने में आपका विशेष योगदान रहा। आपके प्रयासों से ही 'पल्लीवाल जैन कान्फ्रेंस' की स्थापना हुई। आपने कई तीर्थ यात्राएँ भी कीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15-18 डा. बैनीप्रसाद जैन

आप इतिहास तथा राजनीति के एक महान् स्कॉलर थे। आपका जन्म 19 फरवरी 1895 में हुआ। आपके पिता बरारा (जिला आगरा) के रहने वाले थे, लेकिन आपका अधिकांश समय इलाहाबाद में व्यतीत हुआ। आपने इतिहास में पी. एच डी. की उपाधि प्राप्त की। आप इलाहाबाद विश्व-विद्यालय में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे। आपने अपने क्षेत्र में बहुत ख्याति अर्जित कर ली थी। महात्मा गांधी ने भी एक बार आपसे देश के संविधान का मसौदा तैयार करने के सम्बन्ध में परामर्श किया था। आपके द्वारा लिखित 'जहाँगीर का इतिहास' एक महान् कृति है। आपकी अन्य कृतियाँ 'कन्सेप्ट ऑफ पॉलिटिकल साइन्स' 'भारत की पुरानी सभ्यतायें', 'इण्डियन सिटीजनशिप' ए बी सी ऑफ सिविक्स' तथा 'भारत पाकिस्तान प्रोवलम' हैं। भारत पाकिस्तान प्रोवलम' आपकी अन्तिम कृति है। अपका स्वर्गवास दिनांक 8 अप्रेल 1945 को हो गया।

(15-19) सेठ छदामीलाल जी

सेठ छदामीलाल जी ने जैन धर्म की प्रभावना हेतु विपुल धन-राशि व्यय करके ऐतिहासिक महत्व के जो कार्य किये हैं, उमसे सम्पूर्ण जैन समाज भलि भांती परिचित है। इन्होंने धार्मिक कार्यों में करोडों रुपये की धनराशि देकर एक महान् कार्य किया।

सेठ जी के पूर्वज फिरोजाबाद से दक्षिण में लगभग 5 किलो-मीटर दूर जमुना के तट पर स्थित चन्दवार नामक गाँव में निवास करते थे। ऐसा अनुमान किया जाता है कि सेठ जी के पूर्वज चन्दवार के प्रमुख एवं राजमान्य प्रतिष्ठित नागरिक थे। कालान्तर में चन्दवार उजड़ने लगा तथा फिरोजाबाद आबाद होने लगा, अतः सेठ जी के पूर्वज भी चन्दवार छोड़कर फिरोजाबाद आकर रहने लगे।

सेठ जी का जन्म 12 जून 1896 को फिरोजाबाद नगर में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मोतीलाल जी तथा माता का नाम श्री मती कुन्दन बाई था। बचपन में ही सेठ जी की माताजी का देहान्त हो गया था। जब इनकी आयु लगभग 10-11 वर्ष की थी तभी इनके पिताजी का भी स्वर्गवास हो गया। तेरह वर्ष की अल्पायु में इनका विवाह हो गया। इस प्रकार छोटी उम्र में ही इन पर गृहस्थी का बोझ आ गया।

सेठ जी बहुत ही परिश्रमी व्यक्ति थे। इन्होंने फिरोजाबाद में कांच का व्यवसाय प्रारम्भ किया। सन् 1925 में फिरोजाबाद में ही 'जैन ग्लास वर्क्स' के नाम से एक कारखाना स्थापित किया, जिसे सन् 1928 में फिरोजाबाद के निकट हिरनगौ में स्थानान्तरित कर दिया। आप कुशल व्यवसायी थे, इसी कारण कुछ समय में ही आपने कांच उद्योग में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया। 13 मार्च 1957 को आपकी धर्म पत्नी श्रीमती शर्वती बाई का देहान्त हो गया।

इन दिनों देश के स्वतन्त्रता संग्राम का बहुत जोर था। गांधी जी के नेतृत्व में विभिन्न आन्दोलन चल रहे थे। तभी सन् 1930 से सेठ जी इन आन्दोलनों के लिए नियमित रूप से प्रति मास 500 सौ रुपये गुप्त दान के रूप में देते रहे।

सन् 1947 में सेठ जी ने साढ़े छह लाख रुपये की धन राशि से श्री छदामीलाल जैन ट्रस्ट' की स्थापना की। आज इस ट्रस्ट में करोड़ों रुपये हैं। इस ट्रस्ट के अन्तर्गत सेठ जी ने एक विशाल जैन मन्दिर, जैन पार्क, धर्मशाला, पुस्तकालय, एक डिग्री कॉलेज तथा इसी प्रकार की अनेक जन उपयोगी संस्थायें स्थापित कीं, जो इस समय बड़े सुचारु रूप से जनता की सेवा में संलग्न हैं।

जैन मन्दिर आदि के निर्माण कार्य पूरे हो जाने पर सेठ जी के मन में एक विचार और आया। दक्षिण के श्रवणबेलगोल में जिस प्रकार भगवान बाहुबली की मूर्ति स्थापित है, उसी प्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की एक मूर्ति उत्तर भारत में भी स्थापित की जाय। सच्चे मन से की गई उनकी यह इच्छा भी पूर्ण हुई। उन्होंने दक्षिण में कारकल के निकट मंगलपादे नामक पहाड़ी में से 130 टन वजन की तथा 45 फुट ऊँची प्रतिमा बनवाई। भगवान बाहुबली की इस विशाल प्रतिमा ने 12 जून 1975 को फिरोजाबाद में पदार्पण किया।

सेठ जी की उक्त धार्मिक सेवाओं को देखते हुये, 20 अक्टूबर 1972 को आपका दिल्ली में अभिनन्दन किया गया तथा आपको 'श्रावक शिरोमणि' की उपाधि से विभूषित किया गया। आप अपने जीवन के अन्तिम समय तक धार्मिक सेवाओं में लगे रहे। 12-13 जनवरी सन् 1976 की रात्रि को कुछ आततताइयों ने सेठ जी की निर्मम हत्या कर दी तथा जैन समाज ने एक महान् धर्म प्रेमी को हमेशा के लिए खो दिया।

आज सेठ जी द्वारा स्थापित 'श्री छदामीलाल जैन ट्रस्ट' के द्वारा निम्नलिखित संस्थाओं का संचालन हो रहा है—(1) श्री दिगम्बर जैन महावीर जिनालय, (2) श्री मोतीलाल जैन पार्क, (3) श्री कानजी पुस्तकालय, (4) श्री वर्णी स्वाध्याय कक्ष, (5) श्रीमती शर्बतीदेवी जैन धर्मशाला, (6) श्री सी. एल. जैन डिग्री कॉलेज, (7) श्री छदामीलाल जैन जूनियर हाईस्कूल, हिरन-गाँव, (8) श्री चन्द्रपाल दिगम्बर जैन पाठशाला, चँद्रवार, (9) श्री मोतीलाल जैन धर्मार्थ औषधालय। सेठ जी के नाम से इस ट्रस्ट द्वारा ही एक 'मैटरनिटी हॉस्पीटल' (श्रीमती कुन्दन बाई महिला चिकित्सालय) तथा त्रिमूर्ति-बालोद्यान भी बनवाया गया है।

सेठ जी की उक्त धार्मिक एवं सामाजिक सेवाओं के कारण सेठ जी का नाम अमर रहेगा।

(5-20) मुनि श्री क्षमा सागर जी

आपका गृहस्थावस्था का नाम श्री करोड़ोमल था। आप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगरा के रहने वाले थे। आपका जन्म सन् 1898 ई. में हुआ था। आपकी धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि थी। आप नित्य प्रति धूलिया गंज आगरा स्थित 'पं. दि. जैन मन्दिर' में पूजा-पाठ करने के लिए आते थे तथा स्वाध्याय भी करते थे। आपके अन्तिम दिनों में नेत्र ज्योति नष्ट प्राय हो गई थी। उसके बाद भी आप धार्मिक क्रियाओं का पूर्ण पालन करते थे। सन् 1979 में आपके पैर में बहुत चोट लग गई थी तथा वहा पर फोड़ा बनकर पक गया था। आपने अंग्रेजो दवाइयाँ लेने से साफ इन्कार कर दिया तथा दिनांक 14 अक्टूबर 1979 को समाधि पूर्वक मरण करने का निश्चय किया। आपने क्रम से आहार, दूध तथा जल का त्याग किया। दिनांक 23 अक्टूबर को जल का भी त्याग कर दिया। फिर उस समय उपस्थित मुनि श्री श्रुत सागर जी महाराज से दिनांक 25 अक्टूबर 1979 को दिगम्बर दीक्षा धारण की तथा अब वे मुनि क्षमासागर हो गये। आपने बहुत धैर्य पूर्वक तथा विवेक सहित समाधि ली। 18 दिन उपरान्त दिनांक 1 नवम्बर सन् 1979 (कार्तिक सुदी 11) को इस नश्वर शरीर को त्याग दिया। आगरा के अन्दर समाधिमरण का यह प्रथम अवसर था। आपके अन्तिम दर्शनार्थ हजारों जैन तथा जैनेतरों को प्रतिदिन भीड़ लगी रहती थी। इससे जैन धर्म की बहुत प्रभावना हुई।

(15-21) आर्यिका सर्वंती बाई

पल्लीवाल जाति में आप एक महान् महिला सन्त हुई हैं। आपके पिता का नाम श्री सांवलदास जी था तथा वे आगरा के रहने वाले थे। सर्वंती बाई का जन्म सन् 1900 ई. के लगभग हुआ था। आप शादी के कुछ दिनों बाद ही विधवा हो गई थीं। आप अपने पिता के घर ही रहती थीं। उन दिनों भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का बहुत जोर था। आप भी इससे बहुत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभावित हुई तथा आपने देश सेवा करने का निश्चय किया। आपने विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। इसके कारण आपको दो बार जेल भी जाना पड़ा। आपने अन्य महिलाओं को भी इन आन्दोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

देश प्रेम के साथ साथ आपमें धार्मिक संस्कार भी पूरी तरह से थे। आप सभी धार्मिक कार्यों में हमेशा भाग लेती रहती थीं। एक बार एक मुनि संघ आगरा में आया। आप मुनि श्री के प्रवचनों को ध्यान पूर्वक सुनती थीं। आपके मन में भी वीतरागता का भाव उत्पन्न हुआ तथा तत्काल ही आर्यिका दीक्षा धारण कर ली। कहते हैं कि आप यह दीक्षा ग्रहण करने से पूर्व अपने पिता के घर तक तो गई, लेकिन बाहर से ही आवाज दे कर कह दिया कि वह दीक्षा ग्रहण कर रही है। उन्होंने इस समय घर के अन्दर प्रवेश करना उचित नहीं समझा। आपने आर्यिका के रूप में कई स्थानों का भमण किया तथा जन धर्म का प्रचार किया।

(15-22) बाबूप्रताप चन्द जी

श्री प्रताप चन्द जी का जन्म आगरा में फाल्गुन कृष्णा 5 संवत् 1960 (यानि कि 6 फरवरी सन् 1904) को हुआ था। आपके पिता श्री गनपतराय जैन धर्मात्मा व्यक्ति थे। आपकी शिक्षा केकड़ो (राजस्थान) में तथा बाद में आगरा में हुई।

आपने सन् 1921 में 'राजकीय रेलवे पुलिस' की नौकरी प्रारम्भ की। 40 वर्ष की राजकीय सेवा के वाद 1 जनवरी सन् 1962 में आप सेवा निवृत हो गये।

आपको साहित्य लेखन में प्रारम्भ से ही रुचि थी। आपके विभिन्न लेख 'सरस्वती' 'चाँद' तथा 'साप्ताहिक प्रताप' जैसी उच्च स्तरीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये। जैनियों की तो शायद कोई ही हिन्दी पत्रिका शेष रही होगी, जिसमें इनके लेख अथवा समी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षाहँ न प्रकाशित हुई हों। अन्यथा आपने प्रत्येक जैन पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित हुये हैं। 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के आप दो बार सम्पादक रह चुके हैं। पहले सन् 1925 में तथा फिर सन् 1984 से 1985-86 तक। आप एक वर्ष तक 'अमर भारती के भी सम्पादक रहे।

आपकी लगभग सभी जैन विद्वानों से मुलाकात हुई हैं। तथा उनसे सामाजिक तथा धार्मिक चर्चाएँ भी हुई हैं। आप आगरा की विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से भी सम्बध रहै हैं। आप आगरा की कई जैनेतर संस्थाओं से भी जुड़े हुये हैं।

आगरा के महावीर दिगम्बर जैन इन्टर कॉलेज की स्थापना आपने ही वर्तमान भवन में महावीर दिगम्वर जैन जूनियर स्कूल के रूप में 22 अक्टूबर 1942 को कराई थी। 'आगरा अन्तः धर्म संस्थान' में सन् 1974 से आप सक्रिय जुड़े रहे हैं। वर्षों से आप आगरा के आर्य- विशप तथा मुफ्ती साहब से भी जुड़े रहे हैं। आप पल्लीवाल समाज के साथ-साथ आगरा के भी माननीय सदस्य हैं। हम आपकी दीर्घायु की कामना करते हैं जिससे आप समाज को और अधिक मार्ग दर्शन प्रदान करते रहें।

(5-23) श्री जैनेन्द्र कुमार जी—

श्री जैनेन्द्र कुमार जी प्रेमचन्दोत्तर युग के श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में विख्यात हैं। आपका जन्म अलीगढ़ जिले के कौडियागंज नामक कस्बे में सन् 1905 में हुआ था। बाल्यावस्था में ही आपके पिता की मृत्यु हो गई, अतः आपका पालन-पोषण आपकी माता और मामा ने किया। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल ऋषि ब्रह्मचर्याश्रम में हुई। सन् 1919 में आपने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया किन्तु सन् 1921 के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपकी शिक्षा का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम टूट गया। आपमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति छात्र जीवन से ही थी। जेल में स्वाध्याय के साथ ही आपने साहित्य सृजन का कार्य भी आरम्भ कर दिया। आपकी पहली कहानी 'खेल' सन् 1928 में 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद आप निरन्तर साहित्य सृजन में प्रवृत्त रहे हैं। आपको 'हिन्दुस्तान एकेडमी' पुरस्कार सहित अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

श्री जैनेन्द्र कुमार जी ने कहानी, उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण आदि अनेक गद्य विधाओं को समृद्ध किया है। आपकी प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ निम्नलिखित हैं।

निबन्ध संग्रह— प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, मंथन, सोच विचार, काम, प्रेम और परिवार।

उपन्यास — परख, सुनीता, त्याग पत्र, कल्याणी, विवर्त, सुखदा, व्यतीत, जयवर्धन, मुक्ति बोध।

कहानी संग्रह— फाँसी, जयसन्धि, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, एक रात, दो चिड़ियाँ, पाजेब।

(इन संग्रहों के बाद जैनेन्द्र जी की समस्त कहानियाँ दस भागों में प्रकाशित की गई हैं।)

संस्मरण— ये और वे।'

अनुवाद - मन्दाकिनी (नाटक), पाप और प्रकाश (नाटक), प्रेम में भगवान (कहानी संग्रह)।

उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त आपने सम्पादन कार्य भी किया है। बहुत समय से आप दिल्ली में रह रहे हैं। हम आपकी दीर्घायु की कामना करते हैं।

(5-24) श्री श्यामलाल वारोलिया—

आप आगरा के प्रमुख समाज सेवी थे। आपका जन्म आगरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के पास ग्राम मिढ़ाकुर में दिनांक 13 सितम्बर सन् 1905 ई० को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री नारायणदास तथा माता का नाम श्रीमती चमेली बाई है। मिढाकुर से आकर आप धूलिया गंज, आगरा में बस गये। आपने मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त की।

यद्यपि आप मुनीमगीरी तथा दलाली करते थे तथापि सामाजिक कार्यों में आप विशेष रुचि लेते थे। आप आगरा की विभिन्न धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। आपकी हार्दिक इच्छा थी कि पल्लीवाल जाति का निष्पक्ष इतिहास सबों के सम्मुख आये। आपने इतिहास लिखवाने के लिए कई उद्यम किये। आपकी सत्प्रेरणा से ही प्रस्तुत इतिहास भी लिखा जा सका है।

सन् 1982 में आपका आगरा में निधन हो गया।

(5-25) आर्यिका शान्तिमती जी

आप मुनि श्री शान्तिसागर जी महाराज (अलावड़े वालों) के गृहस्थावस्था की बहिन हैं। आपका जन्म वि० संवत् 1968 में अलवर जिले के अलावड़ा नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री छोटेलाल जी तथा माता का नाम श्रीमती चन्दन बाई था। 40 वर्ष की आयु में आपने आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वालों) से आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर ली। कुछ वर्ष पूर्व आपका स्वर्गवास हो गया।

(5-26) मा० रामसिंह जी

आप मेरे पूज्य पिताजी हैं। आपका जन्म 1 अगस्त सन् 1915 को आगरा जिले की किरावली तहसील के मंगूरा नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री चन्द्रभान जैन पटवारी थे तथा आपके बाबा (पितामह) श्री नन्दकिशोर जी एक बड़े जमींदार थे। बचपन में ही माता की मृत्यु हो जाने के कारण आप अपने पितामह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथा मातामह के साथ ही रहे। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अछनेरा के स्कूल में पूर्ण की। एम० ए० (हिन्दी) तथा एल० टी० की परीक्षाएँ आगरा विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण कीं।

अपनी शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त आपने विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अध्यापन का कार्य किया। आपने सबसे अधिक समय (25 वर्ष) के० जी० इन्टर कालेज, आगरा में अध्यापन कार्य किया।

विद्यार्थी काल से ही आपने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। आपने कई आन्दोलनों में भाग लिया। कुछ समय आप आगरा की शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे।

प्रारम्भ में आप आर्य समाज से बहुत प्रभावित थे, लेकिन परम पूज्य क्षुल्लक श्री स्वरूप सागर जी महाराज तथा ब्रह्मचारी श्री मूलशंकर जी देसाई के सम्पर्क में आने के बाद आपकी रुचि जैन धर्म के प्रति बढ़ती गई। जैन धर्म के प्रति विशेष रुचि देखकर आपके साले श्री सुगनचन्द ने आपको कई शास्त्र भेंट किये। फिर तो आपने अनेक आगम ग्रन्थों का अध्ययन किया। आप पिछले पच्चीस वर्षों से नित्य प्रति सायंकाल धूलिया गंज, आगरा स्थित श्री पल्लीवाल दिगम्बर जैन मन्दिर में शास्त्र प्रवचन करते थे। आपकी विद्वता के कारण बाहर के लोग भी अपने यहाँ शास्त्र प्रवचन के लिए आपको बुलाते रहते थे। आपकी गिनती बड़े पंडितों में थी।

आप हमेशा खद्दर पहनते थे। चमड़े का जीवन भर के लिए त्याग था। पिछले 25 वर्षों में आपने जमींकंद का भी सर्वथा त्याग कर दिया था। आपने कभी कोई ट्यूशन नहीं किया। जब कभी आपको बाहर धार्मिक प्रवचनों आदि के लिए जाना पड़ता था, तब कभी-भी समाज से कोई भेंट स्वीकार नहीं की, बल्कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जितना हो सका स्वयं दान दिया। आप धार्मिक कार्यों के लिए भेंट स्वीकार करना अच्छा नहीं मानते थे। आपके आजीवन छना पानी पीने का नियम था। इसीलिए आप हमेशा अपने साथ एक छन्ना रखते थे। जब कभी छन्ना ले जाना भूल जाते, तो वे कहीं पानी नहीं पीते थे।

आपने कई पत्र-पत्रिकाओं का भी संपादन किया। समाज की पत्रिकाओं 'पल्लीवाल-बन्धु' तथा 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' का आपने कई वर्षों तक संपादन किया। आपके बहुत से लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने तीन पुस्तकें भी लिखी हैं। वे हैं—'भगवान महावीर और उनका दिव्य सन्देश', 'जैन धर्म के प्रवर्तक' तथा 'भगवान आदिनाथ'। 'भगवान आदिनाथ' अभी तक अप्रकाशित ही है।

आप विभिन्न शिक्षा संस्थाओं की कार्यकारिणी से भी सम्बन्धित रहे। कुछ समय तक आप आगरा कॉलेज के ट्रस्टी रहे। समाज द्वारा संचालित 'कस्तूरी देवी जैन विद्यालय, आगरा' के आप बहुत समय तक व्यवस्थापक रहे।

आपका स्वर्गवास 24 अप्रैल सन् 1978 को आगरा में हो गया।

(5-27) मुनि श्री श्रुति सागर जी

आपका जन्म वि. संवत् 1971 में ग्वालियर के निकट मोहना नामक ग्राम में हुआ था। आपके गृहस्थ जीवन का नाम श्री दयाराम था। आपके पिता का नाम श्री टेकचन्द तथा माता का नाम श्रीमती सरस्वती देवी था। युवावस्था में आप मुरैना आकर रहने लगे तथा वहीं पर हलवाई का व्यवसाय करते थे। आपको प्रारम्भ से ही धर्म के प्रति विशेष रुचि थी। इसी के फलस्वरूप आपने सातवीं प्रतिमा धारण कर ली। तदुपरान्त 26 मई सन् 1974 को आपने आचार्य कुन्थ सागर जी से दिगम्बर दीक्षा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धारण कर ली। आज भी आप स्थान-स्थान पर विहार करके मनुष्यों को धर्मोपदेश दे रहे हैं।

आपको कविता बनाने की बहुत रुचि थी। ब्रह्मचारी अवस्था में आपने चौबीसों भगवान के पूजन की अलग-अलग रचना की तथा कुछ भजन भी लिखे। पूजन की पुस्तक तो प्रकाशित भी हो चुकी है।

आपने अपने आगरा चातुर्मास के समय पल्लीवाल समाज के वयोवृद्ध श्री किरोड़ीलाल जी को विधिवत समाधिमरण करवाया। श्री किरोड़ीलाल जी को उनके अन्तिम समय में दिगम्बर दीक्षा ग्रहण करवाई तथा उनका नाम मुनि क्षमासागर रखा। मुनि क्षमा सागर जी का दिगम्बर दीक्षा ग्रहण करने के 18 दिन बाद स्वर्गवास हो गया।

(5-28) श्री सुगनचन्द जी जैन

आपका जन्म आगरा में सन् 1917 को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गोकुलचन्द जैन था। जब आपकी आयु लगभग 20 वर्ष की थी तब ही आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। अतः आप पर ही पूरी गृहस्थी का बोझ आ गया। आपने आगरा में ठेकेदारी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। कुछ वर्षों तक तो तो आप इस कार्य में रहे, लेकिन आपको यह कार्य अच्छा नहीं लगा। आप आगरा छोड़कर जयपुर चले गये तथा वहीं पर नौकरी प्रारम्भ कर दी। आप अपने अन्तिम समय तक जयपुर ही रहे। आपका सन् 1967में आकस्मिक निधन हो गया।

अपने पिता की भाँति आपको भी जैन धर्म में विशेष रुचि थी। पल्लीवाल जाति के यथासम्भव आप ही पहले व्यक्ति रहे हैं जिन्होंने अपने घर में जैन शास्त्रों तथा पुस्तकों की लाइब्रेरी खोली। आपने इस लाइब्रेरी का नाम अपने पिता के नाम पर 'गोकुल लाइब्रेरी' रखा। इसके अन्तर्गत उस समय उपलब्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगभग सभी जैन ग्रन्थ तथा पुस्तकें सम्मिलित थीं तथा इनकी संख्या हज़ार तक थी। आप स्वयं तो स्वाध्याय करते ही थे, साथ ही दूसरों को भी स्वाध्याय करने के लिए ग्रन्थ उपलब्ध कराते थे। आगरा से जयपुर चले जाने पर आपको यह लाइब्रेरी बन्द करनी पड़ी, लेकिन आपके स्वाध्याय का क्रम कभी नहीं टूटा।

जयपुर में आप 'महावीर भवन' तथा 'पद्मपुरा क्षेत्र कमेटी' से सम्बद्ध रहे। आपने पं० चैनसुखदास जी तथा डॉ० कस्तूर चन्द जी कासलीवाल के साथ भी काफी कार्य किया। आपने कई लेख भी लिखे, जिन्हें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया।

(5-29) मुनि श्री शान्तिसागर जी

आपका जन्म वि. संवत् 1972 में अलवर के अलावड़ा नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री छोटेलाल तथा माता का नाम श्रीमती चन्दन बाई था। आपको बचपन से ही जैन धर्म के प्रति विशेष रुचि थी। इसी कारण आपने 57 वर्ष की आयु में आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज से दिगम्बर दीक्षा ग्रहण कर ली। आज भी आप धर्मोपदेश देकर लोगों को कल्याण मार्ग पर लगा रहे हैं।

(5-30) अन्य प्रभावशाली व्यक्ति

उपर्युक्त व्यक्तियों के अतिरिक्त और भी बहुत से धार्मिक व्यक्ति समय-समय पर होते रहे हैं। आगरा के ब्रह्मचारी श्री रामचन्द जी, पं. रामनाथ जी (दूध वाले), श्री रतनलाल जी मुनीम तथा श्री सूरजभान जी 'प्रेम' के नाम उल्लेखनीय हैं। अन्य लोगों में अलीगढ़ के हकीम कल्याण राय जी, ग्राम मई के पंडित मानक चन्द जी, मथुरा के पं, इन्द्रचन्द जी, ग्राम बहराइच के पं. सुमेर चन्द जी, आगरा के श्री नेमीचन्द जी बरवासिया, अलीगढ़ के वैद्य रामलाल जी, फिरोजाबाद के गंगाप्रसाद जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन तथा कचौड़ाघाट के पं० झुन्नीलाल जी मुख्य है ।

श्री बाबूलाल जी (मनेपुरा, जिला आगरा) ने लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व ब्रह्मचारी दीक्षा ग्रहण कर ली थी। वे वर्षों तक ब्रह्मचारी स्वरूपानन्द जी के नाम से उदासीन आश्रम इन्दौर में रहे। आजकल आगरा में रह रहे हैं।

नागपुर क्षेत्र के श्री विद्याधर जी उमाठे का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आप स्वावलम्बी कॉलेज ऑफ ऐड्यूकेशन, वर्धा के प्राचार्य हैं। आपने कई शैक्षिक पुस्तकें लिखी हैं। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि लेते हैं। आपने 'अनेकान्त प्रकाशन' नामक संस्था की स्थापना की, जिसके अन्तर्गत कई धार्मिक/आध्यात्मिक ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है।

राजनैतिक क्षेत्र में भी कई पल्लीवाल वन्धु बहुत सक्रिय रहे हैं। वर्तमान में सांसद श्री जे० के० जैन का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कई वैज्ञानिक भी इस जाति को सुशोभित कर चुके हैं। स्व० डॉ० पदमचन्द जैन, (पुत्र श्री दौलतराम जी, रुनकता (आगरा) निवासी 'सैन्ट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीट्यूट,' लखनऊ के एक सुविख्यात वैज्ञानिक थे।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षष्टम्-अध्याय

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में पल्लीवाल जाति का योगदान

पल्लीवाल जैन जाति जनसंख्या की दृष्टि से एक छोटी जाति हैं, लेकिन भारत के स्वतन्त्रता ग्रान्दोलनों में यह सहभागी रही है।[34] इन ग्रान्दोलनों में पल्लीवाल जाति के सैंकड़ों स्त्री-पुरुष तथा बच्चों ने सक्रिय भाग लिया। वहुत से लोगों को विभिन्न ग्रान्दोलनों में भाग लेने के कारण कई बार जेल भी जाना पड़ा। इंन ग्रान्दोलनकारियों में से कुछ का ही विवरण प्राप्त हो सका है, जो निम्न प्रकार है—

श्री रघुवर दयाल जी पुत्र श्री रामदयाल जी जैन का जन्म दिनांक 28-10-1889 को मउ (इन्दौर) में हुग्रा था। इन्होंने सन् 1911 में M.A. में इन्दोर से व L.L.B. इलाहाबाद से 1913 में कर लिया था। ग्राप उसके बाद कुछ समय कनेडियन मिशन कॉलेज में लेक्चरार रहे। ग्रौर फिर श्री ग्रर्जुनलाल सेठी के स्व-तन्त्रता संग्राम में गिरफ्तार हो जाने के बाद ग्राप त्रिलोकचन्द्र जैन हाई स्कूल इन्दौर के हैड मास्टर हो गये उसके बाद ग्राप उत्तरी व पच्छिमी रेल्वे में ग्रोफिस हो गये। ग्रौर लाहोर चले गये। जहाँ एक ग्रंग्रेज ग्रोफिस के किसी भारतीय से यह कहने पर कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Your India Blady उसका पीट दिया। आप सन् 1936 में Pereonal officer N. W. Rly. केपद से सेवा मुक्त कर दिये गये थे। उनके स्वयम् कहने के अनुसार आप महात्मा गांधी जी के साथ प्रसिद्ध डंडी मार्च में भी गये थे। स्वतन्त्रता के आन्दोलन में एक बार जेल गये।

आपकी जैन दर्शन में शुरु से ही रुची थी। सन् 1913 में आपने जैन धर्म पर सरस्वती में लेख दिया था। बचपन में ही आपने चमड़े का प्रयोग जीवन भर के लिये छोड दिया था। आप काफी समय तक अखिल भारतीय दिगम्बर परिषद के महा मंत्री रहे। आपने करीब एक लाख रुपये का रघुबर दयाल रामदयाल जैन चैरेटेबिल ट्रष्ट की स्थापना कर जिसके द्वारा बहुत से जैन धर्मावलम्बियों को दिक्षा दान में सहयोग दिया व अन्य धार्मिक कार्यों में पैसे का सद उपयोग किया। एक बार किसी दुकानदार ने आपको केशर चमड़े का बुरादा मिला हुआ दे दिया जिसके पश्यचाताप व आत्म शुद्धि हेतु 3 रोज का अन्शन किया।

आप महात्मा गांधी जी के काफी सम्पर्क में थे और सन् 1948 में महात्मा गांधी जी की भस्मी को लेकर कैलाश पर्वत व मान सरोवर झील ले गये थे। आपकी मृत्यु 9 जून 1969 को देहली में हो गई।

रत्न त्रियधारी पुत्र श्री रघुवर दयालजी अच्छे विद्वान थे। जिन्होंने सन्त विनोबा जी के सम्पर्क में रह कर भूदान में कार्य किया वे विनोबा जी के आखरी समय तक उनके व्यक्तिगत सचिव रहे।

श्री महावीर प्रसाद जैन स्वतन्त्रता संनानी—

श्री महावीर प्रसाद जैन का जन्म 10 जुलाई सन् 1922 को ग्राम गविन्दगढ़ राज्य अलवर में हुआ था। आपके पिता का नाम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री कांतिचन्दजी था जो पटवारी थे। 1933 में उनका स्थानान्तरण अलवर हो गया, अतः तभी से आप भी अलवर में ही रहने लगे व आपका विद्यार्थी जीवन यहीं निकला। 1938 से क्रांतिकारी गति विधियों में देशी राज्य व ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध भूमिगत रह कर कार्य शुरू किया। कुछ नोजवानों को संगठित कर अरावली को श्रृंखलाओं में छुप कर वम बनाना व अन्याय के विरुद्ध परचे निकालना शुरू किया। क्रांतिकारी साहित्य की पुस्तकालय स्थापित कर लोगों में ऐसे साहित्य का वितरण करते रहे। गुप्त रूप से हस्तलिखित नवजागरण मासिक पत्रिका राजस्थान में निकालते। एक बार पैसे की दिक्कत आई तो अपने घर से जेवर लेकर हथियार इक्ट्ठा करने धन को देदिया। प्रथम बार सन् 1942 में भारत छोडो आन्दोंलन में पहले दशहरे के दिन अपने संगठन के कार्यकर्त्ताओं के साथ तार काटे। वाद में दिवाली के दिन शहर के पोस्ट आफिसों व तमाम लेटर वक्सों में आग लगाई व दिवाली की दोज (11-11-1942) को प्रथम बार आप गिरफ्तार हुए व आपके विरुद्ध षड़यन्त्र के व आगजनी (120 to 435' P.C) के अन्दर मुकदमे में चालान हुआ व फलस्वरूप 2 साल 6 माह की सख्त सजा दी गई। वहाँ से मुक्त होने के बाद आप विद्यार्थी संगठन में पूर्ण रूप से लग गये। अतः सन् 1944 में आप अलवर राज्य विद्यार्थी कांग्रेस के अध्यक्ष व 1945 में राजपूताना के विद्यार्थी को संगठित करने के फलस्वरुप राजपूताना विद्यार्थी कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। सन् 1946 में अलवर राज्य में 'गैर जुम्मेदार मिनिस्टरों कुर्सी छोडो" अन्दोंलन हुआ, उसमें भी आप सर्व प्रथम व्यक्ति थे, जो जेल गये।

1948 में भारत आजाद हाने के वाद आपने पुलिस में उपनिरिक्षक के पद पर कार्य किया। उसमें बहुत मेहनत व ईमानदारी से कार्य करने के फलस्वरूप आपने बहुत अच्छी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख्याति पाई व सन् 1974 में आपने 319 K, 300 ग्राम नाजायज अफीम पकड कर सारे विश्व का रिकार्ड तोड़ा जो रिकार्ड आज तक कायम है। 1981 में राज्य सेवा से मुक्त होकर आप आजकल सामाजिक सेवा, धार्मिक कार्यों व आध्यात्मिक उन्नति में लगे हैं।

श्री भागचन्द्र जैन स्वतन्त्रता सेनानी

आप ग्राम मलावकी तहसील लक्ष्मणगढ (अलवर) के रहने वाले थे। अलवर में विद्यार्थी जीवन में ही महावीर प्रसाद जी के सम्पर्क में आने के बाद क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया। सन् 1942 में स्वतन्त्रता आन्दोलन 'भारत छोडो' में रेल के तार काटे व पोस्ट ऑफिस में आग लगाई जिसके फलस्वरूप षडयन्त्र केस में मुलजिम रहे। किन्तु पुलिस इनको गिरफ्तार नहीं कर सकी और ये भूमिगत रह कर कार्य करते रहे। भारत स्वतन्त्र होने के वाद राजस्थान विधान सभा कांग्रेस पार्टी के काफी समय तक सचिव रहे। बाद में आपने अलवर में ही वकालत शुरू कर दी। कुछ वर्ष पूर्व आपका स्वर्गवास हो गया।

श्रीमति कमला जैन-स्वतन्त्रता सैनानी

श्रीमति कमला पुत्री किशोरीलाल जैन मलावली ग्राम तहसील लक्ष्मणगढ (अलवर) की रहने वाली थी। आपके पति का छोटी आयु में ही देहान्त हो गया था। उसके बाद देश की सेवा में कार्य किया। सन् 1946 में अलवर राज्य प्रजामंडल के आन्दोलन "गैर जिम्मेदार मिनिस्टरों कुर्सी छोडो" में आपको भी अन्य महिलाओं के साथ पुलिस ने पकड़ कर जंगलों में छोड दिया। स्वतन्त्र भारत में आपने राज्य सेवा की और अन्त में आप विकास अधिकारी के पद से राज्य सेवा से मुक्त हुई। राज्य सरकार ने आपको भी स्वतन्त्रता सैनानी घोषित किया है।

श्री पन्नालाल जैन

आपका बचपन ब्यावर जिला अजमेर में व्यतीत हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपने अलवर में आकर व्यापार किया व प्रजा मंडल की गतिविधियों में भाग लिया। आप भी सन् 1946 में गैर जुम्मेदार मिनिस्टरो कुर्सी छोडो' आन्दोलन में अलवर में जेल गये थे।

जिला—आगरा

बाबू उत्तम चन्द वकील—

आप आगरा के निकट बरारा नामक ग्राम के रहने वाले थे। 1936 से आप राष्ट्रीय क्षेत्र में अधिक प्रकाश में आये और जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य और मंडल कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी बराबर रहे। आपने अपने किसानों को संगठित किया। सन् 1940 के आन्दोलन में आप नजरवन्द कर लिए गये और लगभग एक साल जेल में रहना पड़ा। सन् 1942 के आन्दोलन में आप 9 अगस्त को ही गिरफ्तार कर लिए गये और मई 1944 को छोड़े गये। कुछ समय पूर्व आपका स्वर्गवास हो गया।

बाबू नेमीचन्द जैन—

आप जोतराज वसैया (आगरा) के रहने वाले थे। आप सन् 1930 से राष्ट्रीय क्षेत्र में कार्य करते रहे। इस आन्दोलन में एक साल की सजा हुई थी। आप मंडल कांग्रेस कमेटी के प्रमुख कार्यकर्ता रहे। सन् 1940 में आप नजरबन्द कर लिए गये। सन् 1942 में आप पर यह जुर्म लगाया गया कि कागारोल का डाक बंगला जलाया गया था तथा पुनः नजरबन्द कर लिए गये।

श्री पीतम चन्द जैन—

आप रायभा ग्राम के रहने वाले थे। आपको टेलीफोन के तार काटने के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया और कई माह तक तगरवन्द रखा गया।

श्री श्यामलाल जैन—

आप भी रायभा के रहने वाले थे तथा आप भी श्री पीतम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द जी के साथ उसी अभियोग में गिरफ्तार किये गये थे। आपको जेल में लकवा मार जाने के कारण बहुत कष्ट हुआ था।

श्री बाबूलाल जैन—

आप मनेपुरा गाँव के रहने वाले हैं, बाद में आगरा आ गये। आप अपने मंडल कांग्रेस कमेटी के मन्त्री थे, अतः 9 अगस्त 1942 के आन्दोलन में नजरबन्द कर लिये गये और दो मास बाद छोड़े गये।

श्री गुलजारी लाल जैन—

आप फिरोजाबाद के रहने वाले थे नथा नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे। आपको पुलिस ने सन् 1940 के आन्दोलन में नजरबन्द कर लिया था। आप फिरोजाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड के चेयरमेन भी रहे।

श्री पंचमसिंह—

आप एत्मादपुर के निकट 'रत्ना के बास' नामक ग्राम के रहने वाले थे। आपने भी स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय हिस्सा लिया तथा जेल गये। आपके दोनों पुत्र तेजसिंह तथा उत्तमचन्द ने आन्दोलनकारियों को सहयोग दिया।

श्री उम्मेदीलाल जी—

आप सादन-खेड़ा के रहने वाले थे। आपने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय हिस्सा लिया। आप सुधारवादी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे तथा आर्य समाज के स्वामी श्रद्धानन्द जी के काफी निकट थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी आपके घर भी रुके थे।

मा० रामसिंह जी—

आप मंगूरा नामक ग्राम के रहने वाले थे तमा बादमें आगरा आकर रहने लगे। आपने स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय हिस्सा लिया, लेकिन जेल कभी नहीं गये। कुछ समय आप आगरा शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाबू हुकुम चन्द जैन—

आप फिरोजाबाद के रहने वाले हैं। आपने सन् 1942 के आन्दोलन में बहुत काम किया, लेकिन जेल नहीं गये।

बाबू गोर्धनदास जैन—

आप सन् 1930 के आन्दोलन में जैन सेवा मण्डल के उप-मन्त्री थे। मण्डल ने यह निश्चय किया कि मन्दिरों में खादी के वस्त्र पहिनकर लोग दर्शन करने जावें तथा खादी के वस्त्र ही वहाँ स्तेमाल हों। आपने इस कार्य के लिए सत्याग्रह तक भी किया। सन् 1940 के आन्दोलन में भी आपने काफी भाग लिया था। सन् 1942 के आन्दोलन में पुलिस ने आपको इस अभियोग में कि आप गुप्त रीति से आन्दोलन का संचालन करते हैं तथा 'आजाद हिन्दुस्तान' का प्रकाशन और संपादन करते हैं, गिरफ्तार कर लिया। डेढ़ साल तक नजरबन्द रखा गया। आप वार्ड तथा जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य एवं पदाधिकारी रहे हैं।

बाबू किशनलाल—

सन् 1930 के आन्दोलन में आपको कारावास हुआ। हार्डी बम केस के आप भी अभियुक्त रहे। आप सन् 1940 के आन्दोलन में नजरबन्द किये गये, फिर सन् 1942 में आपको 9 अगस्त से पूर्व ही क्रान्तिकारी होने के कारण पुलिस ने नजरबन्द कर दिया था। लगभग 2 साल बाद आप को छोड़ा।

बाबू चिम्मनलाल—'

आपको सन् 1942 के आन्दोलन में ध्वंसात्मक कार्य करने के अपराध में गिरफ्तार किया गया था। जब केस साबित नहीं हो सका तो नजरबन्द कर दिया गया। आपको सरकार ने क्रान्तिकारी माना था। आप वार्ड कांग्रेस कमेटी के उत्साही कार्यकर्त्ता रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री श्यामलाल सत्यार्थी—

आपको सन् 1930 के आन्दोलन में 6 मास की कड़ी सजा हुई थी। आपकी पत्नी तथा पुत्र इसी बीच स्वर्ग सिधार गये थे।

श्रीमती शरबती देवी—

आप स्वर्गीय बाबू साँवलदास जी की सुपुत्री थीं। सन् 1930 के आंदोलन में आपको कारावास में कठोर सजा भुगतनी पड़ी थी, बाद में आर्जिका हो गई।

बाबू प्रताप चन्द जी—

आपने सन् 1930 में कांग्रेस की आर्थिक सहायता के लिए बहुत उद्यम किया था। आन्दोलनकारियों के मित्र होने के कारण आप सन् 1942 में सरकारी नौकरी से मुअत्तिल हो गये थे। पं० कृष्ण चंद पालीवाल, सेठ अचल सिंह, महेन्द्र जी आदि के निकट सम्पर्क में रहे। समाचार संग्रह भी करते थे। जैन समाज में स्वदेशी आन्दोलन चलाया।

बाबू फूलचन्द बरवासिया—

श्री फूलचन्द वजाज, श्री प्यारेलाल वजाज आदि के साथ सन् 1930 के ही आंदोलन से राष्ट्रीय कार्य किया। खादी प्रचार के कार्य में तथा दिगम्बर जैन मन्दिरों में खादी के प्रचार के लिए काफी उद्योग किया। सन् 1942 के आन्दोलन में भी काफी सहयोग दिया।

लाला करोड़ीमल—

आप सन् 1930 से कांग्रेस के मुख्य कार्यकर्त्ता रहे। उस आन्दोलन के प्रचार के लिए सत्याग्रह किया तथा सन् 1942 के आन्दोलन में भी वहुत काम किया। सरकार के गुप्तचर विभाग ने आपकी भी देखरेख रखी थी।

ज़िला-मथुरा

श्री गोकुलचन्द जी—

आप मेघपुर नामक ग्राम के रहने वाले थे। सन् 1942 के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया, जिसके फलस्वरूप एक साल की कड़ी सजा हुई। आप मथुरा के ब्लॉक प्रमुख भी रहे।

श्री जुगलकिशोर जी—

आप 'संजा के नगला' नामक ग्राम के रहने वाले थे। सन् 1942 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको जेल भेज दिया गया। आजकल गौरक्षा कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं।

श्री गेंदालाल जी—

आप 'जोधपुर' नामक ग्राम के रहने वाले थे। सन् 1942 के आन्दोलन में आपको भी जेल हो गई थी।

श्री बाबूलाल जी—

आप 'संजा के नगला' के निकट वरौली नामक ग्राम के रहने वाले थे। आप स्वतन्त्रता आन्दोलनों के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे, लेकिन जेल नहीं गये।

जिला—भरतपुर

श्री प्रभूदयाल जी—

सन् 1942 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको भी जेल की सजा भुगतनी पड़ी।

जिला-अलीगढ़

श्री जैनेन्द्र कुमार जी—

आप अलीगढ़ के निकट कौडिया गंज नामक कस्बे के रहने वाले थे। जिस समय आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, उस समय असहयोग आन्दोलन का जोर था। आपने भी इन आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया तथा जेल गये।

उक्त स्वतन्त्रता सेनानियों के अतिरिक्त कुछ और व्यक्ति भी जेल गये, लेकिन उनका विवरण उपलब्ध न होने के कारण यहाँ उनका उल्लेख नहीं किया जा सका है। कुछ अन्य लोगों ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी अप्रत्यक्ष रूप से आन्दोलनकारियों को सहयोग दिया तथा छुटपुट घटनाओं में भाग लिया, उनमें से श्री दौलतराम पटवारी (रुनकता, आगरा), श्री (डा०) किशनचन्द जी (आगरा), श्री शिवचरन जी (रायभा, आगरा), श्री कजौड़ीमल (खेड़ली, भरतपुर), श्री (मुंशी) रामजीलाल जी (आगरा) आदि हैं।

स्वतन्त्रता सैनानी:- श्री प्रकाश चन्द जैन, रामगढ़
1946 में स्वतन्त्रता आन्दोलन में जेल गये।

भूल सुधार:- पृष्ठ संख्या 145 की दूसरी लाइन में पल्लीवाल के स्थान पर सहलवाल पढ़े।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवशिष्ट

अलवर राज्य के जैन दीवान

अलवर राज्य की स्थापना एवं उसके विकास तथा संचालन में दिगम्बर जैन धर्मानुयायी पल्लीवाल जाति में उत्पन्न दीवानों का योगदान उल्लेखनीय है। ये दीवान महाराजा साहब के अत्यन्त विश्वासपात्र थे तथा राज्य संचालन में दक्ष थे। अलवर राज्य के संस्थापक महाराजा प्रतापसिंह (1740 से 1771) जी ने जब माचेडी से अलवर को अपनी राजधानी बनाया तो उनके साथ दीवान रामसेवक जी भी अलवर आये तथा बहुत समय तक शासन को सुव्यवस्थित करने में अपना योग दिया। ये अलवर राज्य के प्रथम दीवान थे।

महाराजा प्रतापसिंह जी के पश्चात् महाराजा वख्तावरसिंह जी (179 to 1815) से अलवर के शासक बने। इनके दीवान थे रामलाल जी जो रामसेवक जी के सुपुत्र थे।

इन्होंने भी अपनी निष्ठा एवं शासन दक्षता में महाराजा का मन जीत लिया और जब तक जीवित रहे दीवान पद को सुशोभित करते रहे।

महाराजा बनेसिंह जी (1815 से 1857) के समय में पहिले सालगराम जी और फिर बालमुकुन्द श्री दीवान हुये तथा अपनी शासनदक्षता के कारण राज्य में अत्यधिक लोकप्रिय हुये। ये चारों ही दीवान जैन धर्मानुयायी थे तथा पल्लीवाल जाति
अलवर राज्य में पल्लीवाल जाति के विशाल संख्या होने का प्रमुख कारण भी इन दीवानों को अपने जातीय भाइयों को संरक्षण प्रदान करना हो सकता है। अलवर नगर में आज भी इन दीवानों की बड़ी बड़ी हवेलियाँ हैं जो अपने पूर्व वैभव की कहानी को जैसे सबको सुनाती रहती हैं। पूरा चौक ही दीवानों के चौक के नाम से जाना जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिशिष्ट

'पल्लीवाल शब्द : एक दृष्टि'

—राजवैद्य श्री जिनेश्वदास जैन

(यह चिट्ठी सतना (रींवा) से राजवैद्य श्री जिनेस्वदास जैन ने दिनांक 15 अगस्त सन् 1923 को लिखी थी। इसकी प्रति मुझे आगरा के वयोवृद्ध श्री श्यामलाल जी वारौसिया ने उपलब्ध कराई थी जो कि श्री नेमोचन्द जी बरवालिया से मिलो एक डायरी में नोट की हुई थी। उसे यहाँ प्रस्तुत किया रहा है —लेखक)

पालीवाल या पल्लीवाल शब्द इस अपनी जाति का होना चाहिये अस्तु इस पर मेरा जो विचार है उसे मैं लिखता हूँ। प्रथम तो पल्लीवाल में जो पल्ली शब्द है वह कोषों में 5 अर्थ प्रगट करता है (1) दिशा का सांकेतिक है अर्थात तरफ के हैं उस तरफ, इस तरफ, (2) संस्कृत में छोटे-छोटे ग्रामों को पल्ली कहते हैं, (3) पल्ली नाम सफेद चद्दर का भी है, (4) पल्ली छिपकली एक जाति का कीड़ा मशहूर है, (5) पल्ली एक छुप जाति की औषधि है।

यह तो हुआ शब्द का अर्थ। अब जाति नाम के अन्तर्गत जो यह शब्द पल्ली है यहाँ पर यह एक मनुष्य समुदाय के ग्रोह को इस एक पल्लीवाल शब्द के कहने से ग्रोह का एक श्रेणी ज्ञान होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसलिये यहाँ एक श्रेणी वाचक अर्थ पैदा होता है। अब श्रेणीबद्ध कुछ मनुष्य समुदाय को क्यों कहा गया कि देवदत्त, चन्द्र किशोर, मदनमोहनादि प्रभृति एक लिंग भागी होने पर भी तीनों व्यक्तियों की श्रेणी निर्दिष्ट नहीं समझी जायेगी क्योंकि इन तीनों में तीन श्रेणी (जाति) के हैं। तब आवश्यकता हुई कि इन व्यक्तियों के नाम के आगे जो जो उनकी जाति (श्रेणी) हो वो वो शब्द लिखे या पुकारे जावें। यहाँ पर आख्यात की युक्ति की आवश्यकता है। आख्यात उसे कहते हैं जिसके एक बार के उपदेश से जिसका सब जगह ग्रहण हो वह जाति समझी जायेगी। अस्तु जातियाँ प्रायः देश, ग्राम, नगर, स्थान व्यापार ऋषि आदि के नाम पर ही उत्पन्न होती हैं। और वंश प्रायः राज चिन्हों पर होते हैं। इसी सिद्धान्तानुसार हमारी पल्लीवाल जाति की एक देश के अन्तर्गत सांकेतिक दिशा के अर्थ को लेते हुये रचना हुई है। अब जो हमारे लोगों में से जो लोग यह कहते हैं कि यह 'पल्लीवाल' शब्द न होकर 'पालीवाल' होना चाहिये, कारण कि पालीवाल ब्राह्मण जिनका कि निकास बीकानेर के एक पाली स्थान से है, इसलिये हमको भी अपने ग्रोह को पालीवाल के नाम से ही पुकारा जाना चाहिये। यहाँ पर हमारे भाई भूल में हैं कारण कि उन्होंने ब्राह्मण जाति के इतिहास को नहीं देखा है। यह पालीवाल ब्राह्मण वास्तव में सनाढ्य ब्राह्मण हैं। यहाँ के सनाढ्यों से इनका व्यवहार नहीं है क्योंकि यह लोग (पालीवाल ब्राह्मण) पहले यहाँ नहीं रहते थे। ये लोग मुसलमान बादशाहों के समय से जबकि एक मुसलमान बादशाह ने बीकानेर के अन्तर्गत पाली नगर पर चढ़ाई की और उस को कुछ काल के बाद जीत लिया। उस समय पर लूट-मार आदि के कारणों से वहाँ के सनाढ्य ब्राह्मण भाग का इस देश की तरफ आकर के अनेक नगरों में बसे वे सब उस स्थान (पाली) के होने से इधर के देशों में पालीवाल ब्राह्मण कहलाने लगे और धीरे-धीरे अब एक उन लोगों की जाति बन गई, देखो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'पालीवाल ब्राह्मण इतिहास'। अब हमको अपने लिये यह भी देखना आवश्यक है कि बीकानेर के पाली नगर में प्रथम से और अब तक जैन का कोई चिन्ह या एक पुरुष भी नहीं रहा है तो कैसे मान लिया जावे कि हमारी जाति भी पालीवाल शब्द से ही विभूषित करी जावे। यदि दूसरे आप कहें कि उन ब्राह्मणों में से ही कुछ लोगों ने जैन धर्म धारण कर लिया होगा, वह जैन पालीवाल कहलाने लगे। इसके लिये अभी तक कोई इतिहास नहीं मिला है। दूसरे सनातन से जैन धर्मी बिना किसी विशेष कारण वा किसी चमत्कार के जैनी होना नहीं हो सकता। इतिहास भी इसको पुष्ट करते हैं। और वर्तमान में अपनी जहाँ-जहाँ पर है वहाँ के हर एक व्यक्ति से पल्लीवाल शब्द ही सुना जाता है। सबसे प्रबल प्रमाण पल्लीवाल शब्द ही होने का एक यह भी है कि हमारे पूज्य श्री 1008 श्री कुन्दकुन्दाचार्य की जीवनी व गुरूवावली में पल्लीवाल शब्द का ही प्रयोग किया गया है। यह कुन्दकुन्दाचार्य वि सं. 5 में अपनी 49 वर्ष की अवस्था में आचार्य पद पर विराजमान हुये थे, जिसको आज 1983 वर्ष होते हैं और पल्लीवाल ब्राह्मणों को 1025-1050 वर्ष होते हैं। निकास व प्रख्यात होते हुये, तो ऐसी हालत में कैसे माना जा सकता है कि हम लोग किस प्रमाण से पल्ली शब्द को प्रथक करके पालीवाल लिख सकते हैं। इसके अतिरिक्त पं० दौलतराम जी व कविरत्न पं० मनरंगलाल जी आदि जो वि. सं० 1837 से वि० सं० 1891 तक में हुये हैं जिनमें से मनरंगलाल जी के स्वहस्त लिखित 'चौबीसी पाठ' जो कि हमारे पास है उसमें भी पल्लीवाल शब्द ही लिखा है। और पल्लीवाल जैन को कई जातियों में गोत्र के नाम से पुकारा जाता है और साखा के नाम से भी है। जैसे वि० सं० 1164 में सिंघवी गोत्र की स्थापना के अन्तरगत एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साखा है। उस सिंघवी गोत्र के इतिहास में पल्लीवाल शब्द ही आया है।

अस्तु उपरोक्त वाद- विवाद पर और भी गहरी दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि पल्लीवाल शब्द ही है, जब कि हमको आज करीब 2000 वर्षों के इतिहास से अपनी जैन जातीय अन्तरगत पल्लीवाल जाति के लिये 'पल्ली' शब्द ही मिलता है। तब आज हमको किस न्याय से किस कारण, किस इतिहास, किस सिध्दान्त से इस पल्लीवाल शब्द को बदलकर पाली शब्द मानना चाहिये। मेरी समझ में तो आता नहीं, जिसकी समझ में आवे वह महाशय इसका प्रमाण सहित प्रकाश करें। पूर्ण निर्णय करके तब बदलना होगा। यों तो आजकल कुछ हर बात में धींगाधींगी होती ही है।

(2) पालीवाल ब्राह्मण (6)

ईसा की बारहवीं शताब्दी में मारवाड़ के 'पाली' नगर में सनाढ्य ब्राह्मणों की एक बड़ी बस्ती थी। राठौड़ वंश की स्थापना से पूर्व मंडोर के प्रतिहार शासकों ने उन्हें पाली और उसके आस-पास के क्षेत्र का अधिकार सौंपा था। पाली में रहने के कारण ये ब्राह्मण पालीवाल नाम से प्रसिध्द हो गये। ये लोग बहुत ही संपन्न थे। संपन्नता की चरम सीमा पर पहुँचने के बावजूद वे कभी शांति पूर्ण जीवन व्यतीत नहीं कर पाये। असाधारण संपत्ति के कारण वे लुटेरों की आँखों में खटकते रहे। कभी जन-जातियों ने तो कभी लुटेरों ने उन्हें लूटा। निरन्तर लूटपाट के भय से सन् 1193 में (एक अन्य मान्यतानुसार वि. सं. 1292 के लगभग) उन्होंने निश्चय किया कि कन्नौज के राठौड़ राजा के पोते सियाजी की मदद लेवें जो कि उस समय उनके क्षेत्र से गुजर रहा था। सिवाजी ने उनकी सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली। बदले में उसकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुटिलता से बेखबर अनुग्रहीत ब्राह्मणों ने सियाजी को पाली में निवास करने का आमन्त्रण दे दिया । पालीवाल ब्राह्मण फिर परेशानी में पड़ गये । होली के दिन सियाजी ने धोखे से पालीवालों के प्रमुख सदस्यों की हत्या कर मारवाड़ में राठौड़ वंश के शासन की नींव रख दी । लाचार पालीवाल, पाली पर मुसलमानों के आक्रमण तक, वहीं रहते रहे । आक्रमण के समय उन्होंने युध्द में अनुदान देने से साफ इन्कार कर दिया, फलस्वरूप राजा ने उन्हें देश निकाला दे दिया ।

अपना देश छोड़ने के बाद उनके सामने यह प्रश्न उठा कि वे कहाँ जायें । उन्होंने तय किया कि अब वे ऐसा स्थल ढूँढ़ेंगे जो भौगोलिक दृष्टि से सुरक्षित हो और जहाँ आक्रमण का खतरा न हो । यही सोचकर उन्होंने जैसलमेर में रहने का निर्णय लिया । चूंकि पालीवाल कुशल व्यापारी थे, इसलिए उन्हें जैसलमेर जैसे प्रदेश को भी संपन्न बनाने में सफलता मिली । कर्नल टॉड ने उनकी इस व्यापारिक कुशलता का उल्लेख करते हुये लिखा है कि उस समय समस्त आन्तरिक व्यापार उनके ही हाथ में था और उन्हीं के पैसे से वहा के व्यापारी अन्य प्रान्तों के साथ व्यापार करते थे । वे किसान को उसकी फसल गिरवी रख कर आर्थिक मदद देतेथे। प्रदेश की सरी ऊन और घी खरीदकर दूसरे प्रांतों में बेचते थे । मरु प्रदेश में खड़ीन में पानी एकत्रित कर सिंचाई व्यवस्था उन्होंने ही की थी । पेंदावार में इतनी रुचि वे इसलिये और भी लेते थे क्योंकि वे शासन को बतौर कर के दी जाने वाली पैदावार भी ख़रीदते थे । कुल मिलाकर पालीवाल जैसलमेर आकर प्रसन्न थे ।

किन्तु भाग्य ने फिर उनका साथ छोड़ दिया । स्वरूपसिंह मेहता के दीवान पद पर आसीन होते ही उनके परेशानी के दिन प्रारंभ हो गये । दीवान स्वरूपसिंह के निरंकुश व्यवहार से प्रजा हताश होने लगी । स्थिति तब और भी बिगड़ गयी जबकि स्वरूपसिंह की मृत्यु के बाद उसका बेटा सालिम सिंह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीवान बना। सालिम सिंह का समय जेसलमेर के इतिहास का सबसे बुरा समय माना जाता है। उसके अत्याचारों के कारण आज भी जेसलमेर निवासी उसे जालिमसिंह कहते हैं। जैसलमेर के किले के पूर्वी ढलान पर सालिम सिंह की भव्य हवेली उसके अत्याचारों की प्रतीक मानी जाती है। एडम्स ने अपनी पुस्तक 'द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स' में इस हवेली के विषय में लिखा है। 'बदनाम सालिम सिंह के घर की नक्काशी भव्य है जिसमें कि लगभग एक सौ साल पहले अपने अत्याचारों से इस देश को उजाड़ दिया था।'' कर्नल टॉड ने लिखा है कि सालिम सिंह ने न जाने कितने लोगों की हत्या की।

कहा जाता है कि उसने समृद्धिशाली परिवारों को नष्ट कर बीस साल में लगभग दो करोड़ रुपया एकत्र किया। जैसा कि स्पष्ट है वे समृद्धिशाली परिवार पालीवाल ब्राह्मणों के ही थे। जिस तरह का व्यवहार सालिम सिंह ने पालीवालों के साथ किया उससे उसकी ईर्ष्या साफ झलकती है। येन केन प्रकारेण उनकी संपत्ति हथियाना उसका प्रमुख लक्ष बन गया था। उसने न केवल मन चाहे कर थोपे बल्कि इन गाँवों को जब जी चाहा तब लूटा। गर्जसिंह को राजगद्दी पर बैठाने का सफल षड्यन्त्र रचने के बाद उसके अत्याचारों की सीमा न रही। गर्जसिंह के सत्तारूढ़ होने के दो साल में उसने दंड नामक कर के माध्यम से चौदह लाख रुपये वसूले। जब पालीवालों ने इस कर का विरोध किया तब उसने उनकी जिंदगी हराम कर दी। हर रोज लूटमार और लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार का सिलसिला शुरू हो गया। बात इतनी बढ़ गयी कि ब्रिटिश एजेंट ने 17 दिसंबर सन् 1821 को अपनी सरकार को यह लिखा कि जैसलमेर निवासियो को यह लग रहा है कि ब्रिटिश सरकार के साथ की गई सन् 1818 की संधि दीवान को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्रय दे रही है और इसलिए उन्हें उसके दुर्व्यवहार को झेलना होगा। किन्तु ब्रिटिश सरकार ने हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा।

अन्त में हार कर पालीवालों ने अपने आत्म सम्मान की रक्षा करने के लिए जैसलमेर छोड़ना ही उचित समझा। 84 गाँवों के पांच हजार परिवारों ने तह तय किया कि वे एक रात एक निश्चित पहर में अपने गाँव छोड़ देंगे। 'हमारे बाद में गाँव खंडहर बन जायेंगे और इसमें कोई नहीं बस पायेगा'। इन दर्द भरे शब्दों के साथ उन्होंने अपने गाँव छोड़ दिये। इसके बाद वे लोग कहाँ गये यह तो पता नहीं लेकिन आज वे ब्राह्मण पालीवाल नाम से पूरे राजस्थान ने बिखरे हुए हैं।

पालीवाल गाँवों के खंडहरों से यह सिद्ध होता है कि उन्हें अच्छे गाँव बसाने का ज्ञान था। जब जंसलमेर के आम गाँवों में छप्पर पड़े झोपड़ों में लोंग रहते थे, तव यहाँ उनके लिए पत्थर के घर बनवाये गये थे। मुख्य सड़क गाँव के बीच से निकाली गयी थी। ज्यादातर घरों में जानवरों के लिए पानी पीने के स्थान की अलग से व्यवस्था की गयी थी। गाँव से ही थोड़ी दूरी पर चरागाह बनाया गया था। गाँव के बींच में भव्य और ऊँचा उठा हुआ मन्दिर था। हर गांव का अपना श्मशान था, जिसमें छोटे-छोटे स्मारक वनाने का रिवाज था। इन स्मारकों से यह भी पता चलता है कि पालीवाल ब्राह्मणों में भी सती प्रथा प्रचलित थी।

जैसलमेर में स्थित पालीवालों के 84 गाँवों में से कुलधरा सबसे आकर्षक है। सुप्रसिद्ध फिल्म-निर्माता मृणाल सेन ने अपनी बहुचर्चित फिल्म 'जेनेसिस' की पूरी शूटिंग यहां पर ही की कुछ लोगों का मत है कि कुलधरा वनियों की वस्ती थी। लेकिन ऐसा मानना गलत है। पालीवाल ब्राह्मण व्यापार में इतने अधिक दक्ष थे कि शायद इसो कारण बहुत से लोग उन्हें बनिया समझ बैठे। वस्तुतः वहाँ के निवासी पालीवाल ब्राह्मण ही थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संदर्भ सूची

(1) 'परमार जाति के इतिहास पर कुछ प्रकाश' के. पं. नाथूराम प्रेमी, अनेकान्त वर्ष 3, पृष्ठ 441, (मई, सन् 1940)।

(2) जैन समाज की कुछ उपजातियाँ, ले. श्री परमानन्द शास्त्री, अनेकान्त, वर्ष 22, पृष्ठ 50, (जून, सन् 1969)।

(3) 'पल्लीवाल जैन इतिहास' ले. दौलतसिंह लोढ़ा।

(4) 'पल्लीवाल गच्छ पट्टावली, ले. श्री अगरचन्द नाहटा, 'जैनाचार्य श्री आत्मानन्द जन्म शताब्दी स्मारक ग्रन्थ (सन् 1936)।

(5) 'चन्द्रबाड़ का इतिहास' ले. पं. परमानन्द शास्त्री, अनेकांत वर्ष 24, पृष्ठ186, (दिसम्बर, 1971)।

(6) 'दीवारी दर सुनाते हैं गुजरो कहानियाँ' ले. तृप्ति पांडेय, धर्मयुग (23 फरवरी से 1 मार्च 1986)।

(7) 'कौशाम्बी' ले. पं. वलभद्र जैन,' अनेकान्त, वर्ष 26 पृष्ठ 65, (सन् 1973)।

(8) 'जैन धर्म का प्राचीन इतिहास (भाग-2)' ले. पं. परमानन्द शास्त्री।

(9) 'आचार्य महावीर कीर्ति स्मृति ग्रन्थ' सम्पादक डा नेमेनन्द्र चन्द जैन, संग्राहक एवं प्रकाशक श्री धनेन्द्र प्रसाद जैन, वाराणसी।

(10) 'चारित्र सार' मूलकर्त्ता-चामुण्डराय, प्रकाशक-उदासीन आश्रम, सीकर,(इस ग्रन्थ के अन्त में देखें 'आचार्य पट्टावली'

(11) 'तीर्थयात्रा गाइड' ले. श्री गम्भीरचन्द जैन।

(12) श्री लंबेचू जाति का इतिहास ले.पं. झम्मनलाल तर्कतीर्थ।

(13) 'दक्षिण भारत में जैन धर्म' ले. पं. कैलाशचन्द सिध्दान्त-आचार्य।

(14) 'हिन्दी विश्वकोश (भाग-7)' ले. डा. नागेन्द्रनाथ वसु, पृष्ठ-171।

(15) 'भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ' (भाग-उत्तर प्रदेश के तीर्थ), ले. पं. बलभद्र जैन।

(16) 'सूरत अने सूरत जिला दिगम्बर जैन मन्दिरनो' 'मूर्ति लेख संग्रह' संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक-श्री मूलचन्द किसनदास कापड़िया, सूरत, पृष्ठ-211।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(17) 'भट्टारक सम्प्रदाय' सं-प्रोफेसर वी. पी जोहरा पुरकर ।
(18) अनेकान्त, वर्ष 18, पृष्ठ-153 ।
(19) 'धर्मरत्न', वर्ष 1, अंक 12, सन् 1937
(20) 'पल्लीवाल जैन जाति की एक ऐतिहासिक झलक' श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका, जून 1985 ।
(21) 'फूलमाल पच्चीसी' रचयिता-कविवर विनोदीलाल जी ।
(22) 'वर्धमान पुराण के सोलहवें अधिकार पर विचार' ले. श्री यशवन्त कुमार मलैया, अनेकांत, वर्ष 27, पृष्ठ 58 (अगस्त 1974) ।
(23) 'महाकवि चन्द के वंशधर', ले. प्रो. रमाकांत त्रिपाठी, 'चाँद' (मारवाड़ी अंक), नवम्बर सन् 1929 ।
(24) पल्लीवाल हितैषिणी- ले. श्री नंदकिशोर जी पटवारी, (सं. 1967) ।
(25) 'पल्लीवाल रीति प्रभाकर,' (अजमेर से प्रकाशित), सं. 1970 ।
(26) 'तिलक मंजरी सार,' संपादक-श्री नारायन मनीलाल कंसारा, प्रकाशक-लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामदिर, अहमदाबाद ।
(27) आगरा में निर्मित जैन बाङ्मय', ले. डा. नेमीचंद्र शास्त्री, 'गुरु गोपालदास वरैया स्मृति-ग्रन्थ,' पृष्ठ 553 ।
(28) 'पल्लीवाल कवि मनरंगलाल की नेमिचंद्रिका', ले. श्री अगरचंद नाहटा, 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' जनवरी 1980 ।
(29) 'नेमि शीर्षक हिन्दी साहित्य,' ले. डा. कु. इन्दुराय जैन, अनेकांत, वर्ष 39 किरण 4 पृष्ट 8 (1986) ।
(30) 'जैन कवियों के व्रजभाषा-प्रबन्धाकाव्यों का अध्ययन (वि. सं. 1700-1900),' ले. डा. लालचंद जैन ।
(31) 'जैन धर्म में अहिंसा' (सूरत से प्रकाशित) में लाला लालमन जी का परिचय ।
(32) 'श्री चौबीस तीर्थंकर पुराण,' रचयिता-श्री बालाप्रसाद कानूनगो ।
(33) 'भव्य-प्रमोद,' रचयिता-पं. मक्खनलाल जी प्रचारक ।
(34) 'भगवान महावीर स्मृति ग्रंथ,' प्रधान संपादक-डा. ज्योति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसाद जी जैन, लखनऊ (सन् 1975)।
(35) 'कोढ़ाली पल्लीवाल जैन दर्शन,' ले. श्री मधुकर उमाठे, 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका, नवम्बर-दिसम्बर 1979 ।
(36) 'हिन्दी जैन भक्ति काव्य और कवि,' ले.डा. प्रेमसागर जैन,
(37) 'कुंदकुंदाचार्य के तोन रत्न,' ले. गोपालदास जीवाभाई पटेल (प्रकाशक-भारतीय ज्ञानपीठ)।
(38) 'कविवर पं. दौलतराम जी,' ले. परमानंद जैन, अनेकांत, वर्ष 11 किरण 3 पृष्ठ 252, मई 1952 ।
(39) 'दौलत विलास,' प्रकाशक-'श्री अ. वि. जैन मिशन,' अलीगंज (एटा), सन् 1955 ।
(40) 'सम्पादकीय स्पष्टीकरण' पं. कैलाशचंद शास्त्री, जैन, संदेश' भाग-49 संख्या 42 (30 जनवरी 1986)।
(41) 'मथुरा संग्राहलय की सं. 1826 की तीर्थंकर मूर्ति' श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, 'अनेकांत' वर्ष 10 किरण 7-8 पृष्ठ 261 (जनवरी-फरवरी सन् 1950) ।

5272

लेखक का परिचय

मान-अनिल कुमार जैन

जन्म स्थान- धूलिया गंज, आगरा ।
जन्म तिथि-28 जनवरी, सन् 1957 ई. ।

पिता का नाम-मा. रामसिंह जी जैन, एम. ए. एल. टी .(मूल नि. ग्राम-मंगूरा (आगरा) ।

माता का नाम-श्रीमती अंगूरी देवी जैन ।

शिक्षा-एम. एस.सी. (भौतिक विज्ञान), सेन्ट जौन्स कॉलेज,आगरा 1971, पी. एच. डी. (भौतिक विज्ञान), आगरा विश्व-विद्यालय, 1983 ।

वर्तमान कार्य क्षेत्र- तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग, अंकलेश्वर (गुजरात ।

विवाह तिथि-22 मई 1983 ।

पत्नि का नाम-श्रीमती हेमलता जैन (सुपुत्री-श्री फूलचंद जैन अलवर) ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi